श्रीदुर्गा स्तोत्र माला

सिद्ध दुर्गा मंत्रों का संकलन



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

श्रीदुर्गा स्तोत्र माला

ॐ, प्रेम, मंगलम्

स्वामी निरंजन

श्रीदुर्गा स्तोत्र माला

सिद्ध दुर्गा मंत्रों का संकलन



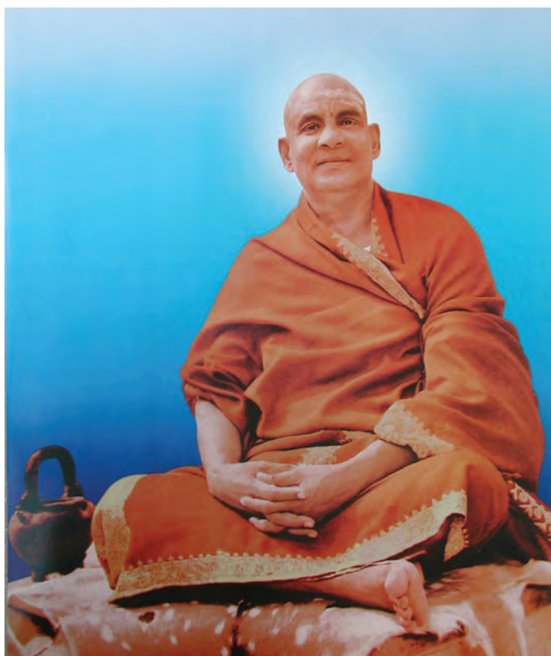
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा *प्रथम संस्करण 2011*
द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण 2012
तृतीय संशोधित संस्करण 2014

ISBN: 978-81-86336-99-1

प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट,
मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—थॉमसन प्रेस (इंडिया) लिमिटेड,
नई दिल्ली

वेबसाइट : www.biharyoga.net
www.rikhiapeeth.net



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दुःखी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियाधाम, 2005

अनुक्रमणिका

दुर्गा स्तोत्र

परिचय

सृष्टि के आरम्भ से ही देवी माँ की अवधारणा और आराधना विद्यमान रही है। वैदिक और तान्त्रिक परम्पराओं में देवी माँ की अनेकानेक रूपों में स्तुति और उपासना की गई है। भारतवर्ष में यद्यपि हजारों देवियों की पूजा होती है, चाहे दुर्गति-नाशिनी दुर्गा के रूप में, काल और अहंकार-विनाशिनी काली के रूप में, ज्ञान और विवेक-प्रदायिनी सरस्वती के रूप में, सुख और समृद्धि-प्रदायिनी लक्ष्मी के रूप में हो या जगज्जननी जगदम्बा के रूप में, ये सभी एक ही परातत्त्व की विविध अभिव्यक्तियाँ हैं।

शाक्त सिद्धान्त

देवी की अवधारणा किसी धर्म, पन्थ या सम्प्रदाय विशेष तक सीमित नहीं है। देवी भगवान की चैतन्य शक्ति हैं। भगवान को शिव के रूप में देखा जाता है और उनकी शक्ति को उनकी अर्द्धांगिनी—दुर्गा, काली अथवा पार्वती के रूप में। दुर्गा के बिना शिव क्रियाहीन हैं, जड़ हैं। सौन्दर्य लहरी के प्रथम श्लोक में कहा भी गया है—*शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं*—शक्ति के बिना शिव कुछ भी करने में असमर्थ हैं।

शिव में शक्ति सन्निहित है। जैसे अग्नि से ताप को अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही शिव और शक्ति अभिन्न हैं। शिव चेतना हैं, तो शक्ति ऊर्जा। शिव जिह्वा हैं, तो शक्ति वाणी। शिव हमेशा शक्ति के साथ रहते हैं। दुर्गा, पार्वती या काली की पूजा वस्तुतः भगवान शिव की ही पूजा है।

देवी की आराधना शक्ति की आराधना है। शक्ति के कारण ही हम जीवित हैं और इस संसार में हमारा अस्तित्व है। सृष्टि में सभी चीजों का आधार शक्ति ही है। सूर्य का तेज, चन्द्र की शीतलता, पुष्पों का परिमल, इन्द्रधनुष के रंग, मन की ओजस्विता, चित्त की चंचलता, प्रकृति की सुन्दरता, अन्न की पोषक शक्ति,

ओषधियों की स्वास्थ्य-प्रदायिनी शक्ति, ऋषि-मुनियों की प्रज्ञा, भक्तों की श्रद्धा, योगियों का संयम और समाधि वही है। वस्तुतः विश्व में सभी लोग शक्ति के उपासक हैं, क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो किसी-न-किसी रूप में शक्ति की कामना न करता हो। वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक वस्तु कभी नष्ट न होने वाली विशुद्ध ऊर्जा ही है। यह ऊर्जा देवी माँ का ही एक स्वरूप है, जो सृष्टि के सभी नाम-रूपों में अवस्थित हैं।

देवी का मातृ-स्वरूप

अपने भीतर शक्ति-जागरण के अनेक उपाय हैं, परन्तु सबसे सरल है देवी को माँ के रूप में देखना। वैदिक परम्परा में मातृशक्ति को सर्वोच्च सत्ता माना गया है। माँ ही जीवन देने और उसका पोषण करने वाली है। माँ के भीतर असीम सहन-शक्ति और क्षमा होती है। *कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति*—पुत्र कुपुत्र हो सकता है, परन्तु माता कुमाता नहीं होती। माँ अपनी सन्तान के प्रति कभी ईर्ष्यालु या क्रूर नहीं हो सकती। यदि वह थप्पड़ भी मारती है तो वह भी करुणावश, प्रेमवश और दुलार से। पिता की अपेक्षा बच्चा अपनी माँ के अधिक निकट होता है, माँ के सामने अपना दिल अधिक सहजता से खोल देता है।

आध्यात्मिक जगत् में भी साधक का परमपिता शिव की अपेक्षा जगज्जननी माँ दुर्गा से अधिक अंतरंग सम्बन्ध होता है। भगवान शिव सदा ध्यान में लीन रहते हैं, बाह्य जगत् के प्रति बिल्कुल उदासीन रहते हैं। उन्होंने अपने सभी अधिकार अपनी अर्द्धांगिनी दुर्गा को दे दिये हैं। शिव केवल मूक द्रष्टा हैं, दुर्गा माँ ही पूरे संसार की देखभाल करती हैं।

दुर्गा उपासना

दुर्गा सृष्टि का निर्माण, पालन तथा नाश करने वाली शक्ति है। इस महान् शक्ति को महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में पूजा जाता है, जो क्रमशः प्रकृति के तीन गुणों—तमस्, रजस् और सत्त्व की प्रतीक हैं।

दुर्गा माँ जीवन की सभी अशुभ परिस्थितियों को दूर कर, यश, सौन्दर्य, समृद्धि, शक्ति तथा शान्ति प्रदान करने वाली ऊर्जा हैं। परमपावन देवी माहात्म्य में, जिसे दुर्गा सप्तशती के नाम से भी जाना जाता है, माँ दुर्गा का विशद् वर्णन है। देवी माँ के अनेक रूप हैं, जिन्हें वे विभिन्न अवसरों पर भक्तों की प्रार्थना पूरी करने हेतु धारण करती हैं। दुर्गा का ही एक रूप है चण्डी, जिनका आवाहन आसुरी शक्तियों के नाश के लिए किया जाता है। दुर्गा सप्तशती में वर्णन आता है कि अशुभ आसुरी

शक्तियों के नाश और सत्य तथा धर्म की स्थापना के लिए देवताओं ने अपने तेज से इस स्वरूप का निर्माण किया। माँ दुर्गा के इस स्वरूप में उनके विभिन्न रूपों की समस्त शक्तियों का समावेश है।

आज का युग चुनौतियों से भरा है – युद्ध, महामारी, अकाल, प्रदूषण, आतंकवाद और आर्थिक संकटों के काले-घने बादल चारों ओर मण्डरा रहे हैं। आधुनिक मानव दुर्बल है, वह काम, क्रोध, लोभ और वासनाओं से ग्रस्त है। विस्मयजनक वैज्ञानिक विकास के बावजूद मानवता अभी तक जीवन में विफलता और विषाद का सामना कर रही है, अभी तक अपनी भावनाओं में सामंजस्य और संतुलन लाने के लिए संघर्षरत है। इन दुर्गम समस्याओं का एकमात्र निदान है, जगत्-जननी देवी माँ के अनुग्रह और आशीर्वाद की याचना। देवी माँ सौन्दर्य, शक्ति, करुणा और कृपा का साक्षात् स्वरूप हैं। उनकी कृपा-दृष्टि से पंगु चलने, अंधा देखने, बहरा सुनने और गूँगा बोलने लगता है। हानि लाभ में और दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल जाता है। इसीलिए अर्जुन ने अधर्मी कौरवों के विरुद्ध युद्ध करने से पहले दुर्गा देवी की पूजा की थी। श्री राम ने रावण से लड़ते समय दुर्गा माँ की आराधना की थी। उन्हीं की कृपा से वे विजयी हुए।

देवी माँ की कृपा सभी दु:ख-दर्दों का शमन करने वाली अचूक राम-बाण ओषधि है। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के शब्दों में–'सांसारिक जीवन में दु:ख-दर्द अनेक रूपों में आते हैं लेकिन इनका निवारण देवी माँ की कृपा से सुलभतया किया जा सकता है।' इसलिए *'कलौ चण्डी-विनायकौ'* कहकर हमारे दूरदर्शी ऋषियों ने कलियुग में व्याप्त जटिल समस्याओं के समाधान हेतु दुर्गतिनाशिनी दुर्गा और उनके पुत्र, विघ्नेश्वर विनायक की आराधना का अनुमोदन किया था।

देवी-आराधना की अनेक विधियाँ हैं, परन्तु श्रद्धा-भक्ति से की गई आराधना सर्वोत्तम है। स्वार्थ-कपट का सर्वथा त्याग कर, बच्चे की तरह सरल बनकर, माँ के प्रति स्वेच्छा से, बिना किसी शर्त के, पूर्ण समर्पण करना चाहिए। *'आमि जंत्र तुमि जंत्री। आमि रथ तुमि रथी। कारे दाओ माँ ब्रह्मपद कारे करो अधोगामी'*–ऐसे भाव के साथ की गई उपासना भक्त को निश्चित रूप से देवी माँ के समीप लाकर उनकी अहैतुकी कृपा का पात्र बनाती है।

स्वामी निरंजनानन्द द्वारा संकल्पित दुर्गोपासना

हमारे ऋषि-मुनियों, मनीषियों और पूर्वजों ने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया, जिसका अनुसरण हम आज तक कर रहे हैं। उसी संस्कृति के बल पर आज हमारी सभ्यता जीवित है। लेकिन इस भौतिक सम्मोहन के युग में मनुष्य अपने आप को,

अपने जीवन की संस्कृति को भूल रहा है। सन् 2009 में महासमाधि में लीन होने से पहले स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने भारत की सांस्कृतिक और संस्कारात्मक धरोहर को सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बनाए रखने के उद्देश्य से अपने उत्तराधिकारी, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती को संन्यास पीठ की स्थापना का आदेश दिया। उनके आदेशानुसार यह एक ऐसा केन्द्र होगा जो संन्यास के उच्च आदर्शों के प्रशिक्षण और संरक्षण के प्रति समर्पित होगा, जहाँ मनुष्य अपने जीवन में संस्कृति का निर्माण करना जान सकेगा।

संन्यास जीवन पद्धति के आदर्शों को एक व्यावहारिक रूप में समाज में लाना, ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन में संस्कृति का अनुभव कर सके—यही अब स्वामी निरंजनानन्द के जीवन का अगला अध्याय और लक्ष्य है। इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए ऐतिहासिक मुंगेर नगरी में गंगा के पावन तट पर पादुका दर्शन गुरुकुल में संन्यास पीठ की स्थापना हुई है।

अपने नवीन मिशन की संकल्प-सिद्धि हेतु तथा संन्यासियों को संन्यास परम्परा से परिचित कराने के उद्देश्य से स्वामीजी ने सन् 2011 में संन्यास पीठ के प्रथम आयोजन के रूप में वर्षभर हवनात्मक रूप से दुर्गाजी की नित्यप्रति उपासना करने का संकल्प लिया। इस अनुष्ठान के अन्तर्गत वर्ष के अन्त तक 11,111 दुर्गा-सहस्रनाम-हवन सम्पन्न किये गये।

श्रुति-स्मृति-आगम आदि स्रोतों से संकलित दुर्गा माँ के सिद्ध स्तोत्रों की यह माला स्वामीजी के इसी शुभ संकल्प का मंगलकारी परिणाम है। उपासना हेतु शास्त्रों में यद्यपि मन्त्रजप, नामजप, ध्यान, कवच, हृदय, स्तोत्र, शतनाम, सहस्रनाम आदि कई उपाय वर्णित हैं, तथापि आराध्य के समक्ष आत्मनिवेदन का सर्वसुलभ साधन स्तुति या स्तोत्रपाठ बताया गया है। देवी माँ के सम्पूर्ण गुणों का वर्णन कर पाना तो मनुष्य के लिए सम्भव नहीं, लेकिन प्रार्थना और स्तुति के माध्यम से माँ के गुणों का बखान कर आराधक का अन्त:करण शुद्ध हो जाता है तथा मन और वाणी भी पवित्र हो जाते हैं। स्तुति और प्रार्थना से देवी माँ शीघ्र ही द्रवित हो जाती हैं और भक्त कृतकृत्य हो जाता है। उपास्य, उपासक तथा उपासना एक हो जाते हैं। और यही उपासना का अन्तिम लक्ष्य भी है।

दुर्गा स्तोत्र



दुर्गा-सूक्तम्



ॐ ॥ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीँ्शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः॥ अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्-स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः॥ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुन्न नावा दुरितातिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्॥ पृतना जितँ्सहमानमुग्रमग्निँ्हुवेम परमाथ्सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरिताऽत्यग्निः॥ प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि। स्वाञ्चाऽग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमायजस्व॥ गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसंचरेम। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै च धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

श्री-देवी-प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां
सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्॥

प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड-
शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां
चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्॥

प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-दशभुजी-दुर्गा-ध्यानम्

ॐ जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृत-शेखराम्।
लोचनत्रय-संयुक्तां पूर्णेन्दुसदृशाननाम्॥
अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।
नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम्॥
सुचारुदशनां तद्वत् पीनोन्नत-पयोधराम्।
त्रिभंगस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्॥
मृणालायतसंस्पर्श-दशबाहु-समन्विताम्।
त्रिशूलं दक्षिणे ध्येयं खड्गं चक्रं क्रमादधः॥
तीक्ष्णबाणं तता शक्तिं दक्षिणेन विचिन्तयेत्।
खेटकं पूर्णचापञ्च पाशमंकुशमेव च॥
घण्टां वा परशुं वाऽपि वामतः सन्निवेशयेत्।
अधस्तान्महिषं तद्वद्-विशिरस्कं प्रदर्शयेत्॥
शिरच्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम्।
हृदिशूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम्॥
रक्तारक्तीकृतांगञ्च रक्तविस्फुरितेक्षणम्।
वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननाम्॥
सपाशवाम हस्तेन-धृतकेशञ्च दुर्गया।
वमद्रुधिरवक्त्रञ्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्॥
देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरिस्थितम्।
किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि॥
प्रसन्नवदनां देवीं सर्वकामफलप्रदाम्।
शत्रुक्षयकरीं देवीं दैत्यदानवदर्पहाम्॥
स्तूयमानञ्च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्।
उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका।
चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपाति चण्डिका॥
आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्टिताम्।
चिन्तयेज्जगतां धात्रीं धर्मकामार्थ-मोक्षदाम्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

ॐ दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्ग दैत्यलोकदवानला ॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥

दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



सप्तश्लोकी दुर्गा

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥ 1॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ 2॥

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 3॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 4॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ 5॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥ 6॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥ 7॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्री दुर्गाष्टकस्तोत्रम्

प्रणम्य विबुधा दुर्गां ब्रह्मा विष्णु शिवादयः।
संहृष्टाश्चास्तुवन् भक्त्या परां तां त्रिपुरा कलाम् ॥ 1 ॥

नमो नमस्ते जगतां विधात्रि संहर्त्रि सर्वान्तरसत्यरूपे।
प्रपन्न लोकाघविनाश हेतु दयाम्बुराशे परिपाहि दुर्गे ॥ 2 ॥

महा भयाद् दानवराजरूपात् त्वया समस्तं जगदेतदद्य।
त्रातं यथा क्रूरमहाहिग्रस्तं भेकं तथाऽस्मान् परिपाहि दुर्गे ॥ 3 ॥

यदा वयं दुर्विपदाऽऽपदोघैः ग्रस्तास्तदा त्वं जगतां विधात्री।
लीलावपुः प्राप्य विमृष्टमात्रा विपन्निमग्नान् परिपाहि दुर्गे ॥ 4 ॥

यत् तेऽखिलं लोक वितानमेतत् तनोः कलांश प्रविभक्त संस्थम्।
तदन्तरे दर्शयसि स्वरूपं माया तवैतत् परिपाहि दुर्गे ॥ 5 ॥

मायात्मिका त्वं निज निर्मलेऽम्ब यतो जगच्चित्रमुदीर्यसेंऽगे।
विचित्ररूपाऽपि चिदेक रूपा अविभाव्यशक्तिः परिपाहि दुर्गे ॥ 6 ॥

यत् ते पदाब्जैकसमाश्रयास्ते विचित्र कृत्या विधिविष्णुमुख्याः।
तत् ते विचित्राकृतिरत्र का स्यात् स्तुमः कथं त्वां परिपाहि दुर्गे ॥ 7 ॥

दुर्गेषु नित्यं भवसंकटेषु दुरन्तचिन्ता हि निगीर्यमाणान्।
शरण्यहीनान् शरणागतार्ति निवारिणी त्वं परिपाहि दुर्गे ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री दुर्गाहृदयम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्म फलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां नाशय ते नमः॥
देवीमम्बामजनयन्त देवास्तां विश्वरूपां पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जंदुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शुभाम्।
वियदाकारसंयुक्तां वीतिहोत्रसमन्वितम्॥
अर्द्धेन्दु लसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।
एवमेकाक्षरं मन्त्रं कवयः शुद्ध चेतसः॥
ध्यायन्ति परमानन्दमयाः ज्ञानाम्बुराशयः।
वाङ्मयाब्रह्मभूस्तस्मादष्टवक्त्रसमन्वितम्॥
सूर्यो वामश्रोत्रं विन्दुः संयुक्ताष्टात् तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वाद्यश्चाधरयुक्त यः॥
विच्चे नवार्णकोणः स्यात् महाऽऽनन्दप्रदायकः।
एतेन सर्वसिद्धिः स्यादेतन्मे निश्चयं ध्रुवम्॥
हृत् पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्य समप्रभाम्।
पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहां भजे।
भजामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्॥
महादारिद्र्यशमनी महारूपा महोत्कटा।
अनन्ता त्वमलक्ष्या त्वं एका सर्वत्र वर्तते॥
मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी॥
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविनाशिनीम्॥
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।
महादुर्गाणि तरामि महादेव्याः प्रसादतः॥

श्री दुर्गा षोडशनाम स्तोत्रम्

नारद उवाच

सर्वाख्यानं श्रुतं ब्रह्मन् अतीव परमाद्भुतम्।
अधुना श्रोतुमिच्छामि दुर्गोपाख्यानमुत्तमम्॥ 1॥

दुर्गा नारायणीशाना विष्णुमाया शिवा सती।
नित्या सत्या भगवती शर्वाणी सर्वमंगला॥ 2॥

अम्बिका वैष्णवी गौरी पार्वती च सनातनी।
नामानि कौथुमोक्तानि सर्वेषां शुभदानि च॥ 3॥

अर्थं षोडशनाम्नां च सर्वेषामीप्सितं वरम्।
ब्रूहि वेदविदां श्रेष्ठ वेदोक्तं सर्वसम्मतम्॥ 4॥

केन वा पूजिता साऽऽदौ द्वितीये केन वा पुरा।
तृतीये वा चतुर्थे वा केन सर्वत्र पूजिता॥ 5॥

नारायण उवाच

अर्थं षोडशनाम्नां च विष्णुर्वेदे चकार सः।
पुनः पृच्छसि ज्ञात्वा च कथयामि यथाऽऽगमम्॥ 6॥

दुर्गो दैत्ये महाविघ्ने भवबन्धे च कर्मणि।
शोके दुःखे च नरके यमदण्डे च जन्मनि ॥ 7॥

महाभयेऽति रोगे वै चाशब्दो हन्तृवाचकः।
एतान् हन्त्येव या देवी सा दुर्गा परिकीर्तिता ॥ 8॥

यशसा तेजसा रूपैर्नारायणसमा गुणैः।
शक्तिर्नारायणस्येयं तेन नारायणी स्मृता॥ 9॥

ईशानः सर्वसिद्धयर्थे चाशब्दो दातृवाचकः।
सर्वसिद्धिप्रदात्री या साऽपीशाना प्रकीर्तिता ॥ 10॥

सृष्टा माया पुरा सृष्टौ विष्णुना परमात्मना।
मोहितं मायया विश्वं विष्णुमाया प्रकीर्तिता ॥ 11॥

शिवे कल्याणरूपा च शिवदा च शिवप्रिया।
प्रिये दातरि चाशब्दः शिवा तेन प्रकीर्तिता ॥ 12 ॥

सद्बुद्ध्यधिष्ठातृ देवी विद्यमाना युगे युगे।
पतिव्रता सुशीला या सा सती परिकीर्तिता ॥ 13 ॥

यथा नित्यो हि भगवान् नित्या भगवती तथा।
स्वमायया तिरोभूता तन्त्रेशे प्राकृते लये॥ 14 ॥

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं सर्वं मिथ्यैव कृत्रिमम्।
दुर्गा सत्यस्वरूपा सा प्रकृतिर्भगवान् यथा॥ 15 ॥

सिद्धैश्वर्यादिकं सर्वं यस्यामस्ति युगे युगे।
सिद्धादिके भगो ज्ञेयस्तेन भगवती स्मृता॥ 16 ॥

सर्वान् मोक्षं प्रापयति जन्ममृत्युजरादिकम्।
चराचरांश्च विश्वस्थां शर्वाणी तेन किर्तिता॥ 17 ॥

मंगलं मोक्षवचनं चाशब्दो दातृवाचकः।
सर्वान् मोक्षान्या ददाति सैव स्यात् सर्वमंगला॥ 18 ॥

हर्षे सम्पदि कल्याणे मंगलं परिकीर्तितम्।
तान् ददाति च सर्वेभ्यस्तेन सा सर्वमंगला॥ 19 ॥

अम्बेति मातृवचनो वन्दने पूजने सदा।
पूजिता वन्दिता माता जगतां तेन साऽम्बिका ॥ 20 ॥

विष्णुभक्ता विष्णुरूपा विष्णोः शक्तिस्वरूपिणी।
सृष्टौ च विष्णुना सृष्टा वैष्णवी तेन कीर्तिता ॥ 21 ॥

गौरः पीते च निर्लिप्ते परे ब्रह्मणि निर्मले।
तस्यात्मनः शक्तिरियं गौरी तेन प्रकीर्तिता ॥ 22 ॥

गुरुः शम्भुश्च सर्वेषां तस्य शक्तिः प्रिया सती।
गुरुः कृष्णश्च तन्माया गौरी तेन प्रकीर्तिता ॥ 23 ॥

तिथिभेदे पर्वभेदे कल्पभेदेऽन्यभेदके।
ख्यातौ तेषु विख्याता पार्वती तेन कीर्तिता ॥ 24 ॥

महोत्सवविशेषे च पर्वन्निति सुकीर्तिता।
तस्याधिदेवी या सा च पार्वती परिकीर्तिता॥ 25॥

पर्वतस्य सुता देवी साऽऽविर्भूता च पर्वते।
पर्वताधिष्ठातृदेवी पार्वती तेन कीर्तिता॥ 26॥

सर्वकाले सना प्रोक्ता विस्तृते च तनीति च।
सर्वत्र सर्वकाले च विद्यमाना सनातनी॥ 27॥

अर्थः षोडशनाम्नां च कीर्तितश्च महामुने।
यथाऽऽगमं त्वं वेदोक्तोपाख्यानं च निशामय॥ 28॥

प्रथमे पूजिता सा च कृष्णेन परमात्मना।
वृन्दावने च सृष्ट्यादौ गोलोके रासमण्डले॥ 29॥

मधुकैटभभीतेन ब्रह्मणा सा द्वितीयतः।
त्रिपुरप्रेरितेनैव तृतीये त्रिपुरारिणा॥ 30॥

भ्रष्ट श्रिया महेन्द्रेण शापाद् दुर्वाससः पुरा।
चतुर्थे पूजिता देवी भक्त्या भगवती सती॥ 31॥

तदा मुनीन्द्रैः सिद्धेन्द्रैर्देवैश्च मुनिपुंगवैः।
पूजिता सर्वविश्वेषु बभूव सर्वतः सदा॥ 32॥

तेजःसु सर्वदेवानां साऽऽविर्भूता पुरा मुने।
सर्वे देवा ददुस्तस्यै शस्त्राण्याभरणानि च॥ 33॥

दुर्गादयश्च दैत्याश्च निहिता दुर्गया तथा।
दत्तं स्वराज्यं देवेभ्यो वरं च यदभीप्सितम्॥ 34॥

कल्पान्तरे पूजिता सा सुरथेन महात्मना।
राज्ञा च मेधशिष्येण मृन्मय्यां च सरित्तटे॥ 35॥

मेषादिभिश्च महिषैः कृष्णसारैश्च गण्डकैः।
छागैरिक्षुसुकूष्माण्डैः पक्षिभिर्बलिभिर्मुने॥ 36॥

वेदोक्तांश्चैव दत्त्वैवमुपचारांस्तु षोडश।
ध्यात्वा च कवचं धृत्वा सम्पूज्य च विधानतः॥ 37॥

राजा कृत्वा परिहारं वरं प्राप यथेप्सितम्।
मुक्तिं सम्प्राय वैश्यश्च सम्पूज्य च सरित्तटे॥ 38॥

तुष्टाव राजा वैश्यश्च साश्रुनेत्रः कृताञ्जलिः।
ससर्ज मृन्मयीं तां वै गभीरे निर्मले जले॥ 39॥

मृन्मयीं तामदृष्ट्वा च जलधौतां नराधिपः।
रुरोद च तदा वैश्यस्ततः स्थानान्तरं ययौ॥ 40॥

त्यक्त्वा देहं च वैश्यस्तु पुष्करे दुष्करं तपः।
कृत्वा जगाम गोलोकं दुर्गादेवीवरेण सः॥ 41॥

राजा ययौ स्वराज्यं च पूज्यो निष्कण्टकं बली।
भोगं च बुभुजे भूपः षष्टिवर्षसहस्त्रकम्॥ 42॥

भार्यां स्वराज्यं संन्यस्य पुत्रे वै कालयोगतः।
मनुर्बभूव सावर्णिस्तप्त्वा वै पुष्करे तपः॥ 43॥

इत्येवं कथितं वत्स समासेन यथागमम्।
दुर्गाख्यानं मुनिश्रेष्ठ किं भूयः श्रोतुमिच्छसि॥ 44॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-दुर्गा-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥ 1॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥ 2॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपा:।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चिति:॥ 3॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागति:॥ 4॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥ 5॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥ 6॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥ 7॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृति:॥ 8॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥ 9॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥ 10॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥ 11॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यति:॥ 12॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला॥ 13॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥ 14॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥ 15॥

विष्णुकृतं देवीस्तोत्रम्

नमो देव्यै प्रकृत्यै च विधात्र्यै सततं नमः।
कल्याण्यै कामदायै च वृद्ध्यै सिद्ध्यै नमो नमः॥ 1॥

सच्चिदानन्दरूपिण्यै संसारारणये नमः।
पञ्चकृत्यविधात्र्यै ते भुवनेश्यै नमो नमः॥ 2॥

सर्वाधिष्ठानरूपायै कूटस्थायै नमो नमः।
अर्धमात्रार्थभूतायै हृल्लेखायै नमो नमः॥ 3॥

ज्ञातं मयाऽखिलमिदं त्वयि सन्निविष्टं
त्वत्तोऽस्य सम्भवलयावपि मातरद्य।
शक्तिश्च तेऽस्य करणे विततप्रभावा
ज्ञाताऽधुना सकललोकमयीति नूनम्॥ 4॥

विस्तार्य सर्वमखिलं सदसद्विकारं
सन्दर्शयस्यविकलं पुरुषाय काले।
तत्त्वैश्च षोडशभिरेव च सप्तभिश्च
भासीन्द्रजालमिव नः किल रञ्जनाय॥ 5॥

न त्वामृते किमपि वस्तुगतं विभाति
व्याप्यैव सर्वमखिलं त्वमवस्थिताऽसि।
शक्तिं विना व्यवहृतो पुरुषोऽप्यशक्तो
बम्भण्यते जननि बुद्धिमता जनेन॥ 6॥

प्रीणासि विश्वमखिलं सततं प्रभावैः
स्वैस्तेजसा च सकलं प्रकटीकरोषि।
अस्त्येव देवि तरसा किल कल्पकाले
को वेद देवि चरितं तव वैभवस्य॥ 7॥

त्राता वयं जननि ते मधुकैटभाभ्यां
लोकाश्च ते सुवितताः खलु दर्शिता वै।
नीताः सुखस्य भवने परमां च कोटिं
यद्दर्शनं तव भवानि महाप्रभावम्॥ 8॥

नाहं भवो न च विरिञ्चि विवेद मातः
कोऽन्यो हि वेत्ति चरितं तव दुर्विभाव्यम्।
कानीह सन्ति भुवनानि महाप्रभावे
ह्यस्मिन्भवानि रचिते रचनाकलापे॥ 9॥

अस्माभिरत्र भुवने हरिरन्य एव
दृष्टः शिवः कमलजः प्रथितप्रभावः।
अन्येषु देवि भुवनेषु न सन्ति किं ते
किं विद्म देवि विततं तव सुप्रभावम्॥ 10॥

याचेऽम्ब तेऽङ्घ्रिकमलं प्रणिपत्य कामं
चित्ते सदा वसतु रूपमिदं तवैतत्।
नामापि वक्त्रकुहरे सततं तवैव
संदर्शनं तव पदाम्बुजयोः सदैव॥ 11॥

भृत्योऽयमस्ति सततं मयि भावनीयं
त्वां स्वामिनीति मनसा ननु चिन्तयामि।
एषाऽऽवयोरविरता किल देवि भूया-
द्व्याप्तिः सदैव जननीसुतयोरिवार्ये॥ 12॥

त्वं वेत्सि सर्वमखिलं भुवनप्रपञ्चं
सर्वज्ञता परिसमाप्तिनितान्तभूमिः।
किं पामरेण जगदम्ब निवेदनीयं
यद्युक्तमाचर भवानि तवेंगितं स्यात्॥ 13॥

ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरुमापतिश्च
संहारकारक इयं तु जने प्रसिद्धिः।
किं सत्यमेतदपि देवि तवेच्छया वै
कर्तुं क्षमा वयमजे तव शक्तियुक्ताः॥ 14॥

धात्री धराधरसुते न जगद् बिभर्ति
आधारशक्तिरखिलं तव वै बिभर्ति।
सूर्योऽपि भाति वरदे प्रभया युतस्ते
त्वं सर्वमेतदखिलं विरजा विभासि॥ 15॥

ब्रह्माऽहमीश्वरवरः किल ते प्रभावा-
त्सर्वे वयं जनियुता न यदा तु नित्याः।

केऽन्ये सुरा: शतमखप्रमुखाश्च नित्या
नित्या त्वमेव जननी प्रकृति: पुराणा॥ 16॥

त्वं चेद्भवानि दयसे पुरुषं पुराणं
जानेऽहमद्य तव सन्निधिग: सदैव।
नोचेदहं विभुरनादिरनीह ईशो
विश्वात्मधीरिति तम:प्रकृति: सदैव॥ 17॥

विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां
शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव।
त्वं कीर्तिकान्तिकमलामलतुष्टिरूपा
मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्यलोके॥ 18॥

गायत्र्यसि प्रथमवेदकला त्वमेव
स्वाहा स्वधा भगवती सगुणार्धमात्रा।
आम्नाय एव विहितो निगमो भवत्या
सञ्जीवनाय सततं सुरपूर्वजानाम्॥ 19॥

मोक्षार्थमेव रचयस्यखिलं प्रपञ्चं
तेषां गता: खलु यतो ननु जीवभावम्।
अंशा अनादिनिधनस्य किलानघस्य
पूर्णार्णवस्य वितता हि यथा तरंगा:॥ 20॥

जीवो यदा तु परिवेत्ति तवैव कृत्यं
त्वं संहरस्यखिलमेतदिति प्रसिद्धम्।
नाट्यं नटेन रचितं वितथेऽन्तरंगे
कार्ये कृते विरमसे प्रथितप्रभावा॥ 21॥

त्राता त्वमेव मम मोहमयाद्भवाब्धे-
स्त्वामम्बिके सततमेमि महार्तिदे च।
रागादिभिर्विरचिते वितथे किलान्ते
मामेव पाहि बहुदु:खकरे च काले॥ 22॥

नमो देवि महाविद्ये नमामि चरणौ तव।
सदा ज्ञानप्रकाशं मे देहि सर्वार्थदे शिवे॥ 23॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

शिवकृतं दुर्गास्तोत्रम्

रक्ष रक्ष महादेवि दुर्गे दुर्गतिनाशिनि।
मां भक्तमनुरक्तं च शत्रुग्रस्तं कृपामयि॥ 1॥

विष्णुमाये महाभागे नारायणि सनातनि।
ब्रह्मस्वरूपे परमे नित्यानन्दस्वरूपिणि॥ 2॥

त्वं च ब्रह्मादिदेवानामम्बिके जगदम्बिके।
त्वं साकारे च गुणतो निराकारे च निर्गुणात्॥ 3॥

मायया पुरुषस्त्वं च मायया प्रकृतिः स्वयम्।
तयोः परं ब्रह्म परं त्वं बिभर्षि सनातनि॥ 4॥

वेदानां जननी त्वं च सावित्री च परात्परा।
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीः सर्वसम्पत्स्वरूपिणी॥ 5॥

मर्त्यलक्ष्मीश्च क्षीरोदे कामिनी शेषशायिनः।
स्वर्गेषु स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं राजलक्ष्मीश्च भूतले॥ 6॥

नागादिलक्ष्मीः पाताले गृहेषु गृहदेवता।
सर्वशस्यस्वरूपा त्वं सर्वैश्वर्यविधायिनी॥ 7॥

रागाधिष्ठातृदेवी त्वं ब्रह्मणश्च सरस्वती।
प्राणानामधिदेवी त्वं कृष्णस्य परमात्मनः॥ 8॥

गोलोके च स्वयं राधा श्रीकृष्णस्यैव वक्षसि।
गोलोकाधिष्ठिता देवी वृन्दावनवने वने॥ 9॥

श्रीरासमण्डले रम्या वृन्दावनविनोदिनी।
शतशृंगाधिदेवी त्वं नाम्ना चित्रावलीति च॥ 10॥

दक्षकन्या कुत्र कल्पे कुत्र कल्पे च शैलजा।
देवमातादितिस्त्वं च सर्वाधारा वसुन्धरा॥ 11॥

त्वमेव गंगा तुलसी त्वं च स्वाहा स्वधा सती।
त्वदंशांशांशकलया सर्वदेवादियोषितः॥ 12॥

स्त्रीरूपं चापिपुरुषं देवि त्वं च नपुंसकम्।
वृक्षाणां वृक्षरूपा त्वं सृष्टा चांकुररूपिणी॥ 13॥



वह्नौ च दाहिकाशक्तिर्जले शैत्यस्वरूपिणी।
सूर्ये तेज:स्वरूपा च प्रभारूपा च संततम्॥ 14॥

गन्धरूपा च भूमौ च आकाशे शब्दरूपिणी।
शोभास्वरूपा चन्द्रे च पद्मसंघे च निश्चितम्॥ 15॥

सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा च पालने परिपालिका।
महामारी च संहारे जले च जलरूपिणी॥ 16॥

क्षुत्त्वं दया त्वं निद्रा त्वं तृष्णा त्वं बुद्धिरूपिणी।
तुष्टिस्त्वं चापि पुष्टिस्त्वं श्रद्धा त्वं च क्षमा स्वयम्॥ 17॥

शान्तिस्त्वं च स्वयं भ्रान्ति: कान्तिस्त्वं कीर्तिरेव च।
लज्जा त्वं च तथा माया भुक्ति-मुक्तिस्वरूपिणी॥ 18॥

सर्वशक्तिस्वरूपा त्वं सर्वसम्पत्प्रदायिनी।
वेदेऽनिर्वचनीया त्वं त्वां न जानाति कश्चन॥ 19॥

सहस्रवक्त्रस्त्वां स्तोतु न च शक्त: सुरेश्वरि।
वेदा न शक्ता: को विद्वान् न च शक्ता सरस्वती॥ 20॥

स्वयं विधाता शक्तो न न च विष्णु: सनातन:।
किं स्तौमि पञ्चवक्त्रेण रणत्रस्तो महेश्वरि।
कृपां कुरु महामाये मम शत्रुक्षयं कुरु॥21॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

ब्रह्माकृतं जयदुर्गास्तोत्रम्

दुर्गे शिवेऽभये माये नारायणि सनातनि।
जये मे मंगलं देहि नमस्ते सर्वमंगले॥ 1॥

दैत्यनाशार्थवचनो दकारः परिकीर्तितः।
उकारो विघ्ननाशार्थवाचको वेदसम्मतः॥ 2॥

रेफो रोगघ्नवचनो गश्च पापघ्नवाचकः।
भयशत्रुघ्नवचनश्चाकारः परिकीर्तितः॥ 3॥

स्मृत्युक्तिस्मरणाद् यस्या एते नश्यन्ति निश्चितम्।
अतो दुर्गा हरेः शक्तिर्हरिणा परिकीर्तिता॥ 4॥

विपत्तिवाचको दुर्गश्चाकारो नाशवाचकः।
दुर्गं नश्यति या नित्यं सा दुर्गा परिकीर्तिता॥ 5॥

दुर्गो दैत्येन्द्रवचनोऽप्याकारो नाशवाचकः।
तं ननाश पुरा तेन बुधैर्दुर्गा प्रकीर्तिता॥ 6॥

शश्च कल्याणवचन इकारोत्कृष्टवाचकः।
समूहवाचकश्चैव वाकारो दातृवाचकः॥ 7॥

श्रेयःसंघोत्कृष्टदात्री शिवा तेन प्रकीर्तिता।
शिवराशिमूर्तिमती शिवा तेन प्रकीर्तिता॥ 8॥

शिवो हि मोक्षवचनश्चाकारो दातृवाचकः।
स्वयं निर्वाणदात्री या सा शिवा परिकीर्तिता॥ 9॥

अभयो भयनाशोक्तश्चाकारो दातृवाचकः।
प्रददात्यभयं सद्यः साभया परिकीर्तिता॥ 10॥

राजश्रीवचनो माश्च याश्च प्रापणवाचकः।
तां प्रापयति या सद्यः सा माया परिकीर्तिता॥ 11॥

माश्च मोक्षार्थवचनो याश्च प्रापणवाचकः।
तं प्रापयति या नित्यं सा माया परिकीर्तिता॥ 12॥

नारायणार्धांगभूता तेन तुल्या च तेजसा।
तदा तस्य शरीरस्था तेन नारायणी स्मृता॥ 13॥

निर्गुणस्य च नित्यस्य वाचकश्च सनातनः।
सदा नित्या निर्गुणा या कीर्तिता सा सनातनी॥ 14॥

जयः कल्याणवचनो ह्याकारो दातृवाचकः।
जयं ददाति या नित्यं सा जया परिकीर्तिता॥ 15॥

सर्वमंगलशब्दश्च सम्पूर्णैश्वर्यवाचकः।
आकारो दातृवचनस्तद्दात्री सर्वमंगला॥ 16॥

नामाष्टकमिदं सारं नामार्थसहसंयुतम्।
नारायणेन यद् दत्तं ब्रह्मणे नाभिपंकजे॥ 17॥

तस्मै दत्त्वा निद्रितश्च बभूव जगतां पतिः।
मधुकैटभौ दुर्गान्तौ ब्रह्माणं हन्तुमुद्यतौ॥ 18॥

स्तोत्रेणानेन स ब्रह्मा स्तुतिं नत्वा चकार ह।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीरामकृता कात्यायनीस्तुतिः

नमस्ते त्रिजगद्वन्द्ये संग्रामे जयदायिनि।
प्रसीद विजयं देहि कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥ 1॥

सर्वशक्तिमये दुष्टरिपुनिग्रहकारिणी।
दुष्टजृम्भिणि संग्रामे जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 2॥

त्वमेका परमा शक्तिः सर्वभूतेष्ववस्थिता।
दुष्टं संहर संग्रामे जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 3॥

रणप्रिये रक्तभक्षे मांसभक्षणकारिणि।
प्रपन्नार्तिहरे युद्धे जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 4॥

खट्वांगासिकरे मुण्डमालाद्योतितविग्रहे।
ये त्वां स्मरन्ति दुर्गेषु तेषां दुःखहरा भव॥ 5॥

त्वत्पादपंकजाद्दैन्यं नमस्ते शरणप्रिये।
विनाशय रणे शत्रून् जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 6॥

अचिन्त्यविक्रमेऽचिन्त्यरूपसौन्दर्यशालिनि।
अचिन्त्यचरितेऽचिन्त्ये जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 7॥

ये त्वां स्मरन्ति दुर्गेषु देवीं दुर्गविनाशिनीम्।
नावसीदन्ति दुर्गेषु जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 8॥

महिषासृक्प्रिये संख्ये महिषासुरमर्दिनि।
शरण्ये गिरिकन्ये मे जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 9॥

प्रसन्नवदने चण्डि चण्डासुरविमर्दिनि।
संग्रामे विजयं देहि शत्रूञ्जहि नमोऽस्तु ते॥ 10॥

रक्ताक्षि रक्तदशने रक्तचर्चितगात्रके।
रक्तबीजनिहन्त्री त्वं जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 11॥

निशुम्भशुम्भसंहन्त्रि विश्वकर्त्रि सुरेश्वरि।
जहि शत्रून् रणे नित्यं जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 12॥

भवान्येतज्जगत्सर्वं त्वं पालयसि सर्वदा।
रक्ष विश्वमिदं मातर्हत्वैतान् दुष्टराक्षसान्॥ 13॥

त्वं हि सर्वगता शक्तिर्दुष्टमर्दनकारिणि।
प्रसीद जगतां मातर्जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 14॥

दुर्वृत्तवृन्ददमनि सद्वृत्तपरिपालिनि।
निपातय रणे शत्रूञ्जयं देहि नमोऽस्तु ते॥ 15॥

कात्यायनि जगन्मात: प्रपन्नार्तिहरे शिवे।
संग्रामे विजयं देहि भयेभ्य: पाहि सर्वदा॥ 16॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



श्रीकृष्णकृतं दुर्गास्तोत्रम्

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥ 1 ॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥ 2 ॥

तेज:स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा॥ 3 ॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला॥ 4 ॥

सर्वबुद्धिस्वरूपा च सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी॥ 5 ॥

त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्वदाने च सर्वशक्तिस्वरूपिणी॥ 6 ॥

निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मन: प्रिया।
क्षुत्क्षान्ति: शान्तिरीशा च कान्ति: सृष्टिश्च शाश्वती॥ 7 ॥

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा दया तथा।
सतां सम्पत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह॥ 8 ॥

प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा।
शश्वत्कर्ममयी शक्ति: सर्वदा सर्वजीविनम्॥ 9 ॥

देवेभ्य: स्वपदो दात्री धातुर्धात्री कृपामयी।
हिताय सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी॥ 10 ॥

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम्।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धियोगिनी॥ 11 ॥

माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी।
भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयंकरी॥ 12 ॥

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे।
सतां कीर्ति: प्रतिष्ठा च निन्दा त्वमसतां सदा॥ 13 ॥



महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी।
रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी॥ 14॥

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं च ब्रह्मादीनां च सर्वदा।
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम्॥ 15॥

विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम्।
मेधास्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम्॥ 16॥

राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाणिज्यरूपिणी।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं रक्षारूपा च पालने॥ 17॥

तथान्ते त्वं महामारी विश्वस्य विश्वपूजिते।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च मोहिनी॥ 18॥

दुरत्यया मे माया त्वं यया सम्मोहितं जगत्।
यया मुग्धो हि विद्वांश्च मोक्षमार्गं न पश्यति॥ 19॥

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गाया दुर्गनाशनम्।
पूजाकाले पठेद् यो हि सिद्धिर्भवति वाञ्छिता॥ 20॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

परशुरामकृतं श्रीदुर्गास्तोत्रम्

श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च।
आविर्भूता विग्रहतः पुरा सृष्ट्युन्मुखस्य च॥ 1॥

सूर्यकोटिप्रभायुक्ता रत्नालंकारभूषिता।
वह्निशुद्धांशुकाधाना सस्मिता सुमनोहरा॥ 2॥

नवयौवनसम्पन्ना सिन्दूरबिन्दुशोभिता।
ललिता कबरीभारमालतीमाल्यमण्डिता॥ 3॥

अहोऽनिर्वचनीया त्वं चारुमूर्तिं च बिभ्रती।
मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां महाविष्णुर्विधिः स्वयम्॥ 4॥

मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम्।
रासे सम्भूय सहसा सस्मिताऽऽराधिता पुरा॥ 5॥

सद्भिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी।
कृष्णस्त्वां सहसाऽऽज्ञाय वीर्याधानं चकार ह॥ 6॥

ततो डिम्भं महज्जज्ञे यतो भूतो महाविराट्।
यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्माण्डान्यखिलानि च॥ 7॥

राधारतिक्रमेणैव तन्निःश्वासो बभूव ह।
स निःश्वासो महावायुः स विराड्विश्वधारकः॥ 8॥

भयघर्मजलेनैव पुप्लुवे विश्वगोलकम्।
स विराड्विश्वनिलयो जलराशिर्बभूव ह॥ 9॥

ततस्त्वं पञ्चधा भूय पञ्चमूर्तिश्च बिभ्रती॥ 10॥

प्राणाधिष्ठात्री या मूर्तिः कृष्णस्य परमात्मनः।
कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः॥ 11॥

वेदाधिष्ठात्री या मूर्तिर्वेदशास्त्रप्रसूरपि।
तां सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः॥ 12॥

ऐश्वर्याधिष्ठात्री मूर्तिर्या शांतिः शांतिरूपिणी।
लक्ष्मीं वदन्ति सन्तस्तां शुद्धसत्त्वस्वरूपिणीम्॥ 13॥

रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिसुता प्रसूः।
सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञां शास्त्रज्ञाः प्रवदन्त्यहो॥ 14॥

बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मुक्तिरधिदेवता।
सर्वमंगलरूपा त्वं सर्वमंगलकारिणी॥ 15॥

सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य मन्दिरेऽधुना।
शिवे शिवस्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके॥ 16॥

सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया।
राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च॥ 17॥

परमानन्दरूपस्य परमानन्दरूपिणी।
त्वत्कलांशांशकलया देवानामपि योषितः॥ 18॥

त्वं विद्या योषितः सर्वाः सर्वेषां बीजरूपिणी।
छाया सूर्यस्य चन्द्रस्य रोहिणी सर्वमोहिनी॥ 19॥

शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी।
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा॥ 20॥

वह्नेः प्रिया या स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी।
यमस्य च सुशीला वै नैर्ऋतस्य च कैटभी॥ 21॥

ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया।
देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती॥ 22॥

अदितिर्देवमाता या मुद्राऽगस्त्यमुनेः प्रिया।
अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा॥ 23॥

गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद् वराः।
एताः सर्वाश्च या अन्याः सर्वास्त्वत्कलयाम्बिके॥ 24॥

गृहलक्ष्मीर्गृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु।
तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च॥ 25॥

सतां सत्यस्वरूपा त्वं ह्यसतां कलहांकुरा।
ज्योतिरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च॥ 26॥

सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने।
जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे॥ 27॥

त्वं भूमौ गन्धरूपा च गगने शब्दरूपिणी।
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम्॥ 28॥

कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा।
शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युञ्जये शिवे॥ 29॥

सृष्टिपालनसंहारशक्तयस्त्रिविधाश्च याः।
ब्रह्माविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तुते॥ 30॥

मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः।
स्तुत्वा मुक्तश्च यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम्॥ 31॥

मधुकैटभयोर्युद्धे त्राताऽसौ विष्णुरीश्वरीम्।
बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ 32॥

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे।
यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ 33॥

विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः।
जघान त्रिपुरं स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ 34॥

यदाज्ञया वाति वातः सूर्यस्तपति सन्ततम्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निस्तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ 35॥

यदाज्ञया हि कालश्च शश्वद् भ्रमति वेगतः।
मृत्युश्चरति जन्तूनां तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ 36॥

स्त्रष्टा सृजति सृष्टिं च पाता पाति यदाज्ञया।
संहर्ता संहरेत्काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥ 37॥

ज्योतिःस्वरूपो भगवान् श्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयं।
यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम्॥ 38॥

रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधान् क्षमस्व मे।
शिशूनामपराधेन कुतो माता हि कुप्यति॥ 39॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

वेदैः कृता दुर्गास्तुतिः

दुर्गे विश्वमपि प्रसीद परमे सृष्ट्यादिकार्यत्रये
ब्रह्माद्याः पुरुषास्त्रयो निजगुणैस्त्वत्स्वेच्छया कल्पिताः।
नो ते कोऽपि च कल्पकोऽत्र भुवने विद्येत मातर्यतः
कः शक्तः परिवर्णितुं तव गुणाँल्लोके भवेद्दुर्गमान्॥ 1॥

त्वामाराध्य हरिर्निहत्य समरे दैत्यान् रणे दुर्जयान्
त्रैलोक्यं परिपाति शम्भुरपि ते धृत्वा पदं वक्षसि।
त्रैलोक्यक्षयकारकं समपिबद्यत्कालकूटं विषं
किं ते वा चरितं वयं त्रिजगतां ब्रूमः परित्र्यम्बिके॥ 2॥

या पुंसः परमस्य देहिन इह स्वीयैर्गुणैर्मायया
देहाख्यापि चिदात्मिकापि च परिस्पन्दादिशक्तिः परा।
त्वन्मायापरिमोहितास्तनुभृतो यामेव देहस्थिता
भेदज्ञानवशाद्वदन्ति पुरुषं तस्यै नमस्तेऽम्बिके॥ 3॥

स्त्रीपुंस्त्वप्रमुखैरुपाधिनिचयैर्हीनं परं ब्रह्म यत्
त्वत्तो या प्रथमं बभूव जगतां सृष्टौ सिसृक्षा स्वयम्।
सा शक्तिः परमाऽपि यच्च समभून्मूर्तिद्वयं शक्तित-
स्त्वन्मायामयमेव तेन हि परं ब्रह्मापि शक्त्यात्मकम्॥ 4॥

तोयोत्थं करकादिकं जलमयं दृष्ट्वा यथा निश्चय-
स्तोयत्वेन भवेद्ग्रहोऽप्यभिमतां तथ्यं तथैव ध्रुवम्।
ब्रह्मोत्थं सकलं विलोक्य मनसा शक्त्यात्मकं ब्रह्म त-
च्छक्तित्वेन विनिश्चितः पुरुषधीः पारं परा ब्रह्मणि॥ 5॥

षट्चक्रेषु लसन्ति ये तनुमतां ब्रह्मादयः षट्शिवा-
स्ते प्रेता भवदाश्रयाच्च परमेशत्वं समायान्ति हि।
तस्मादीश्वरता शिवे नहि शिवे त्वय्येव विश्वाम्बिके
त्वं देवि त्रिदशैकवन्दितपदे दुर्गे प्रसीदस्व नः॥ 6॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

युधिष्ठिरकृतं दुर्गादेवीस्तोत्रम्

यशोदागर्भसम्भूतां नारायणवरप्रियाम्।
नन्दगोपकुले जातां मंगल्यां कुलवर्धिनीम्॥ 1॥

कंसविद्रावणकरीमसुराणां क्षयंकरीम्।
शिलातटविनिक्षिप्तामाकाशं प्रतिगामिनीम्॥ 2॥

वासुदेवस्य भगिनीं दिव्यमाल्यविभूषिताम्।
दिव्याम्बरधरां देवीं खड्गखेटकधारिणीम्॥ 3॥

भारावतरणे पुण्ये ये स्मरन्ति सदाशिवाम्।
तान् वै तारयसे पापात् पंके गामिव दुर्बलाम्॥ 4॥

नमोऽस्तु वरदे कृष्णे कुमारि ब्रह्मचारिणि।
बालार्कसदृशाकारे पूर्णचन्द्रनिभानने॥ 5॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रे पीनश्रोणिपयोधरे।
मयूरपिच्छवलये केयूरांगदधारिणि।
भासि देवि यथा पद्मा नारायणपरिग्रहः॥ 6॥

स्वरूपं ब्रह्मचर्ये च विशदं गगनेश्वरी।
कृष्णाच्छविसमा कृष्णा संकर्षणसमानना॥ 7॥

बिभ्रती विपुलौ बाहू शक्रध्वजसमुच्छ्रयौ।
पात्री च पंकजी घण्टी स्त्रीविशुद्धा च या भुवि॥ 8॥

पाशं धनुर्महाचक्रं विविधान्यायुधानि च।
कुण्डलाभ्यां सुपूर्णाभ्यां कर्णाभ्यां च विभूषिता॥ 9॥

चन्द्रविस्पर्द्धिना देवि मुखेन त्वं विराजसे।
मुकुटेन विचित्रेण केशबन्धेन शोभिना॥ 10॥

भुजंगाभोगवासेन श्रोणिसूत्रेण राजता।
विभ्राजसे चाबद्धेन भोगेनेवेह मन्दरः॥ 11॥

ध्वजेन शिखिपिच्छानामुच्छ्रितेन विराजसे।
कौमारं व्रतमास्थाय त्रिदिवं पावितं त्वया॥ 12॥

तेन त्वं स्तूयसे देवि त्रिदशैः पूज्यसेऽपि च।
त्रैलोक्यरक्षणार्थाय महिषासुरनाशिनि।
प्रसन्ना मे सुरश्रेष्ठे दयां कुरु शिवा भव॥ 13॥

जया त्वं विजया चैव संग्रामे च जयप्रदा।
ममापि विजयं देहि वरदा त्वं च साम्प्रतम्॥ 14॥

विन्ध्ये चैव नगश्रेष्ठे तव स्थानं हि शाश्वतम्।
कालि कालि महाकालि खड्गखट्वांगधारिणि॥ 15॥

कृतानुयात्रा भूतैस्त्वं वरदा कामचारिणि।
भारावतारे ये च त्वां संस्मरिष्यन्ति मानवाः॥ 16॥

प्रणमन्ति च ये त्वां हि प्रभाते तु नरा भुवि।
न तेषां दुर्लभं किंचित् पुत्रतो धनतोऽपि वा॥ 17॥

दुर्गात् तारयसे दुर्गे तत् त्वं दुर्गा स्मृता जनैः।
कान्तारेष्ववसन्नानां मग्नानां च महार्णवे॥ 18॥

दस्युभिर्वा निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम्।
जलप्रतरणे चैव कान्तारेष्वटवीषु च॥ 19॥

ये स्मरन्ति महादेवि न च सीदन्ति ते नराः।
त्वं कीर्तिः श्रीर्धृतिः सिद्धिर्ह्रीर्विद्या संततिर्मतिः॥ 20॥

संध्या रात्रिः प्रभा निद्रा ज्योत्स्ना कान्तिः क्षमा दया।
नृणां च बन्धनं मोहं पुत्रनाशं धनक्षयम्॥ 21॥

व्याधिं मृत्युं भयं चैव पूजिता नाशयिष्यसि।
सोऽहं राज्यात् परिभ्रष्टःशरणं त्वां प्रपन्नवान्॥ 22॥

प्रणतश्च यथा मूर्ध्ना तव देवि सुरेश्वरि।
त्राहि मां पद्मपत्राक्षि सत्ये सत्या भवस्व नः।
शरणं भव मे दुर्गे शरण्ये भक्तवत्सले॥ 23॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

अर्जुनकृतं दुर्गादेवीस्तोत्रम्

नमस्ते सिद्धसेनानि आर्ये मन्दरवासिनि।
कुमारि कालि कापालि कपिले कृष्णपिंगले॥ 1॥

भद्रकालि नमस्तुभ्यं महाकालि नमोऽस्तु ते।
चण्डि चण्डे नमस्तुभ्यं तारिणि वरवर्णिनि॥ 2॥

कात्यायनि महाभागे करालि विजये जये।
शिखिपिच्छध्वजधरे नानाभरणभूषिते॥ 3॥

अट्टशूलप्रहरणे खड्गखेटकधारिणि।
गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे नन्दगोपकुलोद्भवे॥ 4॥

महिषासृक्प्रिये नित्यं कौशिकि पीतवासिनि।
अट्टहासे कोकमुखे नमस्तेऽस्तु रणप्रिये॥ 5॥

उमे शाकम्भरि श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि।
हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोऽस्तु ते॥ 6॥

वेदश्रुति महापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि।
जम्बूकटकचैत्येषु नित्यं सन्निहितालये॥ 7॥

त्वं ब्रह्मविद्या विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम्।
स्कन्दमातर्भगवति दुर्गे कान्तारवासिनि॥ 8॥

स्वाहाकार: स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती।
सावित्रि वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते॥ 9॥

स्तुतासि त्वं महादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना।
जयो भवतु मे नित्यं त्वत्प्रसादाद् रणाजिरे॥ 10॥

कान्तारभयदुर्गेषु भक्तानां चालयेषु च।
नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान्॥ 11॥

त्वं जम्भनी मोहिनी च माया ह्री: श्रीस्तथैव च।
संध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा॥ 12॥

तुष्टि: पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्यविवर्धिनी।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणै:॥ 13॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥

पाण्डवाकृता कात्यायनीस्तुतिः



कात्यायनि त्रिदशवन्दितपादपद्मे
विश्वोद्भवस्थितिलयैकनिदानरूपे।
देवी प्रचण्डदलिनि त्रिपुरारिपत्नि
दुर्गे प्रसीद जगतां परमार्तिहन्त्रि॥ 1॥

त्वं दुष्टदैत्यविनिपातकरी सदैव
दुष्टप्रमोहनकरी किल दुःखहन्त्री।
त्वां यो भजेदिह जगन्मयि तं कदापि
नो बाधते भवसु दुःखमचिन्त्यरूपे॥ 2॥

त्वामेव विश्वजननीं प्रणिपत्य विश्वं
ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरहोत्ति शम्भुः।
काले च तान्सृजसि पासि विहंसि मातः
त्वल्लीलयैव नहि तेऽस्ति जनैर्विनाशः॥ 3॥

त्वं यैः स्मृता समरमूर्धनि दुःखहन्त्रि
तेषां तनून्नहि विशन्ति विपक्षबाणाः।
तेषां शरास्तु परगात्रनिमग्नपुंखाः
प्राणान्ग्रसन्ति दनुजेन्द्रनिपातकर्त्रि॥ 4॥

यस्त्वन्मनुं जपति घोररणे सुदुर्गे
पश्यन्ति कालसदृशं किल तं विपक्षाः।
त्वं यस्य वै जयकरी खलु तस्य वक्त्राद्
ब्रह्माक्षरात्मकमनुस्तव निःसरेच्च॥ 5॥

त्वामाश्रयन्ति परमेश्वरि ये भयेषु
तेषां भयं नहि भवेदिह वा परत्र।
तेभ्यो भयादिह सुदूरत एव दुष्टाः
त्रस्ताः पलायनपराश्च दिशो द्रवन्ति॥ 6॥

पूर्वे सुरासुररणे सुरनायकस्त्वां
सम्प्रार्थयन्नसुरवृन्दमुपाजघान।
रामोऽपि राक्षसकुलं निजघान तद्वत्
त्वत्सेवनादृत इहास्ति जयो न चैव॥ 7॥

तत्त्वां भजामि जयदां जगदेकवन्द्यां
विश्वाश्रयां हरिविरञ्चिसुसेव्यपादाम् ।
त्वं नो विधेहि विजयं त्वदनुग्रहेण
शत्रून्निपात्य समरे विजयं लभामः॥ 8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



द्रौपदीकृता कात्यायनीस्तुतिः

देवी दुर्गे जगन्मातः सर्वरक्षणकारिणि।
प्रसीद त्वत्प्रपन्नानां दुःखदारिद्र्यनाशिनी॥ 1॥

दुष्टस्तम्भिनी विश्वेशि कात्यायनि महेश्वरि।
विश्वमोहिनि विश्वेशे चितिरूपे नमोऽस्तु ते॥ 2॥

महामोहस्वरूपा त्वं शुद्धज्ञानस्वरूपिणी।
ये त्वां स्मरन्ति संसारे ते दुर्गान्निस्तरन्ति हि॥ 3॥

पातिव्रत्यस्वरूपा त्वं साध्वीनां जगदम्बिके।
निस्तारय भयाद्घोराच्छंकरप्राणवल्लभे॥ 4॥

त्वमेव देवि दीनानां सदासि परमा गतिः।
त्वामहं शरणं प्राप्ता त्राहि मां घोरसंकटात्॥ 5॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



युधिष्ठिरकृता कामाख्यास्तुतिः

नमस्ते परमेशानि ब्रह्मरूपे सनातनि ।
सुरासुरजगद्वन्द्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 1 ॥

न ते प्रभावं जानन्ति ब्रह्माद्यास्त्रिदशेश्वराः।
प्रसीद जगतामाद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 2 ॥

अनादिपरमा विद्या देहिनां देहधारिणी।
त्वमेवासि जगद्वन्द्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 3 ॥

त्वं बीजं सर्वभूतानां त्वं बुद्धिश्चेतना धृतिः।
त्वं प्रबोधश्च निद्रा च कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 4 ॥

त्वामाराध्य महेशोऽपि कृतकृत्यं हि मन्यते।
आत्मानं परमात्माऽपि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 5 ॥

दुर्वृत्तवृत्तसंहर्त्रि पापपुण्यफलप्रदे।
लोकानां तापसंहर्त्रि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 6 ॥

त्वमेका सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी।
करालवदने कालि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 7 ॥

प्रपन्नार्तिहरे मातः सुप्रसन्नमुखाम्बुजे।
प्रसीद परमे पूर्णे कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 8 ॥

त्वामाश्रयन्ति ये भक्त्या यान्ति चाश्रयतां तु ते।
जगतां त्रिजगद्धात्रि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 9 ॥

शुद्धज्ञानमये पूर्णे प्रकृतिः सृष्टिभाविनी।
त्वमेव मातर्विश्वेशि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ 10 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्रीदुर्गा-पञ्जर-स्तवम्

ॐ दुर्गे दुर्ग-प्रदेशेषु, दुर्वार-रिपु-मर्दिनी।
मर्दयित्री रिपु श्रीणां, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 1॥

पथि देवालये दुर्गे, अरण्ये पर्वते जले।
सर्वत्रोपगते दुर्गे, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 2॥

दुःस्वप्न-दर्शने घोरे, घोरे निष्पन्न-बन्धने।
महोत्पाते च नरके, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 3॥

व्याघ्रोरग-वराहाग्नि, निर्ह्रादि-जन-संकटे।
ब्रह्मा-विष्णु-स्तुते, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 4॥

खेचरा मातरः सर्वे, भूचराश्चाति-रोहिताः।
एते समाश्रितास्तां त्वं, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 5॥

कंसासुर-पुरे घोरे, कृष्ण-रक्षण-कारिणी।
रक्ष-रक्ष सदा दुर्गे, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 6॥

अनिरुद्धस्य रुद्धस्य, दुर्गे वाण-पुरे पुरा।
वरदे त्वं महा-घोरे, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 7॥

देव-द्वारे नदी-तीरे, राज-द्वारे च संकटे।
पर्वतारोहणे दुर्गे, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते॥ 8॥

दुर्गा-पञ्जरमेतत्तु, भुक्ति-मुक्ति-प्रदायकः।
पठतस्तारयेद् दुर्गा, नात्र कार्या विचारणा॥ 9॥

रुद्र-ज्वाला महा-देवि, क्षमा च अखिलेश्वरी।
अनन्ता विजया नित्या, मातस्तमपराजिता॥ 10॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



कुमारी-स्तोत्रम्

देवेन्द्रादय इन्दुकोटिकिरणां वाराणसीवासिनीं
विद्यां वाग्भवकामिनीं त्रिनयनां सूक्ष्मक्रियाज्वालिनीम्।
चण्डोद्योगनिकृन्तिनीं त्रिजगतां धात्रीं कुमारीं वरां
मूलाम्भोरुहवासिनीं शशिमुखीं सम्पूजयामि श्रिये॥ 1॥

भाव्यां देवगणैः शिवेन्द्रयतिभिर्मोक्षार्थिभिर्बालिकां
सन्ध्यां नित्यगुणोदयां द्विजगणे श्रेष्ठोदयां सारुणाम्।
शुक्लाभां परमेश्वरीं शुभकरीं भद्रां विशालाननां
गायत्रीं गणमातरं दिनगतिं कृष्णांच वृद्धां भजे॥ 2॥

बालां बालकपूजितां गणभृतां विद्यावतां मोक्षदां
धात्रीं शुक्लसरस्वतीं नववरां वाग्वादिनीं चण्डिकाम्।
स्वाधिष्ठानहरिप्रियां प्रियकरीं वेदान्तविद्याप्रदां
नित्यं मोक्षहिताय योगवपुषा चैतन्यरूपां भजे॥ 3॥

नानारत्नसमूहनिर्मितगृहे पूज्यां सूरैर्बालिकां
वन्दे नन्दनकानने मनसिजे सिद्धान्तबीजानने।
अर्थं देहि निरर्थकाय पुरुषे हित्वा कुमारीं कलाम्
सत्यं पातु कुमारिके त्रिविधमूर्त्या च तेजोमयीम्॥ 4॥

वरानने सकलिकां कुलपथोल्लासैकबीजोद्वहां
मांसामोदकरालिनीं हि भजतां कामातिरिक्तप्रदाम्।
बालोऽहं वटुकेश्वरस्य चरणाम्भोजाश्रितोऽहं सदा
हित्वा बालकुमारिके शिरसि शुक्लाम्भोरुहेशं भजे॥ 5॥

सूर्याह्लादवलाकिनीं कलिमहापापादितापापहां
तेजोऽङ्गां भुवि सूर्यगां भयहरां तेजोमयीं बालिकाम्।
वन्दे हृत्कमले सदा रविदले वालेन्द्रविद्यां सतीं
साक्षात् सिद्धिकरीं कुमारि विमलेऽन्वासाद्य रूपेश्वरीम्॥ 6॥

नित्यं श्रीकुलकामिनीं कुलवतीं कोलामुमामम्बिकां
नानायोगनिवासिनीं सुरमणीं नित्यां तपस्यान्विताम्।
वेदान्तार्थविशेषदेशवसना भाषाविशेषस्थितां
वन्दे पर्वतराजराजतनयां कालप्रियो त्वामहम्॥ 7॥

कौमारीं कुलकामिनीं रिपुगणक्षोभाग्निसन्दोहिनीं
रक्ताभानयनां शुभां परममार्गमुक्तिसंज्ञाप्रदाम्।
भार्या भगवतीं मतिं भुवनमामोदपंचाननां
पंचास्यप्रियकामिनीं भयहरां सर्पादिहारां भजे॥ 8॥

चन्द्रास्यां चरणद्वयाम्बुजमहाशोभाविनोदीं नदीं
मोहादिक्षयकारिणीं वरकरां श्रीकुब्जिकां सुन्दरीम्।
ये नित्यं परिपूजयन्ति सहसा राजेन्द्रचूडामणिं
सम्पादं धनमायुषो जनयतो व्याप्येश्वरत्वं जगु:॥ 9॥

योगीशं भुवनेश्वरं प्रियकरं श्रीकालसन्दर्भया
शोभासागरगामिनं हरभवं वांछाफलोद्दीपनम्।
लोकानामघनाशनाय शिवया श्रीसंज्ञया विद्यया
धर्मप्राणसदैवतां प्रणमतां कल्पद्रुमं भावये॥ 10॥

विद्यां तामपराजितां मदनभावामोदमत्ताननां
हृत्पद्मस्थितपादुकां कुलकलां कात्यायनीं भैरवीम्।
ये ये पुण्यधियो भजन्ति परमानन्दाब्धिमध्ये मुदा
सर्वाच्छापिततेजसा भयकरीं मोक्षाय संकीर्तये॥ 11॥

रुद्राणीं प्रणमामि पद्मवदनां कोट्यर्कतेजोमयीं
नानालंकृतभूषणां कुलभुजामानन्दसन्दायिनीम्।
श्री मायाकमलान्वितां हृदिगतां सन्तानबीजक्रियां
आनन्दैकनिकेतनां हृदि भजे साक्षादलब्धामहम्॥ 12॥

नमामि वरभैरवीं क्षितितलाद्यकालानलां
मृणालसुकुमारारुणां भुवनदोषसंशोधिनीम्।
जगद्भयहरां हरां हरति या च योगेश्वरी
महापदसहस्रकम् सकलभोगदान्तामहम्॥ 13॥

साम्राज्यं प्रददाति याचितवती विद्या महालक्षणा
साक्षादष्टसमृद्धिदातरि महालक्ष्मी: कुलक्षोभहा।
स्वाधिष्ठानसुपंकजे विवसितां विष्णोरनन्तप्रिये
वन्दे राजपदप्रदां शुभकरीं कौलेश्वरीं कौलिकीम्॥ 14॥

पीठानामधिपाधिपाम् असुवहां विद्यां शुभां नायिकां
सर्वालंकरणान्वितां त्रिजगतां क्षोभापहां वारुणीं।



वन्दे पीठगनायिकां त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां
सर्वेषां हितकारिणीं जयवतामानन्दरूपेश्वरीम्॥ 15॥

क्षेत्रज्ञां मदविह्वलां कुलवतीं सिद्धिप्रियां प्रेयसीम्।
शम्भोः श्री वटुकेश्वरस्य महतामानन्दसंचारिणीम्॥ 16॥

साक्षादात्मपरोद्गमां कमलमध्यसम्भाविनीं
शिरो दशशते दलेऽमृतमहाब्धिधाराधराम्।
निजमनः क्षोभापहां शाकिनीम्
बाह्यार्थ प्रकटामहं रजतभां वन्दे महाभैरवीम्॥ 17॥

प्रणामफलदायिनीं सकलबाह्यवश्यां गुणां
नमामि परमम्बिकां विषयदोषसंहारिणीम्।
सम्पूर्णाविधुवन्मुखीं कमलमध्यसम्भाविनीं
शिरो दशशते दलेऽमृतमहाब्धिधाराधराम्॥ 18॥

साक्षादहं त्रिभुवनामृतपूर्णदेहां
सन्ध्यादि देवकमलां कुलपण्डितेन्द्राम्।
नत्वा भजे दशशते दलमध्यमध्ये
कौलेश्वरीं सकलदिव्यजनाश्रयां ताम्॥ 19॥

विश्वेश्वरीं स्वरकुले वरबालिके त्वां
सिद्धासने प्रतिदिनं प्रणमामि भक्त्या।
भक्तिं धनं जयपदं यदि देहि दास्यं
तस्मिन् महामधुमतीं लघुनाहताः स्यात्॥ 20॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

आद्यास्तोत्रम्

ॐ ह्रीं ब्रह्माणी ब्रह्मलोके च वैकुण्ठे सर्वमंगला।
इन्द्राणी अमरावत्यामम्बिका वरुणालये॥ 1॥

यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा।
महानन्दाग्निकोणे च वायव्यां मृग वाहिनी॥ 2॥

नैर्ऋत्यां रक्तदन्ता च ऐशान्यां शूलधारिणी।
पाताले वैष्णवीरूपा सिंहले देवमोहिनी॥ 3॥

सुरसा च मणिद्वीपे लंकायां भद्रकालिका।
रामेश्वरी सेतुबन्धे विमला पुरुषोत्तमे॥ 4॥

विरजा औड्रदेशे च कामाख्या नीलपर्वते।
कालिका बंगदेशे च अयोध्यायां महेश्वरी॥ 5॥

वाराणस्यामन्नपूर्णा गयाक्षेत्रे गयेश्वरी।
कुरुक्षेत्रे भद्रकाली व्रजे कात्यायनी परा॥ 6॥

द्वारकायां महामाया मथुरायां माहेश्वरी।
क्षुधा त्वं सर्वभूतानां वेला त्वं सागरस्य च॥ 7॥

नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्लस्यैकादशी परा।
दक्षस्य दुहिता देवी दक्षयज्ञविनाशिनी॥ 8॥

रामस्य जानकी त्वं हि रावणध्वंसकारिणी।
चण्डमुण्डवधे देवी रक्तबीजविनाशिनी॥ 9॥

निशुम्भशुम्भमथनी मधुकैटभघातिनी।
विष्णुभक्तिप्रदा दुर्गा सुखदा मोक्षदा सदा॥ 10॥

इमं आद्या स्तवं पुण्यं यः पठेत् सततं नरः।
सर्वज्वरभयं न स्यात् सर्वव्याधिविनाशनम्॥ 11॥

कोटितीर्थफलञ्चासौ लभते नात्र संशयः।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ 12॥

नारायणी शीर्षदेशे सर्वांगे सिंहवाहिनी।
शिवदूती उग्रचण्डा प्रत्यंगे परमेश्वरी॥ 13॥

विशालाक्षी महामाया कौमारी शंखिनी शिवा।
चक्रिणी जयदात्री च रणमत्ता रणप्रिया॥ 14॥

दुर्गा जयन्ती काली च भद्रकाली महोदरी।
नारसिंही च वाराही सिद्धिदात्री सुखप्रदा।
भयंकरी महारौद्री महाभयविनाशिनी॥ 15॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 1 ॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्विषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 2 ॥

अयि जगदम्बमदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणितुंगहिमालयशृंगनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 3 ॥

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशौण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितचण्डविपातितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 4 ॥

अयिरणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचारधुरीणमहाशिव दूतकृत्त प्रमथाधिपते।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 5 ॥

अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोऽधिकृतामल शूलकरे।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद मुहुर्मुखरीकृत दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 6 ॥

अयि निजहुंकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते।
शिव शिव शुम्भनिशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 7 ॥



धनुरनुषंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके
कनक पिशंगपृषत्कनिषंगरसद्भटशृंग हतावटुके।
कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्‌बहुरंग रटद्‌वटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 8॥

जय जय जप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
झणझणझिञ्झिमि झिंकृतनूपुर शिंजितमोहित भूतपते।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 9॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
सुनयनविभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 10॥

महितमहाहव वल्लभतल्लिक वल्लितरल्लित भल्लिरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
श्रुतकृतफुल्ल समुल्लसितारुणतल्लजपल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 11॥

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 12॥

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।

अलिकुलसंकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्वकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 13॥

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते
मिलितपुलिन्द मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते।
निजगणभूत महाशबरीगण रंगणसम्भृत केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 14॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चण्डरुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे ।
जितकनकाचल मौलिमदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 15॥

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 16॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सु शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 17॥

कनकलसत्कल शीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुंभ नटीपरिरम्भ सुखानुभवम्।
तवचरणं शरणं करवाणि मृडानि सदा मयि देहि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 18॥

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 19॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननि कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 20॥

श्री-दुर्गामहिम्नः स्तोत्रम्

त्वमन्तस्त्वं पश्चात् त्वमसि पुरतस्त्वं च परतः
त्वमूर्ध्वं त्वं चाधस्त्वमसि खलु लोकान्तर चरी।
त्वमिन्द्रस्त्वं चन्द्रस्त्वमसि निगमानामुपनिषत्
तवाहं दासोऽस्मि त्रिपुरहररामे कुरु कृपाम्॥ 1 ॥

इयान् कालः सृष्टेः प्रभृति बहुकष्टेन गमितो
विना यत् त्वत्सेवां करुणरसकल्लोलिनिशिवे।
तदेतद् दौर्भाग्यं मम विषयतृष्णाख्य रिपुणा
हतः शुद्धानन्दं स्पृशिमि तव सिद्धेश्वरि पदम्॥ 2 ॥

सुधाधारावृष्टेः तव जननि दृष्टेर्विषयताम्
वयं यामो दामोदर भगिनि भाग्येन फलितम्।
इदानीं भूतानां ध्रुवमुपरि भूतः परमुदा
न वाञ्छामो मोक्षं विपिनपथि कक्षं जरदिव॥ 3 ॥

जपादौ नो सक्ता हरगृहिणि भक्ताः करुणया
भवत्या होमत्या कतिकति न भावेन गमिताः।
चिदानन्दाकारं भवजलधिपारं निजपदम्
न ते मातुर्गर्भे जननि तव गर्भे यदि गताः॥ 4 ॥

चिदेवेदं सर्वं श्रुतिरिति भवत्याः स्तुतिकथा
प्रियं भात्यस्तीति त्रिविधमपि रूपं तव शिवे।
अणुर्दीर्घं ह्रस्वं महदजरमन्तादिरहितम्
त्वमेव ब्रह्मासि त्वदपरमुदारं न गिरिजे॥ 5 ॥

त्वयाऽन्तर्यामिन्या भगवति वशिन्यादिसहिते
विधीयन्ते भावो मनसि जगतामित्युपनिषत् ।
अहं कर्तेत्यन्तर्विशतु मम बुद्धिः कथमुमे
सुबुद्धिस्त्वद्भक्तो न भवति कुबुद्धिः क्वचिदपि॥ 6 ॥

न मन्त्रं तन्त्रं वा किमपि खलु विद्मो गिरिसुते
क्व यामः किं कुर्मस्तव चरणसेवा न रचिता।
अये मातः प्रातः प्रभृति दिवसास्तावधि वयम्
कुबुद्ध्याऽहंकार्ये शिव शिव न यामो निजवयः॥ 7 ॥

इहामुष्मिन् लोके ह्यपि न विषये प्रेमकर वै
न मे वैरी कश्चिद् भगवति भवानि त्रिभुवने।
गुणानामाधारं निगमगणसारं तव पदम्
मनो वारं वारं जपति च विनोदं च भजते॥ 8॥

महामाये काये मम भवति यादृक्खलु मनो
मनस्ते संख्याने न हि भवति तादृक् कथमुमे।
त्वमेवान्तर्मातर्निगमयसि बुद्धिं त्रिजगताम्
न जाने श्रीजानेरपि न विदितस्तेऽत्र महिमा॥ 9॥

अमीषां वर्णानां क्रतुकरणसम्पूर्णवयसाम्
निकाम्यं काव्यानामुरसि समुदायं प्रकटितम्।
स्तनौ मेरू मत्वा स्थगितममृतोपाख्यमुभयम्
दयाधाराधारं मम जननि हारं तव भजे॥ 10॥

स्तनद्वन्द्वं स्कन्दद्विपमुखमुखे यत् स्नुतमुखम्
कदाचिन्मे मातर्वितरतु मुखे स्तन्यकणिकाम्।
अनेनायं धन्यो जगदुपरि मान्योऽपि भवताम्
कुपुत्रे सत्पुत्रे न हि भवति मातुर्विषमता॥ 11॥

जगन्मूलं शूलं ह्यनुभवति कूलं कथमिदम्
द्विधा कुर्वे सर्वेश्वरि मम तु गर्वेण फलितम्।
पदद्वन्द्वं द्वन्द्वंव्यतिकरहरं द्वन्द्वसुखदम्
गुणारामे रामे कलय हृदि कामेश्वरि सदा॥ 12॥

अहोरात्रं गात्रं समजनि न पात्रं मम मुदा
धनायत्तं चित्तं तृणमपि तु निश्चिन्तमभवत् ।
इदानीमानीता कथमपि भवानी हृदि मया
स्थितं मन्ये धन्ये पथि कथमधन्येऽहमुचितः॥ 13॥

निराकारामारादधि हृदयमाराधितवता
मया मायातीता सितसकलकायापहतये।
अहं कोऽहं सोऽहं मतिरिति विमोहं हतवति
कृता हन्तानन्तामुपनयति सन्तानकवति॥ 14॥

त्वदंघ्रेरुद्द्योतादरुणकिरणश्रेणिगमनात्
समुद्भूता ये ये जगति जयिनः शोणमणयः।



त एते सर्वेषां शिरसि विदुषां भान्ति भुवने
त्वदीयादन्य: को भवति जनवन्द्योऽद्य गिरिजे ॥ 15 ॥

अकार्षीत् सोऽमर्षी भुवनमपरं गाधितनय:
शशापान्यो लक्ष्मीमपिबदपरो ह्यर्णवमिति ।
सपर्यामाहात्म्यं तव जननि तादात्म्यफलदम्
कियद् वक्ष्ये यक्षेश्वरकिरणदत्तं भगवति ॥ 16 ॥

अमी देवा: सेवां विदधति यतो मञ्चकतया
शिवोऽप्यच्छच्छाया रचितरुचिरप्रच्छदतया ।
कृतार्थी कर्तुं मां परमशिव वामांकनिलया
परब्रह्मस्फूर्तिस्तव जयति मूर्ति: सकरुणा ॥ 17 ॥

समुद्धर्तुं भक्तान् प्रभवति विहर्तुं जगदिदम्
गतिं वायोर्बद्ध्वा विनिमयति रूपं च नियमात् ।
यदृच्छा यस्येच्छा न च भजन विच्छेद भयतो
नमस्ते भक्ताय ध्रुवभजनसक्ताय गिरिजे ॥ 18 ॥

उमा माया माता कमलनयना कृष्णभगिनी
भवानी दुर्गाऽम्बा मतिरमरलक्ष्मीति तरला ।
महाविद्या देवी प्रकृतिरजजायेति जपताम्
भवन्ति श्रीविद्ये तव जननि नामानि निधय: ॥ 19 ॥

दिशां पाला बाला हरहरिसरोजासनमुखाः
त्वया दुर्गे सर्वे कति कति न भक्ता अधिकृताः।
स्वयं रक्ता भक्तावहमधिकृतो नाधिमगमम्
सुखे वा दुःखे वा मम समतया यान्तु दिवसाः॥ 20॥

भवत्या भक्तानां यदि किमपि कश्चिद् विधिकृते
पुरो वा पश्चाद् वा कपटदुरितेषां पर वशः।
जनश्चेत् संन्यासादपि जपति नारायणपदम्
ततोऽप्येनं देवी नयनपथवीथीं गमयति॥ 21॥

क्रिया वा कर्त्ता वा करणमपि वा कर्म यदि वा
प्रणीयन्ते चेष्टा जगति पुरुषैर्भावकलुषैः।
समर्प्य स्वात्मानं तव तु पदयोरिन्द्रपदवीम्
इदं वा तद् विष्णोर्गणयति न भक्तोऽयमचलः॥ 22॥

स्वयं माया कार्याद्युदयकरणे कौतुकवती
शिवादीनां सर्गस्थितिविलयकर्माणि बिभृषे।
अयं भक्तो नाम्ना भगवति शुभः स्यात् तव यदा
भवान्याः भक्तानामशुभमपरं तेऽपि न कृतम्॥ 23॥

धरित्री ह्यम्भोधिस्त्वमपि दहनस्त्वं च पवनः
त्वमाकाशस्त्वं च ग्रसति पुरुषस्तेन सहितम्।
ग्रसन्ती ब्रह्माण्डं प्रकृतिरपि दासी पशुपतेः
यदासीत् संहारे जननि तव संहार महिमा॥ 24॥

स्फुरत्तारा माल्यं ग्रहनिवहनीराजनविधिः
हविर्धूमो धूपो मलयपवमानः परिमलः।
इदं ते नैवेद्यं विविधरसवेद्यं खलु सुखम्
सपर्यामर्यादा ध्रुवमियमुमे ब्रह्मनिलये॥ 25॥

नवाधारा सृष्टिः स्फुटित नवधा शब्दरचना
नवानां खेटानामुपरि नवधाऽप्यर्चितपदे।
नवानां संख्यानां प्रकृतिरगराजन्य तनये
नवद्वीपी देवी त्वमसि नवचक्रेश्वरि शिवे॥ 26॥

यदाऽकृष्याकृष्या तपति भवदम्बा क्व नु गता
बलात्कारादारादिति यमभठे नाम विधया।

तदैवैनं दीनं स्पृशति वदने प्रश्रयवती
विधूयाम्बा धूर्तं गुहमपि धयन्तं भगवती॥ 27॥

हविर्धाने गीतं श्रुतिशिरसि निर्धारितमितम्
शिवस्याधांगस्थं परम महदद्धा मम मन:।
यदाऽऽचक्षाणस्ते चरणतललाक्षारसजलै:
मुखं प्रक्षाल्यायं गणयति न लक्षाणि कृतिनाम्॥ 28॥

गुरूणां सर्वेषामयमुपरि विद्या गुरुरभूत्
मनूनां सर्वेषामयमुपरि जातो भुवमनु:।
कलानां सर्वासामियमुपरि लक्ष्मी: परकला
महिम्नां सर्वेषामयमुपरि जागर्ति महिमा॥ 29॥

यदाऽऽलापादापादितविविधविद्यापरिणति:
करे कृत्वा मोक्षं व्यवहरति लोकं प्रभुतया।
प्रणादेवाशा ये प्रभवति दुरापे च पुरुष:
तदेतन्माहात्म्यं विरलजनसात्म्यं तव शिवे॥ 30॥

याभि: शंकरकालकृत्यदहनज्वाला समुत्सारणम्
याभि: शुम्भनिशुम्भदर्पदलनं याभिर्जगन्मोहनम्।
याभिर्भैरवभीमरूपदलनं सद्य: कृतं मेऽन्वहम्
दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुरा:॥ 31॥

याभिर्दुर्गतया कुशासन पुन: स्वाराज्यदानं कृतम्
याभिर्भारतसंसदि द्रुपदजा लज्जा जवाद्रक्षिता।
याभि: कृष्णगृहीतहस्तकमलैस्त्राणं कृतं मेऽन्वहम्
दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुरा:॥ 32॥

याभिर्विष्णुकृते कृतं कुरुकुलप्रध्वंसनं संगरे
प्राद्युम्नेर्हृदि मुद्गरस्य कुसुमस्त्रग्याभिराकल्पिता।
कंसाद्याभिरपि व्यधायि वसुधा गोपालगोपायनम्
दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुरा:॥ 33॥

याभि: स्थावरजंगमं कृतमिदं याभि: सदा पालितम्
याभिर्भासितमाक्रमेण च पुनर्याभि: सदा संहृतम्।
याभिर्दु:खमहाम्भसो भवमहासिन्धोर्न के तारिता
दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुरा:॥ 34॥

श्री-भगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे जय पापविनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे॥ 1॥

जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे जय अन्धकदैत्यविशोषकरे॥ 2॥

जय महिषविमर्दिनि शूलकरे जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनते जय भास्करशक्रशिरोऽवनते॥ 3॥

जय षण्मुखसायुध-ईशनुते जय सागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे॥ 4॥

जय देवि समस्तशरीरधरे जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे।
जय व्याधिविनाशिनिमोक्षकरे जय वाञ्छितदायिनिसिद्धिवरे॥ 5॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-दुर्गापदुद्धार-स्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 1 ॥

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 2 ॥

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 3 ॥

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये-
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 4 ॥

अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतु-
र्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 5 ॥

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला-
समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्देवी निस्तारबीजं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 6 ॥

त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादी-
र्न जाता जितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिंगला त्वं सुषुम्णा च नाडी
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 7 ॥



नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥ 8॥

शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
मुनिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम्।
नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद॥ 9॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

मंगलचण्डिकास्तोत्रम्

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचण्डिके।
हारिके विपदां राशेर्हर्षमंगलकारिके॥ 1॥

हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलचण्डिके।
शुभे मंगलदक्षे च शुभमंगलचण्डिके॥ 2॥

मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले।
सतां मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥ 3॥

पूज्या मंगलवारे च मंगलाभीष्टदैवते।
पूज्ये मंगलभूपस्य मनुवंशस्य संततम्॥ 4॥

मंगलाधिष्ठातृदेवि मंगलानां च मंगले।
संसारमंगलाधारे मोक्षमंगलदायिनि॥ 5॥

सारे च मंगलाधारे पारे च सर्वकर्मणाम्।
प्रतिमंगलवारे च पूज्ये च मंगलप्रदे॥ 6॥

स्तोत्रेणानेन शम्भुश्च स्तुत्वा मंगलचण्डिकाम्।
प्रतिमंगलवारे च पूजां कृत्वा गतः शिवः॥ 7॥

देव्याश्च मंगलस्तोत्रं यः श्रृणोति समाहितः।
तन्मंगलं भवेच्छश्वन्न भवेत् तदमंगलम्॥ 8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-विन्ध्येश्वरी-स्तोत्रम्

निशुम्भशुम्भमर्दिनीं प्रचण्डमुण्डखण्डिनीम्।
वने रणे प्रकाशिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 1॥

त्रिशूलरत्नधारिणीं धराविघातहारिणीम्।
गृहे गृहे निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 2॥

दरिद्रदुःखहारिणीं सतां विभूतिकारिणीम्।
वियोगशोकहारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 3॥

लसत्सुलोललोचनां लतां सदावरप्रदाम्।
कपालशूलधारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 4॥

करे मुदा गदाधरां शिवां शिवप्रदायिनीम्।
वरावराननां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 5॥

ऋषीन्द्रजामिनप्रदां त्रिधास्यरूपधारिणीम्।
जले स्थले निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 6॥

विशिष्टसृष्टिकारिणीं विशालरूपधारिणीम्।
महोदरां विशालिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 7॥

पुरन्दरादिसेवितां मुरादिवंशखण्डिनीम्।
विशुद्धबुद्धिकारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ 8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



भुवनेश्वरी-कात्यायनी स्तुतिः

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥ 1 ॥

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतत्
आप्यायते कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये॥ 2 ॥

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥ 3 ॥

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः॥ 4 ॥

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥ 5 ॥

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 6 ॥

कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 7 ॥

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 8 ॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 9 ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 10 ॥

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भ:क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 11॥

त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 12॥

मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 13॥

शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 14॥

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 15॥

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 16॥

किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 17॥

शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 18॥

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 19॥

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 20॥

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते॥ 21॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ 22॥

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु न: सर्वभीतिभ्य: कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥ 23॥

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥ 24॥

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽन: सुतानिव॥ 25॥

असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥ 26॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥ 27॥

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥ 28॥

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥ 29॥

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥ 30॥

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥ 31॥

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥ 32॥

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥ 33॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

कात्यायनी-अष्टकम्

अवर्षिसंज्ञं पुरमस्ति लोके कात्यायनी तत्र विराजते या।
प्रसाददा या प्रतिमा प्रदीया सा क्षत्रपुर्यां जयतीह गेया॥ 1॥

त्वमस्य भिन्नैव विभासि तस्यास्तेजस्विनी दीपजदीपकल्पा।
कात्यायनी स्वाश्रितदु:खहर्त्री पवित्रगात्री मतिमानदात्री॥ 2॥

ब्रह्मोरु-बेतालक-सिंहदाढो-सुभैरवैरग्निगणाभिधेन।
संसेव्यमाना गणपत्यभिख्या युजा च देविस्वगणैरिहासि॥ 3॥

गोत्रेषु जातेर्जमदग्नि-भारद्वाजाऽत्रि-सत्काश्यप-कौशिकानाम्।
कौण्डिन्यवत्सान्वयगैश्च विप्रैर्निजैर्निषेव्ये वरदे नमस्ते॥ 4॥

भजामि गोक्षीरकृताभिषेके रक्ताम्बरे रक्तसुचन्दनाक्ते।
त्वां बिल्वपत्रीशुभदामशोभे भक्ष्यप्रिये हृत्प्रियदीपमाले॥ 5॥

खड्गं च शंखं महिषासुरीयं पुच्छं त्रिशूलं महिषासुरास्ये।
प्रवेशितं देवि करैर्दधाने रक्षानिशं मां महिषासुरघ्ने॥ 6॥

स्वाग्रस्थबाणेश्वरनामलिंगं सुरत्नकं रुक्ममयं किरीटम्।
शीर्षे दधाने जय हे शरण्ये विद्युत्प्रभे मां जयिनं कुरुष्व॥ 7॥

नेत्रावती-दक्षिणपार्श्वसंस्थे विद्याधरैर्नागगणैश्च सेव्ये।
दयाधने प्रापय शं सदाऽस्मान् मातर्यशोदे शुभदे शुभाक्षि॥ 8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीदुर्गाजी की आरती

जगजननी जय जय, माँ! जगजननी जय जय ।
भयहारिणि भवतारिणि भवभामिनि जय जय ॥

तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ॥

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ॥

अविकारी अघहारी अकल कलाधारी ।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी ॥

तू विधि-वधू, रमा तू, उमा महामाया ।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया ॥

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा ।
तू वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ॥

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ॥

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ॥

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा ।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा ॥
तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ॥

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे ॥

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी ।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी ॥

हम अति दीन दुखी मा, विपत-जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ॥

निज स्वभाववश जननी, दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि, चरण-शरण दीजै ॥

दुर्गा कवच



कुब्जिका-तन्त्रोक्तं श्री दुर्गाकवचम्

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात्॥ 1॥

अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामन्त्रं च यो जपेत्।
स नाप्नोति फलं तस्य परे च नरकं व्रजेत्॥ 2॥

उमादेवी शिरः पातु ललाटं शूलधारिणी।
चक्षुषी खेचरी पातु कर्णौ चत्वरवासिनी॥ 3॥

सुगन्धा नासिके पातु वदनं सर्वधारिणी।
जिह्वां च चण्डिका देवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा॥ 4॥

अशोकवासिनी चेतो द्वौ बाहू वज्रधारिणी।
हृदयं ललिता देवी उदरं सिंहवाहिनी॥ 5॥

कटिं भगवती देवी द्वावूरू विन्ध्यवासिनी।
महाबला च जंघे द्वे पादौ भूतलवासिनी॥ 6॥

एवं स्थिताऽसि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके।
रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ 7॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



देवीरहस्य-तन्त्रोक्तं श्री दुर्गाकवचेश्वरम्

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्।
दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम॥ 1॥

मुखं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला।
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी॥ 2॥

लवणं पातु मे चौष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी।
भेकी बीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठांकवासिनी।
ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी॥ 4॥

ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी।
ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी॥ 5॥

सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा॥ 6॥

श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वौ हिमाचलनिवासिनी।
ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिहारिणी॥ 7॥

ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीभगमालिनी।
ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता॥ 9॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः पायादूरू मम मनोन्मना।
ॐ जुं सः सौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता॥ 10॥

ॐ ऐं क्लीं मे पातु जंघे मेरुपर्वतवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी॥ 11॥

ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ मां वैष्णवी तथा॥ 12॥

दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽपराजिता॥ 13॥

उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शाम्भवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा॥ 14॥

प्रभाते त्रिपुरा पातु मध्याह्ने मां महेश्वरी।
सायं सरस्वती पातु निशीथे छिन्नमस्तका॥ 15॥

निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका।
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका॥ 16॥

वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना।
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना॥ 17॥

रोगान्मां राजमातंगी भूताद् भूतेशवल्लभा।
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका॥ 18॥

भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा।
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा॥ 19॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



ब्रह्मवैवर्त-पुराणोक्तं श्री दुर्गाकवचम्

ॐ ह्रीं दुर्गतिनाशिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम्।
ह्रीं मे पातु कपालं च ऐं ह्रीं श्रीं पातु लोचने॥ 1॥

पातु मे कर्णयुग्मं च दुं दुर्गायै नमः सदा।
ऐं ह्रीं श्रीं इति नासां मे सदा मां पातु सर्वतः॥ 2॥

दुर्गे दुर्गे रक्षणीति स्वाहा चास्य सदाऽवतु।
श्रीं ह्रीं क्लीं पातु दंतालीं पातु ह्रीमोष्ठयुग्मकम्॥ 3॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं पातु कण्ठं च दुर्गे रक्षतु गण्डकम्।
स्कन्धं दुर्गविनाशिन्यै स्वाहा पातु निरन्तरम्॥ 4॥

वक्षो विपद्विनाशिन्यै स्वाहा मे पातु सर्वतः।
दुर्गे दुर्गे रक्ष पार्श्वौ स्वाहा नाभिं सदाऽवतु॥ 5॥

दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष पृष्ठं मे पातु सर्वतः।
ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा च हस्तौ पादौ सदाऽवतु॥ 6॥

श्रीं ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च सर्वांगं मे सदाऽवतु।
प्राच्यां पातु महामाया चाग्नेय्यां पातु कालिका॥ 7॥

दक्षिणे दक्षकन्या च नैर्ऋत्यां शिवसुन्दरी।
पश्चिमे पार्वती पातु वाराही वारुणे सदा॥ 8॥

कुबेरमाता कौबेर्यामीशान्यामीश्वरी सदा।
ऊर्ध्वं नारायणी पातु ह्यम्बिकाऽधः सदाऽवतु॥ 9॥

ज्ञानं ज्ञानप्रदा पातु स्वप्ना स्वप्ने सदाऽवतु॥ 10॥

इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम्।
ब्रह्माण्डविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥ 11॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



ब्रह्मवैवर्त-पुराणोक्तं सिद्धदुर्गाकवचम्

ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यन्तः स्वाहान्तो मे शिरोऽवतु।
मन्त्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपादपः॥ 1॥

विचारो नास्ति वेदे च ग्रहणेऽस्य मनोर्मुने।
मन्त्रग्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेन्नरः॥ 2॥

मम वक्त्रं सदा पातु ॐ दुर्गायै नमोऽन्तकः।
ॐ दुर्गे च इति कण्ठं मन्त्रः पातु सदा मम॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोऽयं स्कन्धं पातु निरन्तरम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीमिति पृष्ठं पातु मे सर्वतः सदा॥ 4॥

ह्रीं मे वक्षस्थलं पातु हस्तं श्रीमिति सन्ततम्।
ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वांगं स्वप्ने जागरणे सदा॥ 5॥

प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चण्डिका।
दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी॥ 6॥

वारुण्यां पातु वाराही वायव्यां सर्वमंगला।
उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया॥ 7॥

जले स्थले चान्तरिक्षे पातु मां जगदम्बिका।
इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम्॥ 8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीजगद्धात्री दुर्गाकवचम्

ओंकारो मे शिरः पातु ह्रींकारः पातु भालकं।
दुं पातु वदनं दुर्गा ङे युक्ता पातु चक्षुषी॥ 1॥

नासिका मे नमः पातु कर्णाविष्टाक्षरी सदा।
प्रणवं मे गलं पातु केशान् श्रीबीजमन्ततः॥ 2॥

लज्जा दन्तान् समारक्षेज्जिह्वां दुर्गा सदाऽवतु।
यै नमः पातु वक्त्रान्तं तालुं दुंकाररूपिणी॥ 3॥

एकाक्षरी महाविद्या वक्षो रक्षतु सर्वदा।
कूर्चाद्या विविधा विद्या बाहू मे परिरक्षतु॥ 4॥

ॐ दुर्गे पातु जंघे द्वे दुर्गा रक्षतु जानुनी।
द्वावुरू पातु युगलं रक्षिणि स्वाहाऽन्विता॥ 5॥

जयदुर्गा सदा पातु गुल्फे द्वे चण्डिकाऽवतु।
कटिं जया पातु सदा नाभिं मे विजयाऽपातु॥ 6॥

उदरं पातु मे कीर्तिः पृष्ठं प्रीतिः सदाऽवतु।
प्रभा पादांगुलीः पायात् श्रद्धा स्कन्धौ सदाऽवतु॥ 7॥

मेधा करांगुलीः सर्वा नखरान् श्रुतिमेव च।
शंखो गुल्फं तु पायान्मे चक्रं लिंगं सदाऽवतु॥ 8॥

सर्वांगं मे सदा पातु शंखो रक्षतु सर्वतः।
दुर्गा मां पातु सर्वत्र जयदुर्गा च दारकान्॥ 9॥

यद् यदंग महेशानि वर्जितं कवचेषु च।
तत् सर्वं रक्ष देवि पतिपुत्रान्विता सती॥ 10॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



चण्डी कवचम्

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥ 1॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥ 2॥

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ 3॥

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥ 4॥

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥ 5॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥ 6॥

न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥ 7॥

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥ 8॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ 9॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥ 10॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥ 11॥

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥ 12॥

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥ 13॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥ 14॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥ 15॥
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥ 16॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥ 17॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥ 18॥
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥ 19॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ 20॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥ 21॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥ 22॥
शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥ 23॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥ 24॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥ 25॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥ 26॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥ 27॥



हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥ 28 ॥

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मन: शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥ 29 ॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥ 30 ॥

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जंघे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी॥ 31 ॥

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादांगुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी॥ 32 ॥

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥ 33॥

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥ 34॥

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥ 35॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥ 36॥

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना॥ 37॥

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥ 38॥

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी॥ 39॥

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥ 40॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥ 41॥

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥ 42॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥ 43॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥ 44॥

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्॥ 45॥

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥ 46॥

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥ 47॥

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जंगमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्॥ 48॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः॥ 49॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥ 50॥

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः॥ 51॥

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्॥ 52॥

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥ 53॥

यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥ 54॥

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥ 55॥

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥ 56॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



महिष-मर्दिनी कवचम्

क्लीं पातु मस्तके देवी, कामिनी काम-दायिनी।
मकार: पातु मां देवी, चक्षुर्युग्मे महेश्वरी॥ 1॥
हिकार: पातु वदनं, हिंगुलासुर-नायिका।
षकार: पातु मां श्वेता, जिह्वायां चापराजिता॥ 2॥
मकार: पातु मां देवी, मर्दिनी सुर-नायिका।
र्दिकार: पातु मां देवी, सावित्री काल-नाशिनी॥ 3॥
निकार: पातु मां नित्या, हृदये बाहु-पार्श्वयो:।
नाभौ लिंगे गुदे कण्ठे, कर्णयो: पृष्ठतस्तथा।
शिखायां कवचे पादे, मुखे जंघा-युगे तथा॥ 4॥
सर्वांगे पातु मां स्वाहा, सर्व-शक्ति-समन्विता।
कामाद्या पातु मां स्वाहा, सर्वांगे मर्दिनी शिर:॥ 5॥
दशाक्षरी महा-विद्या, सर्वांगे पातु मर्दिनी।
मर्दिनी पातु सततं, मर्दिनी रक्षयेत् सदा॥ 6॥
राज-स्थाने तथा दुर्गे, सिंह-व्याघ्र-भयादिषु।
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे, नौकायां वह्नि-मध्यत:।
मर्दिनी पातु सततं, मर्दिनी रक्षयेत् सदा॥ 7॥
दुर्गा पातु सदा देवी, आद्या पातु सदा मम।
प्रभा पातु महेशानी, कनका सर्वदाऽवतु॥ 8॥
कृत्तिका पातु सततं, अभया सर्वदाऽवतु।
प्रभा पातु महा-माया, माया पातु सदा मम॥ 9॥
प्रभा पातु महेशानी, विमला पातु सर्वदा।
नन्दिनी पातु सततं, सुप्रभा सर्वदाऽवतु॥ 10॥
विजया पातु सर्वत्र, देव्यंगे नव-शक्तय:।
शक्तय: पान्तु सततं, मुद्रा: पान्तु सदा मम॥ 11॥
जया पातु सदा सूक्ष्मा, विशुद्धा पातु सर्वदा।
योगिन्य: पान्तु सततं, खेचर्य: पान्तु सर्वदा॥ 12॥
डाकिन्य: पान्तु सततं, सिद्धा: पान्तु सदा मम।
सर्वत्र सर्वदा पातु, देवी महिष-मर्दिनी॥ 13॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

त्रैलोक्यमंगल-कुमारीकवचम्

प्रणवो मे शिर: पातु माया सन्दायिका सती।
ललाटोर्ध्वं महामाया पातु मे श्रीसरस्वती॥ 1॥

कामाक्षा वटुकेशानी त्रिमूर्त्तिर्भालमेव मे।
चामुण्डा बीजरूपा च वदनं कालिका मम॥ 2॥

पातु मां सूर्यगा नित्यं तथा नेत्रद्वयं मम।
कर्णयुग्मं कामबीजं स्वरूपोमातपस्विनी॥ 3॥

रसनाग्रं तथा पातु वाग्देवी मालिनी मम।
डामरस्था कामरूपा दन्ताग्रं कुंजिका मम॥ 4॥

देवी प्रणवरूपाऽसौ पातु नित्यं शिवा मम।।
ओष्ठाधरं शक्तिबीजात्मिका स्वाहास्वरूपिणी॥ 5॥

पायान्मे कालसन्दष्टा पंचवायुस्वरूपिणी।
गलदेशं महारौद्री पातु मे चापराजिता॥ 6॥

क्षौं बीजं मे तथा कण्ठं रुद्राणी स्वाहयान्विता।
हृदयं भैरवी विद्या पातु षोडश सुस्वरा॥ 7॥

द्वौ बाहू पातु सर्वत्र महालक्ष्मी: प्रधानिका।
सर्वमन्त्रस्वरूपं मे चोदरं पीठनायिका॥ 8॥

पार्श्वयुग्मं तथा पातु कुमारी वाग्भवात्मिका।
कैशोरी कटिदेशं मे मायाबीजस्वरूपिणी॥ 9॥

जंघायुग्मं जयन्ती मे योगिनी कुल्लुकायुता।
सर्वांगमम्बिकादेवी पातु मन्त्रार्थगामिनी॥ 10॥

केशाग्रं कमलादेवी नासाग्रं विन्ध्यवासिनी।
चिबुकं चण्डिका देवी कुमारी पातु मे सदा॥ 11॥

हृदयं ललिता देवी पृष्ठं पर्वतवासिनी।
त्रिशक्ति: षोडशी देवी लिंग गुह्यं सदावतु॥ 12॥

श्मशाने चाम्बिका देवी गंगागर्भे च वैष्णवी।
शून्यागारे पंचमुद्रा मन्त्रयन्त्रप्रकाशिनी॥ 13॥

चतुष्पथे तथा पातु मामेव वज्रधारिणी।
शवासनगता चण्डा मुण्डमालाविभूषिता॥ 14॥

पातु माने कलिंगे च वैखरी शक्तिरूपिणी।
वने पातु महाबाला महारण्ये रणप्रिया॥ 15॥

महाजले तडागे च शुत्रुमध्ये सरस्वती।
महाकाशपथे पृथ्वी पातु मां शीतला सदा॥ 16॥

रणमध्ये राजलक्ष्मीः कुमारी कुलकामिनी।
अर्द्धनारीश्वरा पातु मम पादतलं मही॥ 17॥

नवलक्षमहाविद्या कुमारी रूपधारिणी।
कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला॥ 18॥

पातु मां वरदा वाणी वटुकेश्वरकामिनी।
इति ते कथितं नाथ कवचं परमाद्भुतम्॥ 19॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीमन्महाकुण्डलिनी कवचम्

ईं किं श्रीं कामकमला पातु कैलासरक्षिणी।
मम श्रीं ईं बीजरूपा पातु काली शिरस्थलम्॥ 1॥

उरस्थलाब्जं सकलं तमोल्का पातु कालिका।
ऊडुम्बन्यर्करमणी उष्ट्रोग्रा कुलमातृका॥ 2॥

कृतापेक्षा कृतिमती कुंकारी किंलिपिस्थिता।
कुंदीर्घस्वरा क्लृप्ता च कें कैलासकरार्चिका॥ 3॥

कैशोरी कैं करी कैं कें बीजाख्या नेत्रयुग्मकम्।
कोमा मतंगयजिता कौशल्यादि कुमारिका॥ 4॥

पातु मे कर्णयुग्मन्तु क्रौं क्रौं जीवकरालिनी।
गण्डयुग्मं सदा पातु कुण्डली अंकवासिनी॥ 5॥

अर्ककोटिशताभासा अक्षराक्षरमालिनी।
आशुतोषकरी हस्ता कुलदेवी निरंजना॥ 6॥

पातु मे कुलपुष्पाढ्या पृष्ठदेशं सुकृत्तमा।
कुमारी कामनापूर्णा पार्श्वदेशं सदावतु॥ 7॥

देवी कामाख्यका देवी पातु प्रत्यंगिरा कटिम्।
कटिस्थदेवता पातु लिंगमूलं सदा मम॥ 8॥

गुह्यदेशं काकिनी मे लिंगाधः कुलसिंहिका।
कुलनागेश्वरी पातु नितम्बदेशमुत्तमम्॥ 9॥

कंकालमालिनी देवी मे पातु चारुमूलकम्।
जंघायुग्मं सदा पातु कीर्तिः चक्रापहारिणी॥ 10॥

पादयुग्मं पाकसंस्था पाकशासनरक्षिका।
कुलालचक्रभ्रमरा पातु पादांगुलीर्मम॥ 11॥

नखाग्राणि दशविधा तथा हस्तद्वयस्य च।
विंशरूपा कालनाक्षा सर्वदा परिरक्षतु॥ 12॥

कुलच्छत्राधाररूपा कुलमण्डलगोपिता।
कुलकुण्डलिनी माता कुलपण्डितमण्डिता॥ 13॥

काकाननी काकतुण्डी काकायुः प्रखरार्कजा।
काकज्वरा काकजिह्वा काकाजिह्वा सनस्थिता॥ 14॥

कपिध्वजा कपिक्रोशा कपिबाला हिकस्वरा।
कालकांची विंशतिस्था सदा विंशनखाग्रहम्॥ 15॥

पातु देवी कालरूपा कलिकालफलालया।
वाते वा पर्वते वापि शून्यागारे चतुष्पथे॥ 16॥

कुलेन्द्रसमयाचारा कुलाचारजनप्रिया।
कुलपर्वतसंस्था च कुलकैलासवासिनी॥ 17॥

महादावानले पातु कुमार्गे कुत्सितग्रहे।
राज्ञोऽप्रिये राजवश्ये महाशत्रुविनाशने॥ 18॥

कलिकालमहालक्ष्मीः क्रियालक्ष्मीः कुलाम्बरा।
कलीन्द्रकीलिता कीला कीलालस्वर्गवासिनी॥ 19॥

दशदिक्षु सदा पातु इन्द्रादिदशलोकपा।
नवच्छिन्ने सदा पातु सूर्यादिकनवग्रहा॥ 20॥

पातु मां कुलमांसाढ्या कुलपद्मनिवासिनी।
कुलद्रव्यप्रिया मध्या षोडशी भुवनेश्वरी॥ 21॥

विद्यावादे विवादे च मत्तकाले महाभये।
दुर्भिक्षादिभये चैव व्याधिसंकरपीडिते॥ 22॥

कालीकुल्ला कपाली च कामाख्या कामचारिणी।
सदा मां कुलसंसर्गे पातु कौले सुसंगता॥ 23॥

सर्वत्र सर्वदेशे च कुलरूपा सदावतु।
इत्येतत् कथितं नाथ मातुः प्रसादहेतुना॥ 24॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

दुर्गा सहस्त्रनाम



कुलार्णव-तन्त्रोक्तं दकारादि श्रीदुर्गासहस्रनामस्तोत्रम्

दुं दुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाचलनिवासिनी। दुर्गमार्गानुसंचारा दुर्गमार्गनिवासिनी ॥
दुर्गमार्गप्रविष्टा च दुर्गमार्गप्रवेशिनी। दुर्गमार्गकृतावासा दुर्गमार्गजयप्रिया ॥
दुर्गमार्गगृहीतार्चा दुर्गमार्गस्थितात्मिका। दुर्गमार्गस्तुतिपरा दुर्गमार्गस्मृतिपरा ॥
दुर्गमार्गसदास्थाली दुर्गमार्गरतिप्रिया। दुर्गमार्गस्थलस्थाना दुर्गमार्गविलासिनी ॥
दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रा दुर्गमार्गप्रवर्तिनी। दुर्गासुरनिहन्त्री च दुर्गासुरनिषूदिनी ॥
दुर्गासुरहरा दूती दुर्गासुरविनाशिनी। दुर्गासुरवधोन्मत्ता दुर्गासुरवधोत्सुका ॥
दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता। दुर्गासुरवधप्रेप्सुर्दुर्गासुरमखान्तकृत् ॥
दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी। दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्रावणी सदा ॥
दुर्गविक्षोभणकरी दुर्गशीर्षनिकृन्तिनी। दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यनिकृन्तिनी ॥
दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी। दुर्गदैत्यहरत्रात्री दुर्गदैत्यासृगुन्मदा ॥ 10 ॥

दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता। दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गयुद्धविशारदा ॥
दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्धविमर्दिनी। दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धाट्टहासिनी ॥
दुर्गयुद्धमहामत्ता दुर्गयुद्धानुसारिणी। दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेशनिषेविणी ॥
दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी। दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनप्रिया ॥
दुर्गमस्थानसंस्थाना दुर्गमध्यानुसाधना। दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी ॥
दुर्गमागमसंधाना दुर्गमागमसंस्तुता। दुर्गमागमदुर्ज्ञेया दुर्गमश्रुतिसम्मता ॥
दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता। दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा ॥
दुर्गमश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुतिमानिता। दुर्गमाचारसंतुष्टा दुर्गमाचारतोषिता ॥
दुर्गमाचारनिर्वृत्ता दुर्गमाचारपूजिता। दुर्गमाचारकलिता दुर्गमस्थानदायिनी ॥
दुर्गमप्रेमनिरता दुर्गमद्रविणप्रदा। दुर्गमाम्बुजमध्यस्था दुर्गमाम्बुजवासिनी ॥ 20 ॥

दुर्गनाडीमार्गगतिर्दुर्गनाडीप्रचारिणी। दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता ॥
दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा। दुर्गनाडीरतरता दुर्गनाडीशसंस्तुता ॥
दुर्गनाडीश्वररता दुर्गनाडीशचुम्बिता। दुर्गनाडीशक्रोडस्था दुर्गनाड्युत्थितोत्सुका ॥
दुर्गनाड्यारोहणा च दुर्गनाडीनिषेविता। दरिस्थाना दरिस्थानवासिनी दनुजान्तकृत् ॥
दरीकृततपस्या च दरीकृतहरार्चना। दरीजापितदिष्टा च दरीकृतरतिक्रिया ॥
दरीकृतहरार्हा च दरीक्रीडितपुत्रिका। दरीसंदर्शनरता दरीरोपितवृश्चिका ॥
दरीगुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा। दनुजान्तकरी दीना दनुसंतानदारिणी ॥
दनुजध्वंसिनी दूना दनुजेन्द्रविनाशिनी। दानवध्वंसिनी देवी दानवानां भयंकरी ॥

दानवी दानवाराध्या दानवेन्द्रवरप्रदा। दानवेन्द्रनिहन्त्री च दानवद्वेषिणी सती ॥
दानवारिप्रेमरता दानवारिप्रपूजिता। दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा ॥ 30॥

दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया। दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा ॥
दानवारिस्तुतिरता दानवारिस्मृतिप्रिया। दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी ॥
दानवारिधृतप्रेमा दु:खशोकविमोचिनी। दु:खहन्त्री दु:खदात्री दु:खनिर्मूलकारिणी ॥
दु:खनिर्मूलनकरी दु:खदार्यरिनाशिनी। दु:खहरा दु:खनाशा दु:खग्रामा दुरासदा ॥
दु:खहीना दु:खधारा द्रविणाचारदायिनी। द्रविणोत्सर्गसंतुष्टा द्रविणत्यागतोषिका ॥
द्रविणस्पर्शसंतुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा। द्रविणस्पर्शहर्षाढ्या द्रविणस्पर्शतुष्टिदा ॥
द्रविणस्पर्शनकरी द्रविणस्पर्शनातुरा। द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसाधिका ॥
द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शपुत्रिका। द्रविणस्पर्शरक्षिणी द्रविणस्तोमदायिनी ॥
द्रविणकर्षणकरी द्रविणौघविसर्जिनी। द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणाचलवासिनी ॥
दीनमाता दीनबन्धुर्दीनविघ्नविनाशिनी। दीनसेव्या दीनसिद्धा दीनसाध्या दिगम्बरी ॥ 40॥

दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी। दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी ॥
दीनमानवचेत:स्था दीनमानवहर्षदा। दीनदैन्यविघातेच्छुर्दीनद्रविणदायिनी ॥
दीनसाधनसंतुष्टा दीनदर्शनदायिनी। दीनपुत्रादिदात्री च दीनसम्पद्विधायिनी ॥
दत्तात्रेयध्यानरता दत्तात्रेयप्रपूजिता। दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धा दत्तात्रेयविभाविता ॥
दत्तात्रेयकृतार्हा च दत्तात्रेयप्रसाधिता। दत्तात्रेयहर्षदात्री दत्तात्रेयसुखप्रदा ॥
दत्तात्रेयस्तुता चैव दत्तात्रेयनुता सदा। दत्तात्रेयप्रेमरता दत्तात्रेयानुमानिता ॥
दत्तात्रेयसमुद्गीता दत्तात्रेयकुटुम्बिनी। दत्तात्रेयप्राणतुल्या दत्तात्रेयशरीरिणी ॥
दत्तात्रेयकृतानन्दा दत्तात्रेयांशसम्भवा। दत्तात्रेयविभूतिस्था दत्तात्रेयानुसारिणी ॥
दत्तात्रेयगीतिरता दत्तात्रेयधनप्रदा। दत्तात्रेयदु:खहरा दत्तात्रेयवरप्रदा ॥
दत्तात्रेयज्ञानदात्री दत्तात्रेयभयापहा। देवकन्या देवमान्या देवदु:खविनाशिनी ॥ 50॥

देवसिद्धा देवपूज्या देवेज्या देववन्दिता। देवमान्या देवधन्या देवविघ्नविनाशिनी ॥
देवरम्या देवरता देवकौतुकतत्परा। देवक्रीडा देवव्रीडा देववैरिविनाशिनी ॥
देवकामा देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी। देवदेव-प्रिया देवी देवदानव-वन्दिता ॥
देवदेव-रतानन्दा देवदेव-वरोत्सुका। देवदेव-प्रेमरता देवदेव-प्रियंवदा ॥
देवदेव-प्राणतुल्या देवदेव-नितम्बिनी। देवदेव-हृतमना देवदेव-सुखावहा ॥
देवदेव-क्रोडरता देवदेव-सुखप्रदा। देवदेव-महानन्दा देवदेव-प्रचुम्बिता ॥
देवदेवोपभुक्ता च देवदेवानुसेविता। देवदेव-गतप्राणा देवदेव-गतात्मिका ॥
देवदेव-हर्षदात्री देवदेव-सुखप्रदा। देवदेव-महानन्दा देवदेव-विलासिनी ॥

देवदेव-धर्मपत्नी देवदेव-मनोगता। देवदेववधूर्देवी देवदेवार्चन-प्रिया ॥
देवदेवांगनिलया देवदेवांगशायिनी। देवदेवांगसुखिनी देवदेवांगवासिनी ॥ 60॥

देवदेवांगभूषा च देवदेवांगभूषणा। देवदेवप्रियकरी देवदेवाप्रियान्तकृत् ॥
देवदेवप्रियप्राणा देवदेवप्रियात्मिका। देवदेवार्चकप्राणा देवदेवार्चकप्रिया ॥
देवदेवार्चकोत्साहा देवदेवार्चकाश्रया। देवदेवार्चका-विघ्ना देवदेव-प्रसूरपि ॥
देवदेवस्य जननी देवदेव-विधायिनी। देवदेवस्य रमणी देवदेव-हृदाश्रया ॥
देवदेवेष्ट-देवी च देवतापस-पालिनी। देवता-भावसंतुष्टा देवता-भावतोषिता ॥
देवता-भाववरदा देवता-भावसिद्धिदा। देवता-भावसंसिद्धा देवता-भावसम्भवा ॥
देवता-भावसुखिनी देवता-भाववन्दिता। देवता-भाव-सुप्रीता देवता-भावहर्षदा ॥
देवता-विघ्नहन्त्री च देवता-द्विष्टनाशिनी। देवता-पूजितपदा देवता-प्रेमतोषिता ॥
देवतागार-निलया देवता-सौख्यदायिनी। देवता-निजभावा च देवता-हृतमानसा ॥
देवता-कृतपादार्चा देवता-हृतभक्तिका। देवतागर्वमध्यस्था देवतादेवतातनुः ॥70॥

दुं दुर्गायै नमो नाम्नी दुं फण्मन्त्रस्वरूपिणी। दूं नमो मन्त्ररूपा च दूं नमो मूर्तिकात्मिका ॥
दूरदर्शि-प्रियादुष्टा दुष्टभूत-निषेविता। दूरदर्शि-प्रेमरता दूरदर्शि-प्रियंवदा ॥
दूरदर्शि-सिद्धि-दात्री दूरदर्शि-प्रतोषिता। दूरदर्शि-कण्ठसंस्था दूरदर्शि-प्रहर्षिता ॥
दूरदर्शि-गृहीतार्चा दूरदर्शि-प्रतर्षिता। दूरदर्शि-प्राणतुल्या दूरदर्शि-सुखप्रदा ॥
दूरदर्शि-भ्रान्तिहरा दूरदर्शि-हृदास्पदा। दूरदर्श्यरि-विद्भावा दीर्घदर्शि-प्रमोदिनी ॥
दीर्घदर्शि-प्राणतुल्या दूरदर्शि-वरप्रदा। दीर्घदर्शि-हर्षदात्री दीर्घदर्शि-प्रहर्षिता ॥
दीर्घदर्शि-महानन्दा दीर्घदर्शि-गृहालया। दीर्घदर्शि-गृहीतार्चा दीर्घदर्शि-हृतार्हणा ॥
दया दानवती दात्री दयालुर्दीनवत्सला। दयार्द्रा च दयाशीला दयाढ्या च दयात्मिका ॥
दयाम्बुधिर्दयासारा दयासागर-पारगा। दयासिन्धुर्दयाभारा दयावत्करुणा-करी ॥
दयावद्वत्सला देवी दया दानरता सदा। दयावद्भक्ति-सुखिनी दयावत्परितोषिता ॥80॥

दयावत्स्नेहनिरता दयावत्प्रतिपादिका। दयावत्प्राणकर्त्री च दयावन्मुक्तिदायिनी ॥
दयावद्भाव-संतुष्टा दयावत्परितोषिता। दयावत्तारणपरा दयावत्सिद्धि-दायिनी ॥
दयावत्पुत्रवद्भावा दयावत्पुत्र-रूपिणी। दयावद्देह-निलया दयाबन्धुर्दयाश्रया ॥
दयालुवात्सल्यकरी दयालु-सिद्धिदायिनी। दयालु-शरणाशक्ता दयालु-देहमन्दिरा ॥
दयालु-भक्तिभावस्था दयालु-प्राणरूपिणी। दयालु-सुखदा दम्भा दयालु-प्रेमवर्षिणी ॥
दयालुवशगा दीर्घा दीर्घाङ्गी दीर्घलोचना। दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घबाहुलतात्मिका ॥
दीर्घकेशी दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दारुणा। दारुणासुर-हन्त्री च दारुणासुर-दारिणी ॥
दारुणाहवकर्त्री च दारुणाहव-हर्षिता। दारुणाहव-होमाढ्या दारुणाचल-नाशिनी ॥

दारुणाचार-निरता दारुणोत्सव-हर्षिता। दारुणोद्यत-रूपा च दारुणारि-निवारिणी ।।
दारुणेक्षणसंयुक्ता दोश्चतुष्कविराजिता। दशदोष्का दशभुजा दशबाहुविराजिता ।।90।।

दशास्त्र-धारिणी देवी दशदिक्ख्यात-विक्रमा। दशरथार्चितपदा दाशरथिप्रिया सदा ।।
दाशरथि-प्रेमतुष्टा दाशरथि-रतिप्रिया। दाशरथि-प्रियकरी दाशरथि-प्रियंवदा ।।
दाशरथीष्ट-संदात्री दाशरथीष्ट-देवता। दाशरथि-द्वेषिनाशा दाशरथ्यानुकूल्यदा ।।
दाशरथि-प्रियतमा दाशरथि-प्रपूजिता। दशाननारि-सम्पूज्या दशाननारि-देवता ।।
दशाननारि-प्रमदा दशाननारि-जन्मभूः। दशाननारि-रतिदा दशाननारि-सेविता ।।
दशाननारि-सुखदा दशाननारि-वैरिहृत्। दशाननारीष्टदेवी दशग्रीवारि-वन्दिता ।।
दशग्रीवारि-जननी दशग्रीवारि-भाविनी। दशग्रीवारि-सहिता दशग्रीव-सभाजिता ।।
दशग्रीवारि-रमणी दशग्रीव-वधूरपि। दशग्रीव-नाशकर्त्री दशग्रीव-वरप्रदा ।।
दशग्रीव-पुरस्था च दशग्रीव-वधोत्सुका। दशग्रीव-प्रीतिदात्री दशग्रीव-विनाशिनी ।।
दशग्रीवाहवकरी दशग्रीवानपायिनी। दशग्रीव-प्रिया वन्द्या दशग्रीव-हृता तथा ।।100।।

दशग्रीवाहितकरी दशग्रीवेश्वर-प्रिया। दशग्रीवेश्वर-प्राणा दशग्रीव-वरप्रदा ।।
दशग्रीवेश्वर-रता दशवर्षीय-कन्यका। दशवर्षीय-बाला च दशवर्षीय-वासिनी ।।
दशपापहरा दम्या दशहस्त-विभूषिता। दशशस्त्र-लसद्दोष्का दशदिक्पाल-वन्दिता ।।
दशावताररूपा च दशावतार-रूपिणी। दशविद्या-भिन्नदेवी दशप्राण-स्वरूपिणी ।।
दशविद्या-स्वरूपा च दशविद्यामयी तथा। दृक्स्वरूपा दृक्प्रदात्री दृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी ।।
दिगन्तरा दिगन्तःस्था दिगम्बर-विलासिनी। दिगम्बर-समाजस्था दिगम्बर-प्रपूजिता ।।
दिगम्बर-सहचरी दिगम्बर-कृतास्पदा। दिगम्बर-हृताचित्ता दिगम्बर-कथाप्रिया ।।
दिगम्बर-गुणरता दिगम्बर-स्वरूपिणी। दिगम्बर-शिरोधार्या दिगम्बर-हृताश्रया ।।
दिगम्बर-प्रेमरता दिगम्बर-रतातुरा। दिगम्बरी-स्वरूपा च दिगम्बरी-गणार्चिता ।।
दिगम्बरीगणप्राणा दिगम्बरीगणप्रिया। दिगम्बरीगणाराध्या दिगम्बरगणेश्वरा ।।110।।

दिगम्बरगणस्पर्शमदिरापानविह्वला । दिगम्बरी-कोटिवृता दिगम्बरी-गणावृता ।।
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा। दुरन्त-दानवद्वेष्ट्री दुरन्त-दनुजान्तकृत् ।।
दुरन्तपापहन्त्री च दस्रनिस्तारकारिणी। दस्रमानससंस्थाना दस्रज्ञानविवर्धिनी ।।
दस्रसम्भोग-जननी दस्रसम्भोग-दायिनी। दस्रसम्भोग-भवना दस्रविद्या-विधायिनी ।।
दस्रोद्वेगहरा दस्रजननी दस्रसुन्दरी। दस्रभक्ति-विधाज्ञाना दस्रद्विष्ट-विनाशिनी ।।
दस्रापकारदमनी दस्रसिद्धिविधायिनी। दस्रताराराधिका च दस्रमातृप्रपूजिता ।।
दस्रदैन्यहरा चैव दस्रतातनिषेविता। दस्रपितृशतज्योतिर्दस्रकौशलदायिनी ।।
दशशीर्षारि-सहिता दशशीर्षारि-कामिनी। दशशीर्षपुरी देवी दशशीर्ष-सभाजिता ।।

दशशीर्षारि-सुप्रीता दशशीर्ष-वधूप्रिया। दशशीर्ष-शिरश्छेत्री दशशीर्ष-नितम्बिनी ॥
दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्षहरात्मिका। दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षारिवन्दिता ॥120॥

दशशीर्षारि-सुखदा दशशीर्ष-कपालिनी। दशशीर्ष-ज्ञानदात्री दशशीर्षारि-गेहिनी ॥
दशशीर्ष-वधोपात्त-श्रीरामचन्द्ररूपता। दशशीर्ष-राष्ट्रदेवी दशशीर्षारि-सारिणी ॥
दशशीर्ष-भ्रातृतुष्टा दशशीर्ष-वधूप्रिया। दशशीर्ष-वधूप्राणा दशशीर्ष-वधूरता ॥
दैत्यगुरुरता साध्वी दैत्यगुरु-प्रपूजिता। दैत्यगुरूपदेष्ट्री च दैत्यगुरु-निषेविता ॥
दैत्यगुरु-मतप्राणा दैत्यगुरु-तापनाशिनी। दुरन्त-दुःखशमनी दुरन्त-दमनी तमी ॥
दुरन्त-शोकशमनी दुरन्त-रोगनाशिनी। दुरन्त-वैरिदमनी दुरन्त-दैत्यनाशिनी ॥
दुरन्त-कलुषघ्नी च दुष्कृतिस्तोमनाशिनी। दुराशया दुराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी ॥
दर्शनीया च दृश्या चाऽदृश्या च दृष्टिगोचरा। दूतीयागप्रिया दूती दूतीयागकरप्रिया ॥
दूतीयाग-करानन्दा दूतीयाग-सुखप्रदा। दूतीयाग-करायाता दूतीयाग-प्रमोदिनी ॥
दुर्वासःपूजिता चैव दुर्वासोमुनिभाविता। दुर्वासोऽर्चितपादा च दुर्वासोमौनभाविता ॥130॥

दुर्वासोमुनिवन्द्या च दुर्वासोमुनिदेवता। दुर्वासोमुनिमाता च दुर्वासोमुनिसिद्धिदा ॥
दुर्वासोमुनिभावस्था दुर्वासोमुनिसेविता। दुर्वासोमुनिचित्तस्था दुर्वासोमुनिमण्डिता ॥
दुर्वासोमुनि-संचारा दुर्वासोहृदयंगमा। दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा ॥
दुर्वासस्तापसाराध्या दुर्वासस्तापसाश्रया। दुर्वासस्तापसरता दुर्वासस्तापसेश्वरी ॥
दुर्वासोमुनिकन्या च दुर्वासोऽद्भुतसिद्धिदा। दररात्री दरहरा दरयुक्ता दरापहा ॥
दरघ्नी दरहन्त्री च दरयुक्ता दराश्रया। दरस्मेरा दरापांगी दयादात्री दयाश्रया ॥
दस्रपूज्या दस्रमाता दस्रदेवी दरोन्मदा ॥
दस्रसिद्धा दस्रसंस्था दस्रतापविमोचिनी। दस्रक्षोभहरा नित्या दस्रलोकगतात्मिका ॥
दैत्यगुर्वंगनावन्द्या दैत्यगुर्वंगना-प्रिया। दैत्यगुर्वंगना-सिद्धा दैत्यगुर्वंगनोत्सुका ॥
दैत्यगुरु-प्रियतमा देवगुरु-निषेविता। देवगुरु-प्रसूरूपा देवगुरु-कृतार्हणा ॥
देवगुरु-प्रेमयुता देवगुर्वनुमानिता। देवगुरु-प्रभावज्ञा देवगुरु-सुखप्रदा ॥140॥

देवगुरु-ज्ञानदात्री देवगुरु-प्रमोदिनी। दैत्यस्त्रीगण-सम्पूज्या दैत्यस्त्रीगण-पूजिता ॥
दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहारिणी। देवस्त्रीगणपूज्या च देवस्त्रीगणवन्दिता ॥
देवस्त्रीगणचित्तस्था देवस्त्रीगणभूषिता। देवस्त्रीगणसंसिद्धा देवस्त्रीगणतोषिता ॥
देवस्त्रीगणहस्तस्थ-चारुचामरवीजिता। देवस्त्रीगणहस्तस्थ-चारुगन्धविलेपिता ॥
देवांगनाधृतादर्श-दृष्ट्यर्थमुखचन्द्रमा। देवांगनोत्सृष्टनाग-वल्लीदलकृतोत्सुका ॥
देवस्त्रीगणहस्तस्थ-दीपमालाविलोकना। देवस्त्रीगणहस्तस्थ-धूपघ्राणविनोदिनी ॥
देवनारीकरगत-वासकासवपायिनी। देवनारीकंकतिका-कृतकेशनिमार्जना ॥
देवनारीसेव्यगात्रा देवनारीकृतोत्सुका। देवनारीविरचित-पुष्पमालाविराजिता ॥



देवनारीविचित्रांगी देवस्त्रीदत्तभोजना। देवस्त्रीगणगीता च देवस्त्रीगीतसोत्सुका ॥
देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यदर्शिनी। देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादपदाम्बुजा ॥150॥

देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारुतल्पनिषेदुषी। देवनारीचारुकराकलितांघ्र्यादिदेहिका ॥
देवनारीकरव्यग्रतालवृन्दमरुत्सुका। देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसा ॥
देवकोटिस्तुतिनुता देवकोटिकृतार्हणा। देवकोटिगीतगुणा देवकोटिकृतस्तुतिः ॥
दन्तदष्ट्योद्वेगफला देवकोलाहलाकुला। द्वेषरागपरित्यक्ता द्वेषरागविवर्जिता ॥
दामपूज्या दामभूषा दामोदरविलासिनी। दामोदरप्रेमरता दामोदरभगिन्यपि ॥
दामोदरप्रसूर्दामोदरपत्नी-पतिव्रता। दामोदराऽभिन्न-देहा दामोदर-रतिप्रिया ॥
दामोदराऽभिन्नतनुर्दामोदर-कृतास्पदा। दामोदर-कृतप्राणा दामोदर-गतात्मिका ॥
दामोदरकौतुकाढ्या दामोदरकलाकला। दामोदरालिंगितांगी दामोदरकुतूहला ॥
दामोदरकृताह्लादा दामोदरसुचुम्बिता। दामोदरसुताकृष्टा दामोदरसुखप्रदा ॥
दामोदरसहाढ्या च दामोदरसहायिनी। दामोदरगुणज्ञा च दामोदरवरप्रदा ॥160॥

दामोदरानुकूला च दामोदरनितम्बिनी। दामोदरबलक्रीडाकुशला दर्शनप्रिया ॥
दामोदरजलक्रीडात्यक्तस्वजनसौहृदा। दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिनी तथा ॥
दामोदरभ्रातृका च दामोदरपरायणा। दामोदरधरा दामोदरवैरविनाशिनी ॥
दामोदरोपजाया च दामोदरनिमन्त्रिता। दामोदरपराभूता दामोदरपराजिता ॥
दामोदरसमाक्रान्ता दामोदरहताशुभा। दामोदरोत्सवरता दामोदरोत्सवावहा ॥
दामोदरस्तन्यदात्री दामोदरगवेषिता। दमयन्तीसिद्धिदात्री दमयन्तीप्रसाधिता ॥

दमयन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्वरूपिणी। दमयन्तीकृतार्चा च दमनर्षिविभाविता ॥
दमनर्षिप्राणतुल्या दमनर्षिस्वरूपिणी। दमनर्षिस्वरूपा च दम्भपूरितविग्रहा ॥
दम्भहन्त्री दम्भधात्री दम्भलोकविमोहिनी। दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परिमर्दिनी ॥
दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसंतानदारिणी। दत्तमोक्षा दत्तधना दत्तारोग्या च दाम्भिका ॥ 170 ॥

दत्तपुत्रा दत्तदारा दत्तहारा च दारिका। दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना ॥
दत्तमतिर्दत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका। दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्र्यनाशिनी ॥
दत्तसौधावनीवासा दत्तस्वर्गा च दासदा। दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासीशतप्रदा ॥
दाररूपा दारवासा दारवासिहृदास्पदा। दारवासिजनाराध्या दारवासिजनप्रिया ॥
दारवासिविनिर्नीता दारवासिसमर्चिता। दारवास्याहृतप्राणा दारवास्यरिनाशिनी ॥
दारवासिविघ्नहरा दारवासिविमुक्तिदा। दाराग्निरूपिणी दारा दारकार्यरिनाशिनी ॥
दम्पती दम्पतीष्टा च दम्पतीप्राणरूपिका। दम्पतीस्नेहनिरता दाम्पत्यसाधनप्रिया ॥
दाम्पत्यसुखसेना च दाम्पत्यसुखदायिनी। दम्पत्याचारनिरता दम्पत्यामोदमोदिता ॥
दमपत्यामोदसुखिनी दाम्पत्याह्लादकारिणी। दम्पतीष्टपादपद्मा दाम्पत्यप्रेमरूपिणी ॥
दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी। दाडिमीफलसंतुष्टा दाडिमीफलमानसा ॥ 180 ॥

दाडिमीवृक्षसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी। दाडिमीवृक्षरूपा च दाडिमीवनवासिनी ॥
दाडिमीफलसाम्योरुपयोधरसमन्विता। दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी ॥
दक्षकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः। दक्षगोत्रा दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी ॥
दक्षयज्ञनाशकर्त्री दक्षयज्ञान्तकारिणी। दक्षप्रसूतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी ॥
दक्षात्मजा दक्षसूनूर्दक्षजा दक्षजातिका। दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा ॥
दक्षजनिर्दक्षयागध्वंसिनी दक्षकन्यका। दक्षिणाचारनिरता दक्षिणाचारतुष्टिदा ॥
दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता। दक्षिणाचारसुखिनी दक्षिणाचारसाधिता ॥
दक्षिणाचारमोक्षाप्तिर्दक्षिणाचारवन्दिता। दक्षिणाचारशरणा दक्षिणाचारहर्षिता ॥
द्वारपालप्रिया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता। द्वाररूपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी ॥
द्वारकरी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता। दोषाकरा दोषहरा दोषराशिविनाशिनी ॥190 ॥

दोषाकरविभूषाढ्या दोषाकरकपालिनी। दोषाकरसहस्राभा दोषाकरसमानना ॥
दोषाकरमुखी दिव्या दोषाकरकराग्रजा। दोषाकरसमज्योतिर्दोषाकरसुशीतला ॥
दोषाकरश्रेणी दोषसदृशापांगवीक्षणा। दोषाकरेष्टदेवी च दोषाकरनिषेविता ॥
दोषाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका। दोषाकरोल्लसद्भाला दोषाकरसुहर्षिणी ॥
दोषाकरशिरोभूषा दोषाकरवधूप्रिया। दोषाकरवधूप्राणा दोषाकरवधूमता ॥
दोषाकरवधूप्रीता दोषाकरवधूरपि। दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी ॥

दोषाजापमहानन्दा दोषाजापपरायणा। दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी ॥
दोषापूजकवात्सल्यकारिणी जगदम्बिका। दोषापूजकवैरिघ्नी दोषापूजकविघ्नहृत् ॥
दोषापूजकसंतुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा। दमप्रसूनसम्पूज्या दमपुष्पप्रिया सदा ॥
दुर्योधनप्रपूज्या च दु:शासनसमर्चिता। दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता दयानिधि: ॥ 200 ॥

दण्डपाणिसमाराध्या दण्डपाणिप्रपूजिता। दण्डपाणिगृहासक्ता दण्डपाणिप्रियंवदा ॥
दण्डपाणिप्रियतमा दण्डपाणिमनोहरा। दण्डपाणिहृतप्राणा दण्डपाणिसुसिद्धिदा ॥
दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहर्षिता। दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता ॥
दण्डपाणिप्राप्तचर्या दण्डपाण्युन्मुखी सदा। दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्मुखी ॥
दण्डहस्ता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत्। दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डचित्तकृतास्पदा ॥
दण्डिविद्या दण्डिमाता दण्डिखण्डकनाशिनी। दण्डिप्रिया दण्डिपूज्या दण्डिसंतोषदायिनी ॥
दस्युपूज्या दस्युरता दस्युद्रविणदायिनी। दस्युवर्गकृतार्हा च दस्युवर्गविनाशिनी ॥
दस्युनिर्णाशिनी दस्युकुलनिर्णाशिनी तथा। दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा ॥
दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राविणी तथा। दुष्टवर्गनिग्रहार्हा दूषकप्राणनाशिनी ॥
दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी। दूषकद्वेषणकरी दाहिका दहनात्मिका ॥ 210 ॥

दारुकारिनिहन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता। दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवन्दिता ॥
दर्भहस्ता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता। दर्भमयी दर्भतनुर्दर्भसर्वस्वरूपिणी ॥
दर्भकर्माचाररता दर्भहस्तकृतार्हणा। दर्भानुकूला दाम्भर्या दर्वीपात्रानुदामिनी ॥
दमघोषप्रपूज्या च दमघोषवरप्रदा। दमघोषसमाराध्या दावाग्निरूपिणी तथा ॥
दावाग्निरूपा दावाग्निनिर्णाशितमहाबला। दन्तदंष्ट्रासुरकला दन्तचर्चितहस्तिका ॥
दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तनिर्णाशितासुरा। दधिपूज्या दधिप्रीता दधीचिवरदायिनी ॥
दधीचीष्टदेवता च दधीचिमोक्षदायिनी। दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी ॥
दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता। दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी ॥
दधीचिकुलसम्भूषा दधीचिभुक्तिमुक्तिदा। दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता ॥
दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता। दधीचिसुखदात्री च दधीचिदैन्यहारिणी ॥ 220 ॥

दधीचिदु:खहन्त्री च दधीचिकुलसुन्दरी। दधीचिकुलसम्भूता दधीचिकुलपालिनी ॥
दधीचिदानगम्या च दधीचिदानमानिनी। दधीचिदानसंतुष्टा दधीचिदानदेवता ॥
दधीचिजयसम्प्रीता दधीचिजपमानसा। दधीचिजपपूजाढ्या दधीचिजपमालिका ॥
दधीचिजपसंतुष्टा दधीचिजपतोषिणी। दधीचितपसाराध्या दधीचिशुभदायिनी ॥
दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलसमद्युति: ॥225॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

दकारादि श्रीदुर्गासहस्त्रनामावलिः

ॐ दुं दुर्गायै नमः
ॐ दुर्गादेव्यै नमः
ॐ दुर्गतिहरायै नमः
ॐ दुर्गाचल-निवासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमार्गानुसंचारायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-निवासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-प्रविष्टायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-प्रवेशिन्यै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-कृतावासायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-जयप्रियायै नमः 10
ॐ दुर्गमार्ग-गृहीतार्चायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-स्थितात्मिकायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-स्तुतिपरायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-स्मृतिपरायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-सदास्थाल्यै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-रतिप्रियायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-स्थलस्थानायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-विलासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-त्यक्तवस्त्रायै नमः
ॐ दुर्गमार्ग-प्रवर्तिन्यै नमः 20
ॐ दुर्गासुर-निहन्त्र्यै नमः
ॐ दुर्गासुर-निषूदिन्यै नमः
ॐ दुर्गासुर-हरायै नमः
ॐ दुर्गासुर-विनाशिन्यै नमः
ॐ दुर्गासुर-वधोन्मत्तायै नमः
ॐ दुर्गासुर-वधोत्सुकायै नमः
ॐ दुर्गासुर-वधोत्साहायै नमः
ॐ दुर्गासुर-वधोद्यतायै नमः
ॐ दुर्गासुर-वधप्रेप्सवे नमः
ॐ दुर्गासुर-मखान्तकृते नमः 30
ॐ दुर्गासुर-ध्वंसतोषायै नमः
ॐ दुर्ग-दानवदारिण्यै नमः
ॐ दुर्ग-विद्रावणकर्यै नमः
ॐ दुर्ग-विद्रावण्यै नमः
ॐ दुर्ग-विक्षोभणकर्यै नमः
ॐ दुर्ग-शीर्षनिकृन्तिन्यै नमः
ॐ दुर्ग-विध्वंसनकर्यै नमः
ॐ दुर्गदैत्य-निकृन्तिन्यै नमः
ॐ दुर्गदैत्य-प्राणहरायै नमः
ॐ दुर्गदैत्यान्त-कारिण्यै नमः 40
ॐ दुर्गदैत्य-हरत्रात्र्यै नमः
ॐ दुर्गदैत्यासृगुन्मदायै नमः
ॐ दुर्गदैत्याशन-कर्यै नमः
ॐ दुर्ग-चर्माम्बरावृतायै नमः
ॐ दुर्ग-युद्धोत्सवकर्यै नमः
ॐ दुर्ग-युद्ध-विशारदायै नमः
ॐ दुर्ग-युद्धासवरतायै नमः
ॐ दुर्ग-युद्ध-विमर्दिन्यै नमः
ॐ दुर्ग-युद्ध-हास्यरतायै नमः
ॐ दुर्ग-युद्धाट्टहासिन्यै नमः 50
ॐ दुर्ग-युद्ध-महामत्तायै नमः
ॐ दुर्ग-युद्धानुसारिण्यै नमः
ॐ दुर्ग-युद्धोत्सवोत्साहायै नमः
ॐ दुर्गदेश-निषेविण्यै नमः
ॐ दुर्गदेश-वासरतायै नमः
ॐ दुर्गदेश-विलासिन्यै नमः
ॐ दुर्गदेशार्चन-रतायै नमः
ॐ दुर्गदेश-जनप्रियायै नमः
ॐ दुर्गमस्थान-संस्थानायै नमः
ॐ दुर्गमध्यानुसाधनायै नमः 60

ॐ दुर्गमध्यानायै नमः
ॐ दुर्गमागम-संधानायै नमः
ॐ दुर्गमागम-संस्तुतायै नमः
ॐ दुर्गमागम-दुर्ज्ञेयायै नमः
ॐ दुर्गमश्रुति-सम्मतायै नमः
ॐ दुर्गमश्रुति-मान्यायै नमः
ॐ दुर्गमश्रुति-पूजितायै नमः
ॐ दुर्गमश्रुति-सुप्रीतायै नमः
ॐ दुर्गमश्रुति-हर्षदायै नमः
ॐ दुर्गमश्रुति-संस्थानायै नमः 70
ॐ दुर्गमश्रुति-मानितायै नमः
ॐ दुर्गमाचार-संतुष्टायै नमः
ॐ दुर्गमाचार-तोषितायै नमः
ॐ दुर्गमाचार-निर्वृत्तायै नमः
ॐ दुर्गमाचार-पूजितायै नमः
ॐ दुर्गमाचार-कलितायै नमः
ॐ दुर्गम-स्थानदायिन्यै नमः
ॐ दुर्गम-प्रेमनिरतायै नमः
ॐ दुर्गम-द्रविणप्रदायै नमः
ॐ दुर्गमाम्बुज-मध्यस्थायै नमः 80
ॐ दुर्गमाम्बुज-वासिन्यै नमः
ॐ दुर्गनाडी-मार्गगत्यै नमः
ॐ दुर्गनाडी-प्रचारिण्यै नमः
ॐ दुर्गनाडी-पद्मरतायै नमः
ॐ दुर्गनाड्यम्बुज-स्थितायै नमः
ॐ दुर्गनाडी-गतायातायै नमः
ॐ दुर्गनाडी-कृतास्पदायै नमः
ॐ दुर्गनाडी-रतरतायै नमः
ॐ दुर्गनाडीश-संस्तुतायै नमः
ॐ दुर्गनाडीश्वर-रतायै नमः 90
ॐ दुर्गनाडीश-चुम्बितायै नमः
ॐ दुर्गनाडीश-क्रोडस्थायै नमः
ॐ दुर्गनाड्युत्थितोत्सुकायै नमः
ॐ दुर्गनाड्यारोहणायै नमः
ॐ दुर्गनाडी-निषेवितायै नमः
ॐ दरिस्थानायै नमः
ॐ दरिस्थान-वासिन्यै नमः
ॐ दनुजान्तकृते नमः
ॐ दरी-कृत-तपस्यायै नमः
ॐ दरी-कृत-हरार्चनायै नमः 100
ॐ दरी-जापित-दिष्टायै नमः
ॐ दरी-कृत-रतिक्रियायै नमः
ॐ दरी-कृत-हरार्हायै नमः
ॐ दरी-क्रीडित-पुत्रिकायै नमः
ॐ दरी-संदर्शन-रतायै नमः
ॐ दरी-रोपित-वृश्चिकायै नमः
ॐ दरी-गुप्ति-कौतुकाढ्यायै नमः
ॐ दरी-भ्रमण-तत्परायै नमः
ॐ दूनायै नमः
ॐ दनुजान्तकर्यै नमः 110
ॐ दनु-संतान-दारिण्यै नमः
ॐ दनुज-ध्वंसिन्यै नमः
ॐ दनुजेन्द्र-विनाशिन्यै नमः
ॐ दानव-ध्वंसिन्यै नमः
ॐ दानवानां भयंकर्यै नमः
ॐ दानव्यै नमः
ॐ दानवाराध्यायै नमः
ॐ दानवेन्द्र-वरप्रदायै नमः
ॐ दानवेन्द्र-निहन्त्र्यै नमः
ॐ दानवद्वेषिण्यै सत्यै नमः 120
ॐ दानवारि-प्रेमरतायै नमः
ॐ दानवारि-प्रपूजितायै नमः
ॐ दानवारि-कृतार्चायै नमः
ॐ दानवारि-विभूतिदायै नमः

ॐ दानवारि-महानन्दायै नमः
ॐ दानवारि-रतिप्रियायै नमः
ॐ दानवारि-दानरतायै नमः
ॐ दानवारि-कृतास्पदायै नमः
ॐ दानवारि-स्तुतिरतायै नमः
ॐ दानवारि-स्मृतिप्रियायै नमः 130
ॐ दानवार्याहार-रतायै नमः
ॐ दानवारि-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ दानवारि-धृतप्रेमायै नमः
ॐ दुःख-शोक-विमोचिन्यै नमः
ॐ दुःख-हन्त्र्यै नमः
ॐ दुःख-दात्र्यै नमः
ॐ दुःख-निर्मूल-कारिण्यै नमः
ॐ दुःख-निर्मूलनकर्यै नमः
ॐ दुःख-दार्यरि-नाशिन्यै नमः
ॐ दुःख-हरायै नमः 140
ॐ दुःख-नाशायै नमः
ॐ दुःख-ग्रामायै नमः
ॐ दुःख-हीनायै नमः
ॐ दुःख-धारायै नमः
ॐ दुरासदायै नमः
ॐ द्रविणाचार-दायिन्यै नमः
ॐ द्रविणोत्सर्ग-संतुष्टायै नमः
ॐ द्रविण-त्याग-तोषिकायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्श-संतुष्टायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्श-मानदायै नमः 150
ॐ द्रविण-स्पर्श-हर्षाढ्यायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्श-तुष्टिदायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्शनकर्यै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्शनातुरायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्शनोत्साहायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्शसाधिकायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्शनमतायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्श-पुत्रिकायै नमः
ॐ द्रविण-स्पर्श-रक्षिण्यै नमः
ॐ द्रविण-स्तोम-दायिन्यै नमः 160
ॐ द्रविण-कर्षणकर्यै नमः
ॐ द्रविणौघ-विसर्जिन्यै नमः
ॐ द्रविणाचल-दानाढ्यायै नमः
ॐ द्रविणाचल-वासिन्यै नमः
ॐ दिगम्बर्यै नमः
ॐ दीनायै नमः
ॐ दीन-मात्रे नमः
ॐ दीन-बन्धवे नमः
ॐ दीन-विघ्नविनाशिन्यै नमः
ॐ दीन-सेव्यायै नमः 170
ॐ दीन-सिद्धायै नमः
ॐ दीन-साध्यायै नमः
ॐ दीन-गेह-कृतानन्दायै नमः
ॐ दीन-गेह-विलासिन्यै नमः
ॐ दीन-भाव-प्रेमरतायै नमः
ॐ दीन-भाव-विनोदिन्यै नमः
ॐ दीन-मानव-चेतःस्थायै नमः
ॐ दीन-मानव-हर्षदायै नमः
ॐ दीन-दैन्य-विघातेच्छवे नमः
ॐ दीन-द्रविण-दायिन्यै नमः 180
ॐ दीन-साधन-संतुष्टायै नमः
ॐ दीन-दर्शन-दायिन्यै नमः
ॐ दीन-पुत्रादि-दात्र्यै नमः
ॐ दीन-सम्पद्विधायिन्यै नमः
ॐ दीन-वत्सलायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-ध्यानरतायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-प्रपूजितायै नमः
ॐ दत्तात्रेयर्षि-संसिद्धायै नमः



ॐ दत्तात्रेय-विभावितायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-कृतार्हायै नमः 190
ॐ दत्तात्रेय-प्रसाधितायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-हर्षदात्र्यै नमः
ॐ दत्तात्रेय-सुखप्रदायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-स्तुतायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-नुतायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-प्रेमरतायै नमः
ॐ दत्तात्रेयानुमानितायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-समुद्गीतायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-कुटुम्बिन्यै नमः
ॐ दत्तात्रेय-प्राणतुल्यायै नमः 200
ॐ दत्तात्रेय-शरीरिण्यै नमः
ॐ दत्तात्रेय-कृतानन्दायै नमः
ॐ दत्तात्रेयांश-सम्भवायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-विभूतिस्थायै नमः
ॐ दत्तात्रेयानुसारिण्यै नमः
ॐ दत्तात्रेय-गीतिरतायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-धनप्रदायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-दुःखहरायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-वरप्रदायै नमः
ॐ दत्तात्रेय-ज्ञानदात्र्यै नमः 210
ॐ दत्तात्रेय-भयापहायै नमः
ॐ देव-कन्यायै नमः
ॐ देव-मान्यायै नमः
ॐ देव-दुःख-विनाशिन्यै नमः
ॐ देव-सिद्धायै नमः
ॐ देव-पूज्यायै नमः
ॐ देवेज्यायै नमः
ॐ देव-वन्दितायै नमः
ॐ देव-धन्यायै नमः
ॐ देव-विघ्नविनाशिन्यै नमः 220
ॐ देव-रम्यायै नमः
ॐ देव-रतायै नमः
ॐ देव-कौतुक-तत्परायै नमः
ॐ देव-क्रीडायै नमः
ॐ देव-व्रीडायै नमः
ॐ देव-वैरिविनाशिन्यै नमः
ॐ देव-कामायै नमः
ॐ देव-रामायै नमः
ॐ देव-द्विष्ट-विनाशिन्यै नमः
ॐ देव-दानव-वन्दितायै नमः 230

ॐ देव-देव-प्रियायै नम:
ॐ देव-देव-रतानन्दायै नम:
ॐ देव-देव-वरोत्सुकायै नम:
ॐ देव-देव-प्रेमरतायै नम:
ॐ देव-देव-प्रियंवदायै नम:
ॐ देव-देव-प्राणतुल्यायै नम:
ॐ देव-देव-नितम्बिन्यै नम:
ॐ देव-देव-हृतमनसे नम:
ॐ देव-देव-सुखावहायै नम:
ॐ देव-देव-क्रोडरतायै नम: 240
ॐ देव-देव-प्रचुम्बितायै नम:
ॐ देव-देवोपभुक्तायै नम:
ॐ देव-देवानुसेवितायै नम:
ॐ देव-देव-गतप्राणायै नम:
ॐ देव-देव-गतात्मिकायै नम:
ॐ देव-देव-हर्षदात्र्यै नम:
ॐ देव-देव-सुखप्रदायै नम:
ॐ देव-देव-महानन्दायै नम:
ॐ देव-देव-विलासिन्यै नम:
ॐ देव-देव-धर्मपत्न्यै नम: 250
ॐ देव-देव-मनोगतायै नम:
ॐ देव-देव-वध्वै नम:
ॐ देव-देवार्चन-प्रियायै नम:
ॐ देव-देवांग-निलयायै नम:
ॐ देव-देवांग-शायिन्यै नम:
ॐ देव-देवांग-सुखिन्यै नम:
ॐ देव-देवांग-वासिन्यै नम:
ॐ देव-देवांग-भूषायै नम:
ॐ देव-देवांग-भूषणायै नम:
ॐ देव-देव-प्रियकर्यै नम: 260
ॐ देव-देवाप्रियान्तकृते नम:
ॐ देव-देव-प्रियप्राणायै नम:
ॐ देव-देव-प्रियात्मिकायै नम:
ॐ देव-देवार्चक-प्राणायै नम:
ॐ देव-देवार्चक-प्रियायै नम:
ॐ देव-देवार्चकोत्साहायै नम:
ॐ देव-देवार्चकाश्रयायै नम:
ॐ देव-देवार्चकाविघ्नायै नम:
ॐ देव-देव-प्रस्वै नम:
ॐ देव-देवस्य जनन्यै नम: 270
ॐ देव-देव-विधायिन्यै नम:
ॐ देव-देवस्य रमण्यै नम:
ॐ देव-देव-हृदाश्रयायै नम:
ॐ देव-देवेष्टदेव्यै नम:
ॐ देव-तापस-पालिन्यै नम:
ॐ देवता-भाव-संतुष्टायै नम:
ॐ देवता-भाव-तोषितायै नम:
ॐ देवता-भाव-वरदायै नम:
ॐ देवता-भाव-सिद्धिदायै नम:
ॐ देवता-भाव-संसिद्धायै नम: 280
ॐ देवता-भाव-सम्भवायै नम:
ॐ देवता-भाव-सुखिन्यै नम:
ॐ देवता-भाव-वन्दितायै नम:
ॐ देवता-भाव-सुप्रीतायै नम:
ॐ देवता-भाव-हर्षदायै नम:
ॐ देवता-विघ्न-हन्त्र्यै नम:
ॐ देवता-द्विष्ट-नाशिन्यै नम:
ॐ देवता-पूजित-पदायै नम:
ॐ देवता-प्रेमतोषितायै नम:
ॐ देवतागार-निलयायै नम: 290
ॐ देवता-सौख्य-दायिन्यै नम:
ॐ देवता-निजभावायै नम:
ॐ देवता-हृतमानसायै नम:
ॐ देवता-कृतपादार्चायै नम:

ॐ देवता-हृतभक्तिकायै नमः
ॐ देवता-गर्वमध्यस्थायै नमः
ॐ देवतायै नमः
ॐ देवता-तनवे नमः
ॐ दुं दुर्गायै नमो नाम्न्यै नमः
ॐ दुं फण् मन्त्रस्वरूपिण्यै नमः 300
ॐ दूं नमो मन्त्ररूपायै नमः
ॐ दूं नमो मूर्तिकात्मिकायै नमः
ॐ दूरदर्शि-प्रियादुष्टायै नमः
ॐ दूरदर्शि-प्रेमरतायै नमः
ॐ दूरदर्शि-प्रियंवदायै नमः
ॐ दूरदर्शि-सिद्धिदात्र्यै नमः
ॐ दूरदर्शि-प्रतोषितायै नमः
ॐ दूरदर्शि-कण्ठसंस्थायै नमः
ॐ दूरदर्शि-प्रहर्षितायै नमः
ॐ दूरदर्शि-गृहीतार्चायै नमः 310
ॐ दूरदर्शि-प्रतर्षितायै नमः
ॐ दूरदर्शि-प्राणतुल्यायै नमः
ॐ दूरदर्शि-सुखप्रदायै नमः
ॐ दूरदर्शि-भ्रान्तिहरायै नमः
ॐ दूरदर्शि-हृदास्पदायै नमः
ॐ दूरदर्श्यरि-विद्भावायै नमः
ॐ दूरदर्शि-वरप्रदायै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-प्रमोदिन्यै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-प्राणतुल्यायै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-हर्षदात्र्यै नमः 320
ॐ दीर्घदर्शि-प्रहर्षितायै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-महानन्दायै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-गृहालयायै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-गृहीतार्चायै नमः
ॐ दीर्घदर्शि-हृतार्हणायै नमः
ॐ दानवत्यै नमः
ॐ दानरतायै नमः
ॐ दात्र्यै नमः
ॐ दयायै नमः
ॐ दयालवे नमः 330
ॐ दयार्द्रायै नमः
ॐ दयाशीलायै नमः
ॐ दयाढ्यायै नमः
ॐ दयात्मिकायै नमः
ॐ दयाम्बुधये नमः
ॐ दया-सारायै नमः
ॐ दया-सागरपारगायै नमः
ॐ दया-सिन्धवे नमः
ॐ दया-भारायै नमः
ॐ दयावत्करुणाकर्यै नमः 340
ॐ दयावद्वत्सलायै नमः
ॐ दयावद्भक्ति-सुखिन्यै नमः
ॐ दयावत्परितोषितायै नमः
ॐ दयावत्स्नेह-निरतायै नमः
ॐ दयावत्प्रतिपादिकायै नमः
ॐ दयावत्प्राण-कर्त्र्यै नमः
ॐ दयावन्मुक्ति-दायिन्यै नमः
ॐ दयावद्भाव-संतुष्टायै नमः
ॐ दयावत्तारण-परायै नमः
ॐ दयावत्सिद्धि-दायिन्यै नमः 350
ॐ दयावत्पुत्रवद्भावायै नमः
ॐ दयावत्पुत्ररूपिण्यै नमः
ॐ दयावद्देहनिलयायै नमः
ॐ दयाबन्धवे नमः
ॐ दयाश्रयायै नमः
ॐ दयादात्र्यै नमः
ॐ दयानिधये नमः
ॐ दयालु-वात्सल्यकर्यै नमः

ॐ दयालु-सिद्धिदायिन्यै नमः
ॐ दयालु-शरणाशक्तायै नमः 360
ॐ दयालु-देहमन्दिरायै नमः
ॐ दयालु-भक्तिभावस्थायै नमः
ॐ दयालु-प्राणरूपिण्यै नमः
ॐ दयालु-सुखदायै नमः
ॐ दयालु-प्रेमवर्षिण्यै नमः
ॐ दयालु-वशगायै नमः
ॐ दम्भायै नमः
ॐ दीर्घायै नमः
ॐ दीर्घाङ्ग्यै नमः
ॐ दीर्घ-लोचनायै नमः 370
ॐ दीर्घ-नेत्रायै नमः
ॐ दीर्घ-चक्षुषे नमः
ॐ दीर्घ-बाहु-लतात्मिकायै नमः
ॐ दीर्घ-केश्यै नमः
ॐ दीर्घ-मुख्यै नमः
ॐ दीर्घ-घोणायै नमः
ॐ दारुणायै नमः
ॐ दारुणासुर-हन्त्र्यै नमः
ॐ दारुणासुर-दारिण्यै नमः
ॐ दारुणाहव-कर्त्र्यै नमः 380
ॐ दारुणाहव-हर्षितायै नमः
ॐ दारुणाहव-होमाढ्यायै नमः
ॐ दारुणाचल-नाशिन्यै नमः
ॐ दारुणाचार-निरतायै नमः
ॐ दारुणोत्सव-हर्षितायै नमः
ॐ दारुणोद्यत-रूपायै नमः
ॐ दारुणारि-निवारिण्यै नमः
ॐ दारुणेक्षण-संयुक्तायै नमः
ॐ दोश्चतुष्क-विराजितायै नमः
ॐ दश-दोष्कायै नमः 390

ॐ दश-भुजायै नमः
ॐ दश-बाहु-विराजितायै नमः
ॐ दशास्त्र-धारिण्यै नमः
ॐ दश-दिक्ख्यात-विक्रमायै नमः
ॐ दशरथार्चित-पदायै नमः
ॐ दाशरथि-प्रियायै नमः
ॐ दाशरथि-प्रेमतुष्टायै नमः
ॐ दाशरथि-रतिप्रियायै नमः
ॐ दाशरथि-प्रियकर्यै नमः
ॐ दाशरथि-प्रियंवदायै नमः 400
ॐ दाशरथीष्ट-संदात्र्यै नमः
ॐ दाशरथीष्ट-देवतायै नमः
ॐ दाशरथि-द्वेषि-नाशायै नमः
ॐ दाशरथ्यानुकूल्य-दायै नमः
ॐ दाशरथि-प्रियतमायै नमः
ॐ दाशरथि-प्रपूजितायै नमः
ॐ दशाननारि-सम्पूज्यायै नमः
ॐ दशाननारि-देवतायै नमः
ॐ दशाननारि-प्रमदायै नमः
ॐ दशाननारि-जन्मभुवे नमः 410
ॐ दशाननारि-रतिदायै नमः
ॐ दशाननारि-सेवितायै नमः
ॐ दशाननारि-सुखदायै नमः
ॐ दशाननारि-वैरिहृते नमः
ॐ दशाननारीष्ट-देव्यै नमः
ॐ दशग्रीवारि-वन्दितायै नमः
ॐ दशग्रीवारि-जनन्यै नमः
ॐ दशग्रीवारि-भाविन्यै नमः
ॐ दशग्रीवारि-सहितायै नमः
ॐ दशग्रीवारि-रमण्यै नमः 420
ॐ दशग्रीव-सभाजितायै नमः
ॐ दशग्रीव-वध्वै नमः

ॐ दशग्रीव-नाशकर्त्र्यै नमः
ॐ दशग्रीव-पुरस्थायै नमः
ॐ दशग्रीव-वधोत्सुकायै नमः
ॐ दशग्रीव-प्रीतिदात्र्यै नमः
ॐ दशग्रीव-विनाशिन्यै नमः
ॐ दशग्रीवाहव-कर्यै नमः
ॐ दशग्रीवानपायिन्यै नमः
ॐ दशग्रीव-प्रियायै वन्द्यायै नमः 430
ॐ दशग्रीव-हृतायै नमः
ॐ दशग्रीवाहितकर्यै नमः
ॐ दशग्रीवेश्वर-प्रियायै नमः
ॐ दशग्रीवेश्वर-प्राणायै नमः
ॐ दशग्रीव-वरप्रदायै नमः
ॐ दशग्रीवेश्वर-रतायै नमः
ॐ दशवर्षीय-कन्यकायै नमः
ॐ दशवर्षीय-बालायै नमः
ॐ दशवर्षीय-वासिन्यै नमः
ॐ दश-पाप-हरायै नमः 440
ॐ दम्यायै नमः
ॐ दश-हस्त-विभूषितायै नमः
ॐ दश-शस्त्र-लसद्दोष्कायै नमः
ॐ दश-दिक्पाल-वन्दितायै नमः
ॐ दशावतार-रूपायै नमः
ॐ दशावतार-रूपिण्यै नमः
ॐ दश-विद्याभिन्न-देव्यै नमः
ॐ दश-प्राण-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ दश-विद्या-स्वरूपायै नमः
ॐ दश-विद्या-मय्यै नमः 450
ॐ दृक्स्वरूपायै नमः
ॐ दृक्प्रदात्र्यै नमः
ॐ दृग्रूपायै नमः
ॐ दृक्प्रकाशिन्यै नमः
ॐ दिगन्तरायै नमः
ॐ दिगन्तःस्थायै नमः
ॐ दिगम्बर-विलासिन्यै नमः
ॐ दिगम्बर-समाजस्थायै नमः
ॐ दिगम्बर-प्रपूजितायै नमः
ॐ दिगम्बर-सहचर्यै नमः 460
ॐ दिगम्बर-कृतास्पदायै नमः
ॐ दिगम्बर-हृताचित्तायै नमः
ॐ दिगम्बर-कथाप्रियायै नमः
ॐ दिगम्बर-गुणरतायै नमः
ॐ दिगम्बर-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ दिगम्बर-शिरोधार्यायै नमः
ॐ दिगम्बर-हृताश्रयायै नमः
ॐ दिगम्बर-प्रेमरतायै नमः
ॐ दिगम्बर-रतातुरायै नमः
ॐ दिगम्बरी-स्वरूपायै नमः 470
ॐ दिगम्बरी-गणार्चितायै नमः
ॐ दिगम्बरी-गणप्राणायै नमः
ॐ दिगम्बरी-गणप्रियायै नमः
ॐ दिगम्बरी-गणाराध्यायै नमः
ॐ दिगम्बर-गणेश्वरायै नमः
ॐ दिगम्बर-गणस्पर्श-मदिरापान-
विह्वलायै नमः
ॐ दिगम्बरी-कोटिवृतायै नमः
ॐ दिगम्बरी-गणावृतायै नमः
ॐ दुरन्तायै नमः
ॐ दुष्कृतिहरायै नमः 480
ॐ दुर्ध्येयायै नमः
ॐ दुरतिक्रमायै नमः
ॐ दुरन्त-दानव-द्वेष्ट्र्यै नमः
ॐ दुरन्त-दनुजान्त-कृते नमः
ॐ दुरन्त-पाप-हन्त्र्यै नमः

ॐ दस्र-निस्तार-कारिण्यै नमः
ॐ दस्र-मानस-संस्थानायै नमः
ॐ दस्र-ज्ञान-विवर्धिन्यै नमः
ॐ दस्र-सम्भोग-जनन्यै नमः
ॐ दस्र-सम्भोग-दायिन्यै नमः 490
ॐ दस्र-सम्भोग-भवनायै नमः
ॐ दस्र-विद्या-विधायिन्यै नमः
ॐ दस्रोद्वेग-हरायै नमः
ॐ दस्र-जनन्यै नमः
ॐ दस्र-सुन्दर्यै नमः
ॐ दस्र-भक्ति-विधाज्ञानायै नमः
ॐ दस्र-द्विष्ट-विनाशिन्यै नमः
ॐ दस्रापकार-दमन्यै नमः
ॐ दस्र-सिद्धि-विधायिन्यै नमः
ॐ दस्र-तारा-राधिकायै नमः 500
ॐ दस्र-मातृ-प्रपूजितायै नमः
ॐ दस्र-दैन्य-हरायै नमः
ॐ दस्र-तात-निषेवितायै नमः
ॐ दस्र-पितृ-शतज्योतिषे नमः
ॐ दस्र-कौशल-दायिन्यै नमः
ॐ दशशीर्षारि-सहितायै नमः
ॐ दशशीर्षारि-कामिन्यै नमः
ॐ दशशीर्ष-पुर्यै नमः
ॐ दशशीर्ष-सभाजितायै नमः
ॐ दशशीर्षारि-सुप्रीतायै नमः 510
ॐ दशशीर्ष-शिरश्छेत्र्यै नमः
ॐ दशशीर्ष-नितम्बिन्यै नमः
ॐ दशशीर्ष-हरप्राणायै नमः
ॐ दशशीर्ष-हरात्मिकायै नमः
ॐ दशशीर्ष-हराराध्यायै नमः
ॐ दशशीर्षारि-वन्दितायै नमः
ॐ दशशीर्षारि-सुखदायै नमः
ॐ दशशीर्ष-कपालिन्यै नमः
ॐ दशशीर्ष-ज्ञानदात्र्यै नमः
ॐ दशशीर्षारि-गेहिन्यै नमः 520
ॐ दशशीर्ष-वधोपात्त-श्रीरामचन्द्र-
रूपतायै नमः
ॐ दशशीर्ष-राष्ट्रदेव्यै नमः
ॐ दशशीर्षारि-सारिण्यै नमः
ॐ दशशीर्ष-भ्रातृतुष्टायै नमः
ॐ दशशीर्ष-वधू-प्रियायै नमः
ॐ दशशीर्ष-वधू-प्राणायै नमः
ॐ दशशीर्ष-वधू-रतायै नमः
ॐ दैत्यगुरु-रतायै साध्व्यै नमः
ॐ दैत्यगुरु-प्रपूजितायै नमः
ॐ दैत्यगुरूपदेष्ट्र्यै नमः 530
ॐ दैत्यगुरु-निषेवितायै नमः
ॐ दैत्यगुरु-मतप्राणायै नमः
ॐ दैत्यगुरु-तापनाशिन्यै नमः
ॐ दुरन्त-दुःखशमन्यै नमः
ॐ दुरन्त-दमन्यै तम्यै नमः
ॐ दुरन्त-शोकशमन्यै नमः
ॐ दुरन्त-रोगनाशिन्यै नमः
ॐ दुरन्त-वैरिदमन्यै नमः
ॐ दुरन्त-दैत्यनाशिन्यै नमः
ॐ दुरन्त-कलुषघ्न्यै नमः 540
ॐ दुष्कृति-स्तोमनाशिन्यै नमः
ॐ दुराशयायै नमः
ॐ दुराधारायै नमः
ॐ दुर्जयायै नमः
ॐ दुष्टकामिन्यै नमः
ॐ दर्शनीयायै नमः
ॐ दृश्यादृश्यायै नमः
ॐ दृष्टिगोचरायै नमः

ॐ दूत्यै नमः
ॐ दूतीयाग-प्रियायै नमः 550
ॐ दूतीयाग-करप्रियायै नमः
ॐ दूतीयाग-करानन्दायै नमः
ॐ दूतीयाग-सुखप्रदायै नमः
ॐ दूतीयाग-करायातायै नमः
ॐ दूतीयाग-प्रमोदिन्यै नमः
ॐ दुर्वासःपूजितायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-भावितायै नमः
ॐ दुर्वासोऽर्चित-पादायै नमः
ॐ दुर्वासोमौन-भावितायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-वन्द्यायै नमः 560
ॐ दुर्वासोमुनि-देवतायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-मात्रे नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-सिद्धिदायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-भावस्थायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-सेवितायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-चित्तस्थायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-मण्डितायै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-संचारायै नमः
ॐ दुर्वासो-हृदयंगमायै नमः
ॐ दुर्वासो-हृदयाराध्यायै नमः 570
ॐ दुर्वासो-हृत्सरोजगायै नमः
ॐ दुर्वासस्तापसाराध्यायै नमः
ॐ दुर्वासस्तापसाश्रयायै नमः
ॐ दुर्वासस्तापसरतायै नमः
ॐ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै नमः
ॐ दुर्वासोमुनि-कन्यायै नमः
ॐ दुर्वासोऽद्भुत-सिद्धिदायै नमः
ॐ दररात्र्यै नमः
ॐ दरहरायै नमः
ॐ दरयुक्तायै नमः 580
ॐ दरापहायै नमः
ॐ दरघ्न्यै नमः
ॐ दरहन्त्र्यै नमः
ॐ दराश्रयायै नमः
ॐ दरस्मेरायै नमः
ॐ दरापाङ्ग्यै नमः
ॐ दरोन्मदायै नमः
ॐ दरान्तकृते नमः
ॐ दस्त्र-पूज्यायै नमः
ॐ दस्त्र-मात्रे नमः 590
ॐ दस्त्र-देव्यै नमः
ॐ दस्त्र-सिद्धायै नमः
ॐ दस्त्र-संस्थायै नमः
ॐ दस्त्र-ताप-विमोचिन्यै नमः
ॐ दस्त्र-क्षोभहरायै नित्यायै नमः
ॐ दस्त्र-लोकगतात्मिकायै नमः
ॐ दैत्यगुर्वंगना-वन्द्यायै नमः
ॐ दैत्यगुर्वंगना-प्रियायै नमः
ॐ दैत्यगुर्वंगना-सिद्धायै नमः
ॐ दैत्यगुर्वंगनोत्सुकायै नमः 600
ॐ दैत्यगुरु-प्रियतमायै नमः
ॐ देवगुरु-निषेवितायै नमः
ॐ देवगुरु-प्रसूरूपायै नमः
ॐ देवगुरु-कृतार्हणायै नमः
ॐ देवगुरु-प्रेमयुतायै नमः
ॐ देवगुर्वनुमानितायै नमः
ॐ देवगुरु-प्रभावज्ञायै नमः
ॐ देवगुरु-सुखप्रदायै नमः
ॐ देवगुरु-ज्ञानदात्र्यै नमः
ॐ देवगुरु-प्रमोदिन्यै नमः 610
ॐ दैत्यस्त्रीगण-सम्पूज्यायै नमः
ॐ दैत्यस्त्रीगण-पूजितायै नमः

ॐ दैत्यस्त्रीगण-रूपायै नमः
ॐ दैत्यस्त्रीचित्त-हारिण्यै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-पूज्यायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-वन्दितायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-चित्तस्थायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-भूषितायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-संसिद्धायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-तोषितायै नमः 620
ॐ देवस्त्रीगण-हस्तस्थ-चारुचामर-वीजितायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-हस्तस्थ-चारुगन्ध-विलेपितायै नमः
ॐ देवांगना-धृतादर्श-दृष्ट्यर्थ-मुख-चन्द्रमसे नमः
ॐ देवांगनोत्सृष्ट-नागवल्लीदल-कृतोत्सुकायै नमः
ॐ देवस्त्रीगण-हस्तस्थ-दीपमाला-विलोकनायै नमः

ॐ देवस्त्रीगण-हस्तस्थ-धूपघ्राण-विनोदिन्यै नमः
ॐ देवनारी-करगत-वास-कास-वपायिन्यै नमः
ॐ देवनारी-कंकतिकाकृतकेश-निमार्जनायै नमः
ॐ देवनारी-सेव्यगात्रायै नमः
ॐ देवनारी-कृतोत्सुकायै नमः 630
ॐ देवनारी-विरचित-पुष्पमाला-विराजितायै नमः
ॐ देवनारी-विचित्राङ्ग्यै नमः
ॐ देवस्त्री-दत्तभोजनायै नमः
ॐ देवस्त्री-गणगीतायै नमः
ॐ देवस्त्री-गीतसोत्सुकायै नमः
ॐ देवस्त्री-नृत्यसुखिन्यै नमः
ॐ देवस्त्री-नृत्यदर्शिन्यै नमः
ॐ देवस्त्री-योजित-लसद्रत्न-पाद-पदाम्बुजायै नमः



ॐ देवस्त्री-गणविस्तीर्ण-चारुतल्प-
निषेदुष्यै नमः
ॐ देवनारी-चारुकराकलितांघ्र्यादि-
देहिकायै नमः 640
ॐ देवनारी-करव्यग्र-तालवृन्द-
मरुत्सुकायै नमः
ॐ देवनारी-वेणुवीणानाद-सोत्कण्ठ-
मानसायै नमः
ॐ देवकोटि-स्तुतिनुतायै नमः
ॐ देवकोटि-कृतार्हणायै नमः
ॐ देवकोटि-गीतगुणायै नमः
ॐ देवकोटि-कृतस्तुत्यै नमः
ॐ देवकोलाहलाकुलायै नमः
ॐ द्वेषराग-परित्यक्तायै नमः
ॐ द्वेषराग-विवर्जितायै नमः
ॐ दामपूज्यायै नमः 650
ॐ दामभूषायै नमः
ॐ दामोदर-विलासिन्यै नमः
ॐ दामोदर-प्रेमरतायै नमः
ॐ दामोदर-भगिन्यै नमः
ॐ दामोदर-प्रस्वै नमः
ॐ दामोदर-पत्न्यै नमः
ॐ दामोदर-पतिव्रतायै नमः
ॐ दामोदराऽभिन्न-देहायै नमः
ॐ दामोदर-रतिप्रियायै नमः
ॐ दामोदराऽभिन्न-तन्वै नमः 660
ॐ दामोदर-कृतास्पदायै नमः
ॐ दामोदर-कृतप्राणायै नमः
ॐ दामोदर-गतात्मिकायै नमः
ॐ दामोदर-कौतुकाढ्यायै नमः
ॐ दामोदर-कलाकलायै नमः
ॐ दामोदरालिंगिताङ्ग्यै नमः
ॐ दामोदर-कुतूहलायै नमः
ॐ दामोदर-कृताह्लादायै नमः
ॐ दामोदर-सुचुम्बितायै नमः
ॐ दामोदर-सुताकृष्टायै नमः 670
ॐ दामोदर-सुखप्रदायै नमः
ॐ दामोदर-सहाढ्यायै नमः
ॐ दामोदर-सहायिन्यै नमः
ॐ दामोदर-गुणज्ञायै नमः
ॐ दामोदर-वरप्रदायै नमः
ॐ दामोदरानुकूलायै नमः
ॐ दामोदर-नितम्बिन्यै नमः
ॐ दामोदर-बलक्रीडा-कुशलायै नमः
ॐ दर्शनप्रियायै नमः
ॐ दामोदर-जलक्रीडात्यक्त-स्वजन-
सौहृदायै नमः 680
ॐ दामोदर-लसद्रास-केलि-
कौतुकिन्यै नमः
ॐ दामोदर-भ्रातृकायै नमः
ॐ दामोदर-परायणायै नमः
ॐ दामोदर-धरायै नमः
ॐ दामोदर-वैर-विनाशिन्यै नमः
ॐ दामोदरोपजायायै नमः
ॐ दामोदर-निमन्त्रितायै नमः
ॐ दामोदर-पराभूतायै नमः
ॐ दामोदर-पराजितायै नमः
ॐ दामोदर-समाक्रान्तायै नमः 690
ॐ दामोदर-हताशुभायै नमः
ॐ दामोदरोत्सव-रतायै नमः
ॐ दामोदरोत्सवावहायै नमः
ॐ दामोदर-स्तन्यदात्र्यै नमः
ॐ दामोदर-गवेषितायै नमः
ॐ दमयन्ती-सिद्धिदात्र्यै नमः

ॐ दमयन्ती-प्रसाधितायै नमः
ॐ दमयन्तीष्टदेव्यै नमः
ॐ दमयन्ती-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ दमयन्ती-कृतार्चायै नमः 700
ॐ दमनर्षि-विभावितायै नमः
ॐ दमनर्षि-प्राणतुल्यायै नमः
ॐ दमनर्षि-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ दमनर्षि-स्वरूपायै नमः
ॐ दम्भपूरितविग्रहायै नमः
ॐ दम्भहन्त्र्यै नमः
ॐ दम्भधात्र्यै नमः
ॐ दम्भलोकविमोहिन्यै नमः
ॐ दम्भशीलायै नमः
ॐ दम्भहरायै नमः 710
ॐ दम्भवत्परिमर्दिन्यै नमः
ॐ दम्भरूपायै नमः
ॐ दम्भकर्यै नमः
ॐ दम्भसंतानदारिण्यै नमः
ॐ दाम्भिकायै नमः
ॐ दारिकायै नमः
ॐ दत्तमोक्षायै नमः
ॐ दत्तधनायै नमः
ॐ दत्तारोग्यायै नमः
ॐ दत्तपुत्रायै नमः 720
ॐ दत्तदारायै नमः
ॐ दत्तहारायै नमः
ॐ दत्तभोगायै नमः
ॐ दत्तशोकायै नमः
ॐ दत्तहस्त्यादि-वाहनायै नमः
ॐ दत्तमत्यै नमः
ॐ दत्तभार्यायै नमः
ॐ दत्तशास्त्रावबोधिकायै नमः
ॐ दत्तपानायै नमः
ॐ दत्तदानायै नमः 730
ॐ दत्तदारिद्र्य-नाशिन्यै नमः
ॐ दत्तसौधावनी-वासायै नमः
ॐ दत्तस्वर्गायै नमः
ॐ दासदायै नमः
ॐ दास्यतुष्टायै नमः
ॐ दास्यहरायै नमः
ॐ दासदासी-शतप्रदायै नमः
ॐ दाररूपायै नमः
ॐ दारवासायै नमः
ॐ दारवासि-हृदास्पदायै नमः 740
ॐ दारवासि-जनाराध्यायै नमः
ॐ दारवासि-जनप्रियायै नमः
ॐ दारवासि-विनिर्णीतायै नमः
ॐ दारवासि-समर्चितायै नमः
ॐ दारवास्याहृत-प्राणायै नमः
ॐ दारवास्यरि-नाशिन्यै नमः
ॐ दारवासि-विघ्नहरायै नमः
ॐ दारवासि-विमुक्तिदायै नमः
ॐ दाराग्नि-रूपिण्यै नमः
ॐ दारायै नमः 750
ॐ दारकार्यरि-नाशिन्यै नमः
ॐ दम्पत्यै नमः
ॐ दम्पतीष्टायै नमः
ॐ दम्पती-प्राणरूपिकायै नमः
ॐ दम्पती-स्नेहनिरतायै नमः
ॐ दाम्पत्य-साधनप्रियायै नमः
ॐ दाम्पत्य-सुखसेनायै नमः
ॐ दाम्पत्य-सुखदायिन्यै नमः
ॐ दाम्पत्याह्लाद-कारिण्यै नमः
ॐ दाम्पत्य-प्रेमरूपिण्यै नमः 760

ॐ दाम्पत्य-भोगभवनायै नमः
ॐ दम्पतीष्ट-पादपद्मायै नमः
ॐ दम्पत्याचार-निरतायै नमः
ॐ दम्पत्यामोद-मोदितायै नमः
ॐ दम्पत्यामोद-सुखिन्यै नमः
ॐ दाडिमीफल-भोजिन्यै नमः
ॐ दाडिमीफल-संतुष्टायै नमः
ॐ दाडिमीफल-मानसायै नमः
ॐ दाडिमीवृक्ष-संस्थानायै नमः
ॐ दाडिमीवृक्ष-वासिन्यै नमः 770
ॐ दाडिमीवृक्ष-रूपायै नमः
ॐ दाडिमीवन-वासिन्यै नमः
ॐ दाडिमीफल-साम्योरुपयोधर-
समन्वितायै नमः
ॐ दक्षिणायै नमः
ॐ दक्षिणारूपायै नमः
ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै नमः
ॐ दक्षकन्यायै नमः
ॐ दक्षपुत्र्यै नमः
ॐ दक्षमात्रे नमः
ॐ दक्षस्वै नमः 780
ॐ दक्षगोत्रायै नमः
ॐ दक्षसुतायै नमः
ॐ दक्षयज्ञ-विनाशिन्यै नमः
ॐ दक्षयज्ञ-नाशकर्त्र्यै नमः
ॐ दक्षयज्ञान्त-कारिण्यै नमः
ॐ दक्षप्रसूत्यै नमः
ॐ दक्षेज्यायै नमः
ॐ दक्षवंशैक-पावन्यै नमः
ॐ दक्षात्मजायै नमः
ॐ दक्षसून्वै नमः 790
ॐ दक्षजायै नमः
ॐ दक्षजातिकायै नमः
ॐ दक्षजन्मने नमः
ॐ दक्षजनुषे नमः
ॐ दक्षदेह-समुद्भवायै नमः
ॐ दक्षजन्यै नमः
ॐ दक्षयाग-ध्वंसिन्यै नमः
ॐ दक्षकन्यकायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-निरतायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-तुष्टिदायै नमः 800
ॐ दक्षिणाचार-संसिद्धायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-भावितायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-सुखिन्यै नमः
ॐ दक्षिणाचार-साधितायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-मोक्षाप्त्यै नमः
ॐ दक्षिणाचार-वन्दितायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-शरणायै नमः
ॐ दक्षिणाचार-हर्षितायै नमः
ॐ द्वारपालप्रियायै नमः
ॐ द्वारवासिन्यै नमः 810
ॐ द्वारसंस्थितायै नमः
ॐ द्वाररूपायै नमः
ॐ द्वारसंस्थायै नमः
ॐ द्वारदेश-निवासिन्यै नमः
ॐ द्वारकर्यै नमः
ॐ द्वारधात्र्यै नमः
ॐ दिव्यायै नमः
ॐ दोषमात्रविवर्जितायै नमः
ॐ दोषाकरायै नमः
ॐ दोषहरायै नमः 820
ॐ दोषराशि-विनाशिन्यै नमः
ॐ दोष-सदृशापांग-वीक्षणायै नमः
ॐ दोषाकर-विभूषाढ्यायै नमः

ॐ दोषाकर-कपालिन्यै नमः
ॐ दोषाकर-सहस्त्राभायै नमः
ॐ दोषाकर-समाननायै नमः
ॐ दोषाकर-मुख्यै नमः
ॐ दोषाकर-कराग्रजायै नमः
ॐ दोषाकर-समज्योतिषे नमः
ॐ दोषाकर-सुशीतलायै नमः 830
ॐ दोषाकर-श्रेण्यै नमः
ॐ दोषाकरेष्ट-देव्यै नमः
ॐ दोषाकर-निषेवितायै नमः
ॐ दोषाकर-प्राणरूपायै नमः
ॐ दोषाकर-मरीचिकायै नमः
ॐ दोषाकरोल्लसद्भालायै नमः
ॐ दोषाकर-सुहर्षिण्यै नमः
ॐ दोषाकर-शिरोभूषायै नमः
ॐ दोषाकर-वधूप्रियायै नमः
ॐ दोषाकर-वधूप्राणायै नमः 840
ॐ दोषाकर-वधूमतायै नमः
ॐ दोषाकर-वधूप्रीतायै नमः
ॐ दोषाकर-वध्वै नमः
ॐ दोषापूज्यायै नमः
ॐ दोषापूजितायै नमः
ॐ दोषहारिण्यै नमः
ॐ दोषाजाप-महानन्दायै नमः
ॐ दोषाजाप-परायणायै नमः
ॐ दोषापुरश्चार-रतायै नमः
ॐ दोषापूजक-पुत्रिण्यै नमः 850
ॐ दोषापूजक-वात्सल्यकारिण्यै जगदम्बिकायै नमः
ॐ दोषापूजक-वैरिघ्न्यै नमः
ॐ दोषापूजक-विघ्नहृते नमः
ॐ दोषापूजक-संतुष्टायै नमः
ॐ दोषापूजक-मुक्तिदायै नमः
ॐ दमप्रसून-सम्पूज्यायै नमः
ॐ दमपुष्प-प्रियायै नमः
ॐ दुर्योधन-प्रपूज्यायै नमः
ॐ दु:शासन-समर्चितायै नमः
ॐ दण्डपाणि-प्रियायै नमः 860
ॐ दण्डपाणि-मात्रे नमः
ॐ दण्डपाणि-समाराध्यायै नमः
ॐ दण्डपाणि-प्रपूजितायै नमः
ॐ दण्डपाणि-गृहासक्तायै नमः
ॐ दण्डपाणि-प्रियंवदायै नमः
ॐ दण्डपाणि-प्रियतमायै नमः
ॐ दण्डपाणि-मनोहरायै नमः
ॐ दण्डपाणि-हृतप्राणायै नमः
ॐ दण्डपाणि-सुसिद्धिदायै नमः
ॐ दण्डपाणि-परामृष्टायै नमः 870
ॐ दण्डपाणि-प्रहर्षितायै नमः
ॐ दण्डपाणि-विघ्नहरायै नमः
ॐ दण्डपाणि-शिरोधृतायै नमः
ॐ दण्डपाणि-प्राप्तचर्यायै नमः
ॐ दण्डपाण्युन्मुख्यै नमः
ॐ दण्डपाणि-प्राप्तपदायै नमः
ॐ दण्डपाणि-वरोन्मुख्यै नमः
ॐ दण्डहस्तायै नमः
ॐ दण्डपाण्यै नमः
ॐ दण्डबाहवे नमः 880
ॐ दण्डदोष्कायै नमः
ॐ दण्डकरायै नमः
ॐ दण्डचित्त-कृतास्पदायै नमः
ॐ दण्डिविद्यायै नमः
ॐ दण्डिमात्रे नमः
ॐ दण्डिखण्डक-नाशिन्यै नमः

ॐ दण्डिप्रियायै नमः
ॐ दण्डिपूज्यायै नमः
ॐ दण्डिसंतोष-दायिन्यै नमः
ॐ दस्युपूज्यायै नमः 890
ॐ दस्युरतायै नमः
ॐ दस्युद्रविण-दायिन्यै नमः
ॐ दस्युवर्ग-कृतार्हायै नमः
ॐ दस्युवर्ग-विनाशिन्यै नमः
ॐ दस्युनिर्णाशिन्यै नमः
ॐ दस्युकुलनिर्णाशिन्यै नमः
ॐ दस्युप्रियकर्यै नमः
ॐ दस्युनृत्यदर्शन-तत्परायै नमः
ॐ दुष्ट-भूत-निषेवितायै नमः
ॐ दुष्टदण्डकर्यै नमः 900
ॐ दुष्टवर्ग-विद्राविण्यै नमः
ॐ दुष्टवर्ग-निग्रहार्हायै नमः
ॐ दूषकप्राण-नाशिन्यै नमः
ॐ दूषकोत्ताप-जनन्यै नमः
ॐ दूषकारिष्ट-कारिण्यै नमः
ॐ दूषकद्वेषणकर्यै नमः
ॐ दाहिकायै नमः
ॐ दहनात्मिकायै नमः
ॐ दारुकारि-निहन्त्र्यै नमः
ॐ दारुकेश्वर-पूजितायै नमः 910
ॐ दारुकेश्वर-मात्रे नमः
ॐ दारुकेश्वर-वन्दितायै नमः
ॐ दर्भहस्तायै नमः
ॐ दर्भयुतायै नमः
ॐ दर्भकर्म-विवर्जितायै नमः
ॐ दर्भमय्यै नमः
ॐ दर्भतन्वै नमः
ॐ दर्भसर्वस्वरूपिण्यै नमः
ॐ दर्भकर्माचार-रतायै नमः
ॐ दर्भहस्त-कृतार्हणायै नमः 920
ॐ दर्भानुकूलायै नमः
ॐ दाम्भर्यायै नमः
ॐ दर्वीपात्रानुदामिन्यै नमः
ॐ दमघोष-प्रपूज्यायै नमः
ॐ दमघोष-वरप्रदायै नमः
ॐ दमघोष-समाराध्यायै नमः
ॐ दावाग्नि-रूपिण्यै नमः
ॐ दावाग्नि-रूपायै नमः
ॐ दावाग्नि-निर्णाशितमहाबलायै नमः
ॐ दन्त-दंष्ट्रासुरकलायै नमः 930
ॐ दन्त-चर्चित-हस्तिकायै नमः
ॐ दन्त-दंष्ट्रस्यन्दनायै नमः
ॐ दन्त-निर्णाशितासुरायै नमः
ॐ दधिपूज्यायै नमः
ॐ दधिप्रीतायै नमः
ॐ दधीचि-वरदायिन्यै नमः
ॐ दधीचीष्ट-देवतायै नमः
ॐ दधीचि-मोक्षदायिन्यै नमः
ॐ दधीचि-दैन्यहन्त्र्यै नमः
ॐ दधीचि-दरदारिण्यै नमः 940
ॐ दधीचि-भक्तिसुखिन्यै नमः
ॐ दधीचि-मुनिसेवितायै नमः
ॐ दधीचि-ज्ञानदात्र्यै नमः
ॐ दधीचि-गुणदायिन्यै नमः
ॐ दधीचि-कुलसम्भूषायै नमः
ॐ दधीचि-भुक्तिमुक्तिदायै नमः
ॐ दधीचि-कुलदेव्यै नमः
ॐ दधीचि-कुलदेवतायै नमः
ॐ दधीचि-कुलगम्यायै नमः
ॐ दधीचि-कुलपूजितायै नमः 950

ॐ दधीचि-सुखदात्र्यै नमः
ॐ दधीचि-दैन्यहारिण्यै नमः
ॐ दधीचि-दुःखहन्त्र्यै नमः
ॐ दधीचि-कुलसुन्दर्यै नमः
ॐ दधीचि-कुलसम्भूतायै नमः
ॐ दधीचि-कुलपालिन्यै नमः
ॐ दधीचि-दानगम्यायै नमः
ॐ दधीचि-दानमानिन्यै नमः
ॐ दधीचि-दानसंतुष्टायै नमः
ॐ दधीचि-दानदेवतायै नमः 960
ॐ दधीचि-जयसम्प्रीतायै नमः
ॐ दधीचि-जपमानसायै नमः
ॐ दधीचि-जपपूजाढ्यायै नमः
ॐ दधीचि-जपमालिकायै नमः
ॐ दधीचि-जपसंतुष्टायै नमः
ॐ दधीचि-जपतोषिण्यै नमः
ॐ दधीचि-तपसाराध्यायै नमः
ॐ दधीचि-शुभदायिन्यै नमः
ॐ दुर्गार्तिशमन्यै नमः
ॐ दुर्गापद्विनिवारिण्यै नमः 970
ॐ दुर्गमच्छेदिन्यै नमः
ॐ दुर्गसाधिन्यै नमः
ॐ दुर्गनाशिन्यै नमः
ॐ दुर्गतोद्धारिण्यै नमः
ॐ दुर्गनिहन्त्र्यै नमः
ॐ दुर्गमापहायै नमः
ॐ दुर्गमज्ञानदायै नमः
ॐ दुर्गदैत्यलोकदवानलायै नमः
ॐ दुर्गमायै नमः
ॐ दुर्गमालोकायै नमः 980
ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः
ॐ दुर्गमार्गप्रदायै नमः
ॐ दुर्गमविद्यायै नमः
ॐ दुर्गमाश्रितायै नमः
ॐ दुर्गमज्ञानसंस्थानायै नमः
ॐ दुर्गमध्यानभासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमोहायै नमः
ॐ दुर्गमगायै नमः
ॐ दुर्गमार्थस्वरूपिण्यै नमः
ॐ दुर्गमासुरसंहन्त्र्यै नमः 990
ॐ दुर्गमायुधधारिण्यै नमः
ॐ दुर्गमांग्यै नमः
ॐ दुर्गमतायै नमः
ॐ दुर्गम्यायै नमः
ॐ दुर्गमेश्वर्यै नमः
ॐ दुर्गभीमायै नमः
ॐ दुर्गभामायै नमः
ॐ दुर्गभायै नमः
ॐ दुर्गदारिण्यै नमः
ॐ दुर्गादिव्यै नमः 1000



देवीरहस्य-तन्त्रोक्तं मन्त्रगर्भं श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्तोत्रम्

ॐ ह्रीं दुं जगदम्बा भा भद्रिका भद्रकालिका।
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिषूदिनी॥
अनसूया तुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जिका लया।
प्रलया स्थितिः संभूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी॥
महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी।
मदालसा मदोत्तुंगा मदिरा मदनप्रिया॥
आलिर्व्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी।
आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी॥
मनोन्मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती।
सरित्कादम्बरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी॥
गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी।
तपोमयी दुरालम्बा दुष्टग्रहनिवारिणी॥
दुःखहा सुखदा साध्वी परमामृतसूः सुरा।
सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा॥
समस्ता संपदम्भोजनिलया कर्णिकालया।
विद्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दो गतिर्मतिः॥
धृतिदा दाम्भिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी।
गरिष्ठारिष्टहाऽदुष्टा कृषा काशी कुलाकुला॥
अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी।
विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकान्तापराजिता ॥ 10॥
अजिता कुलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी।
त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमतिर्भया॥
अभया स्वर्मुखा देवी महौषधिरलम्बुषा।
चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्डनिसूदिनी॥
चापलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना।
पुरी त्रिपुरसू रास्ना रसा रामा मनोरमा॥
संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा।
शशांकमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना॥
विषमाक्षी विशालाक्षी वाशा वागीश्वरी शिला।
मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥

मृगारिवाहना माध्वी मानदा मत्तभाषिणी।
नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया॥
पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया।
चामुण्डा चोग्रचण्डा च महाचण्डाऽतमाऽतमाः॥
तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महज्ज्योतिःस्वरूपिणी।
सुरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता॥
सृष्टिः स्थितिः क्षेमकरी क्षमा क्षामोन्नतस्तनी।
क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शर्वस्था शिववल्लभा॥
दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी।
राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥ 20 ॥
कबन्धा कन्धरा कृष्णा कृत्तिका कण्ठकान्तका।
कलंकरहिता काली कम्पा काश्मीरवल्लभा॥
काशी कीर्तिप्रदा कांची काश्मीरी कोकिलस्वना।
प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥
रतिः स्तुतिस्तरीस्तुर्या तोतुलाऽतलवासिनी।
तपःप्रिया शरच्छ्रेष्ठा पंगुपुत्री यमस्वसा॥
यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तडित्।
नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी॥
विगता विगतप्रश्ना कृष्णा कृष्टासिधारिणी।
वारी वारा वरधरा वरदा वीरसूदिनी॥
वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती।
दरी धनप्रदा धात्री धात्रीवल्ली महोदरी॥
गणेश्वरी गया कांची कांचीकिंकिणिघण्टिका।
माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी॥
पौरन्दरी शची शीता शीतातपस्वभावजा।
स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यगुणभूषणा॥
सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्तिस्वरूपिणी।
तेजस्विनी सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी॥
तर्पणा कर्षणा होता संकल्पा शुभमन्त्रिका।
दर्भा द्रोणिकला श्रान्ता समिद्धा सुरवेदिका ॥ 30 ॥
धूम्राहुतिश्चरमतिश्चामीकररुचिश्चिता।
चिन्ताऽनलेश्वरी नेलाकरा नीलसरस्वती॥

अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भयाभया।
भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भाकरा विभा॥
विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी।
पृथ्वीधरा विश्वधरा विश्वगर्भा प्रवर्तिका॥
विश्वमाया विश्वमाला विश्वम्भरविलासिनी।
उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसूः प्रजा॥
तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः।
सम्पुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका॥
श्यामाकवर्णा शार्दूली शम्पा शीलांशुवल्लभा।
स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी॥
चम्पकाभा चरा चीनादीना दीनजनप्रिया।
वसुन्धरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी॥
समुद्रा संगमा पूर्णाऽन्तराला तरुवासिनी।
पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया॥
माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी।
मुमूर्षा रूरुषा रेवा रेवती रमणी रमा॥
ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी।
अन्नरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी॥ 40॥
गारुडी गगनालम्बा लम्बमानकचप्रिया।
पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा॥
बलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा।
प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रसा॥
जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा।
किरी करालवपुषी शेमुषी मक्षिका मषी॥
उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा।
शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती॥
कमलाक्षी कमलजा करवालविहारिणी।
कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया॥
कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी।
कलप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा॥
कस्तूरीमृगसंस्था च कस्तूरीमृगरूपिणी।
कठोरा करमाला च कठोर कुचधारिणी॥

यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञसम्भवा।
यज्ञसिद्धिः क्रियासिद्धिर्यज्ञांगी यज्ञरक्षिका॥
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी।
विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला॥
शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी।
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी॥ 50॥
दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमंगला॥
सूर्यकोटिसहस्राभा चंद्रकोटिनिभानना।
समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला॥
सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिमण्डलवासिनी।
द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी॥
अकलंकशशांकाभा षोडशारनिवासिनी।
हृत्पद्मनिलयाऽभीमा महाभैरवनादिनी॥
वर्णाढ्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी।
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी॥
भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता।
कामेश्वरी कामरूपा कामतापविमोचिनी॥
गणेशजननी देवी गणेशवरदायिनी।
गतिदा गतिहा गीता गौतमी गुरुसेविता ॥
दीनदुःखहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी।
दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता॥
नृत्यप्रिया नृत्यरता नर्तकी नर्तकप्रिया।
नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी॥
भैरवी भैरवाराध्या भीमा भीमवरप्रदा।
भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिवर्धिनी॥ 60॥
महिषासुरहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी।
धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी॥
कुलीना कुलमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी।
पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका॥
षडंगयुवतीपूज्या षडंगरूपवर्जिता।
कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी॥

कमला कान्तिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया।
माया मतिर्महामाया भयदा भयहारिका॥
नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया।
मदिरापानसन्तुष्टा मदिरामोदधारिणी॥
तथ्या पथ्या कृती रथ्या रथस्था विततस्वरा।
महती रागिणी भार्गी शुचिहासा हरीश्वरी॥
हरिद्रत्नांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी।
अम्बालिकाम्बा देवेशी अनघाग्निशिखा श्रुतिः॥
अलसाल्पगतिश्चान्त्यानन्तानन्तगुणाश्रया।
आद्या चादित्यसंकाशा आदित्यकुलसुन्दरी॥
आत्मरूपाधिशमनी आदिमायादिदेवता।
इन्द्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना॥
इन्द्रावरजसंस्तुत्या इला चेक्षुरसप्रिया।
ईश्वरी ईशवनिता ईशा केशववल्लभा॥ 70॥
उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुंगा चोक्षवाहना।
उत्तंका चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी॥
ऊष्मा ऊणा च गुर्वंगी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका।
ऋद्धिर्ऋचा ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री ऋवान्तकी॥
ॠढिजा चारुवस्त्रा च ॠणिवासा महालया।
लृकारा लृक्कुरा लीना लॄकारा वरधारिणी॥
एणांकमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला।
ऐकारगतिरैश्वर्यदायिनी चैश्वरी गतिः॥
ओंकारा बीजरूपा च औत्रिकी वेत्रधारिणी।
अम्बिका लम्पिका पम्पा अःस्वरोद्गाररूपिणी॥
काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा।
कदम्बनिलया कन्था कांचीमण्डनमण्डिता॥
कलंकरहिता कूर्मा कांचनाभा करीरगा।
कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा॥
कुलस्था कौलिनी कुल्या कुरुकुल्ला कपालिनी।
कपालकुलनिर्विण्णा क्लींकारा कंजलोचना॥
खंजनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा।
खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा॥

खगायुधा खगगतिः खकाराक्षरभूषणा।
गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा।। 80।।
गोधा गदाधरा प्राज्या गगनेशी मही मला।
घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा गणेश्वरी।।
घनसारप्रिया साम्या घवर्णकृतभूषणा।
ङान्ता ङवर्णमुकुटा कवर्गकृतभूषणा।।
चान्द्री चान्द्रिस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना।
चंचरीकस्वना देवी चंचच्चामीकरांगदा।।
छत्रिका छुरिका छञ्छा छत्रचामरभूषणा।
ज्रंकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी।।
जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना।
जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा।।
झञ्झा झरी झरत्कारी झरत्कांचीरकिंकिणी।
झिण्टिका झम्पकृद् झम्पा झम्पत्रासनिवारिणी।।
ञाणुरूपा ञंकहस्ता ञवर्णाक्षरसंमता।
टंकायुधा महातथ्या टंकारकरुणा टसी।।
ठकुरा ठत्करा ठानी डिण्डीरवसना ढला।
ढण्ढानिलमयी ढण्डा ढणत्कारकरा ढसा।।
णान्ता णीलायुधा नम्रा णवर्णाक्षरभूषणा।
तरुणी तुन्दिला तोन्दा तामसी तामसप्रिया।।
ताम्रानना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला।
तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा।। 90।।
स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला।
दन्तिनी दन्तुरा दार्वी देवकी देवनायिका।।
दमिनी शमिनी दण्ड्या दण्डहस्ता दुरानतिः।
दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्राविडवासिनी।।
दूरस्था दुन्दुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी।
दुःखघ्नी द्रुतगाऽदुष्टा दया दाम्भिक्यनाशिनी।।
धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा।
धनुर्धरा धनुर्वल्ली धानुष्कवरदायिनी।।
धूमाली धूम्रवदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना।
नलिनी नर्तकी नान्ता नंगा नलिनलोचना।।

निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमि:।
नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी॥
निरंजना जनी जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी।
नटिनी नाट्यनिरता नवनीतप्रियाऽनिला॥
नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा।
पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला॥
परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोत्रा पुलोमजा।
पुष्पिणी पुस्तककरा पटु: पाठीनवाहना॥
पापघ्नी शम्पिनी पाली पल्ली परमसुन्दरी।
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा ॥100॥
पूर्णिमा पंचमी पौत्री पुरूरववरप्रदा।
पंचयज्ञा पंचशरी पंचाशतिमनुप्रिया॥
पांचाली पंचमुद्रा च पूजा पूर्णमनोरथा।
फलिनी फलदात्री च फल्गुहस्ता फणिप्रिया॥
फिरंगहा स्फीतमति: स्फीति: स्फीतिमति स्फुरा।
बलमाया बलस्तुत्या बिल्वसेना बलाबला॥
बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी।
बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बन्धनमोचिनी॥
भगिनी भगमाला च भगलिंगामृतद्रवा।
भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगणी॥
भगलिंगस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी।
मत्ता मनोहरा मीना मैनाकजननी मुरी॥
मुरली मानवी होत्री महस्विजनमोदिता।
मत्तमातंगगा माद्री मरालगतिरंचला॥
यज्ञेश्वरेश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्रिता।
यशोवती यतिस्था च यतात्मा यतिवल्लभा॥
यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया।
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्यूपमूलिनी॥
रंजिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा।
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी॥110॥
राज्ञी रात्रिंचरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी।
लुलिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा॥



लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवर्तिनी।
लंका ललज्जटाजूटा लंघिता लोकसुन्दरी॥
लोकेशवरदा लेया लयकर्त्री महालया।
वेदिर्विलग्ना वाणी च वीणा वेणुर्वनेश्वरी॥
वन्दमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका।
शंखिनी शंखवलया शंखायुधधरा शमा॥
शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी।
श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी॥
सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी।
सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सत्रस्थाऽसुरसूदिनी॥
सुरेश्वरी सम्पदाद्या समस्ताचलचारिणी।
समदा संमितिः संमा सवना सवनेश्वरी॥
हंसी हरप्रिया हास्या हरिनेत्रा हराम्बिका।
हेषा हटेश्वरी हेरा हलिनी हलदायिनी॥
हेहा हाहारवा हाला हालाहलहताशया।
क्षमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमाम्बरधरा क्षया॥
क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्मीः क्षितिभृत्तनया क्षुधा।
क्षत्रिया ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षःबीजमण्डिता ॥120॥
ळंक्षःबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका।
दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गवासिनी।
दुर्गा दुर्गातिशमनी ॐ ह्रीं दुं बीजमण्डिता॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

मंत्रगर्भा श्रीदुर्गासहस्त्रनामावलिः

ॐ ह्रीं दुं जगदम्बायै नमः
ॐ भायै नमः
ॐ भद्रिकायै नमः
ॐ भद्रकालिकायै नमः
ॐ प्रचण्डायै नमः
ॐ चण्डिकायै नमः
ॐ चण्ड्यै नमः
ॐ चण्डमुण्डनिषूदिन्यै नमः
ॐ अनसूयायै नमः
ॐ तुट्यै नमः 10
ॐ तारायै नमः
ॐ कृत्तिकायै नमः
ॐ कुब्जिकायै नमः
ॐ लयायै नमः
ॐ प्रलयायै नमः
ॐ स्थित्यै नमः
ॐ सम्भूत्यै नमः
ॐ विभूत्यै नमः
ॐ भयनाशिन्यै नमः
ॐ महामायायै नमः 20
ॐ महाविद्यायै नमः
ॐ मूलविद्यायै नमः
ॐ चिदीश्वर्यै नमः
ॐ मदालसायै नमः
ॐ मदोत्तुंगायै नमः
ॐ मदिरायै नमः
ॐ मदनप्रियायै नमः
ॐ आल्यै नमः
ॐ व्यालप्रस्वै नमः
ॐ पुण्यायै नमः 30
ॐ पवित्रायै नमः
ॐ परमेश्वर्यै नमः
ॐ आदिदेव्यै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ त्रिपुरायै नमः
ॐ जगदीश्वर्यै नमः
ॐ मनोन्मनायै नमः
ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नमः 40
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ सरित्कादम्बर्यै नमः
ॐ गुह्यकाल्यै नमः
ॐ गणेश्वर्यै नमः
ॐ गणाम्बिकायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ ताप्यै नमः
ॐ तपनायै नमः
ॐ तापहारिण्यै नमः
ॐ तपोमय्यै नमः 50
ॐ दुरालम्बायै नमः
ॐ दुष्टग्रहनिवारिण्यै नमः
ॐ दुःखहायै नमः
ॐ सुखदायै नमः
ॐ साध्व्यै नमः
ॐ परमामृतस्वै नमः
ॐ सुरायै नमः
ॐ सुधायै नमः
ॐ सुधांशुनिलयायै नमः
ॐ प्रलयानलसन्निभायै नमः 60

ॐ समस्तायै नमः
ॐ सम्पदम्भोजनिलयायै नमः
ॐ कर्णिकालयायै नमः
ॐ विद्येश्वर्यै नमः
ॐ विश्वमय्यै नमः
ॐ विराजे नमः
ॐ छन्दसे नमः
ॐ गत्यै नमः
ॐ मत्यै नमः
ॐ धृतिदायै नमः 70
ॐ दाम्भिक्यै नमः
ॐ दोलायै नमः
ॐ लोपामुद्रायै नमः
ॐ पटीयस्यै नमः
ॐ गरिष्ठारिष्टहायै नमः
ॐ अदुष्टायै नमः
ॐ कृषायै नमः
ॐ काश्यै नमः
ॐ कुलाकुलायै नमः
ॐ अकुलस्थायै नमः 80
ॐ पदन्यासायै नमः
ॐ न्यासरूपायै नमः
ॐ विरूपिण्यै नमः
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ कोटराक्ष्यै नमः
ॐ कुलकान्तायै नमः
ॐ अपराजितायै नमः
ॐ अजितायै नमः
ॐ कुलिकायै नमः
ॐ लम्पायै नमः 90
ॐ लम्पटायै नमः
ॐ त्रिपुरेश्वर्यै नमः
ॐ त्रितय्यै नमः
ॐ वेदविन्यासायै नमः
ॐ संन्यासायै नमः
ॐ सुमत्यै नमः
ॐ भयायै नमः
ॐ अभयायै नमः
ॐ स्वर्मुखायै नमः
ॐ देव्यै नमः 100
ॐ महौषध्यै नमः
ॐ अलम्बुषायै नमः
ॐ चपलायै नमः
ॐ चन्द्रिकायै
ॐ चण्डायै नमः
ॐ चापलाक्ष्यै नमः
ॐ मदाविष्टायै नमः
ॐ मदिरारुणलोचनायै नमः
ॐ पुर्यै नमः
ॐ त्रिपुरस्वै नमः 110
ॐ रास्नायै नमः
ॐ रसायै नमः
ॐ रामायै नमः
ॐ मनोरमायै नमः
ॐ संध्यायै नमः
ॐ संध्याभ्रशीलायै नमः
ॐ शालायै नमः
ॐ श्यामपयोधरायै नमः
ॐ शशांकमुकुटायै नमः
ॐ श्यामायै नमः 120
ॐ सुरायै नमः
ॐ सुन्दरलोचनायै नमः
ॐ विषमाक्ष्यै नमः
ॐ विशालाक्ष्यै नमः

ॐ वाशायै नमः
ॐ वागीश्वर्यै नमः
ॐ शिलायै नमः
ॐ मनःशिलायै नमः
ॐ कस्तूर्यै नमः
ॐ मृगनाभ्यै नमः 130
ॐ मृगेक्षणायै नमः
ॐ मृगारिवाहनायै नमः
ॐ माध्व्यै नमः
ॐ मानदायै नमः
ॐ मत्तभाषिण्यै नमः
ॐ नारसिंह्यै नमः
ॐ वामदेव्यै नमः
ॐ वामायै नमः
ॐ वामश्रुतिप्रियायै नमः
ॐ पुण्यायै नमः 140
ॐ पुण्यगत्यै नमः
ॐ पुत्र्यै नमः
ॐ पुण्यजनप्रियायै नमः
ॐ चामुण्डायै नमः
ॐ उग्रचण्डायै नमः
ॐ महाचण्डायै नमः
ॐ अतमायै नमः
ॐ तमायै नमः
ॐ तमस्विन्यै नमः
ॐ प्रभायै नमः 150
ॐ ज्योत्स्नायै नमः
ॐ महज्ज्योतिस्वरूपिण्यै नमः
ॐ सुरूपायै नमः
ॐ सद्गत्यै नमः
ॐ साध्व्यै नमः
ॐ सदसद्रूपराजितायै नमः
ॐ सृष्ट्यै नमः
ॐ स्थित्यै नमः
ॐ क्षेमकर्यै नमः
ॐ क्षमायै नमः 160
ॐ क्षामोन्नतस्तन्यै नमः
ॐ क्षोण्यै नमः
ॐ क्षयकर्यै नमः
ॐ क्षीणायै नमः
ॐ शर्वस्थायै नमः
ॐ शिववल्लभायै नमः
ॐ दन्तुरायै नमः
ॐ दाडिमप्रीत्यै नमः
ॐ दयायै नमः
ॐ दाम्भिकसूदिन्यै नमः 170
ॐ राक्षस्यै नमः
ॐ डाकिन्यै नमः
ॐ योग्यायै नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ योगवल्लभायै नमः
ॐ कबन्धायै नमः
ॐ कन्धरायै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ कृत्तिकायै नमः
ॐ कण्ठकान्तकायै नमः 180
ॐ कलंकरहितायै नमः
ॐ काल्यै नमः
ॐ कम्पायै नमः
ॐ काश्मीरवल्लभायै नमः
ॐ काश्यै नमः
ॐ कीर्तिप्रदायै नमः
ॐ कांच्यै नमः
ॐ काश्मीर्यै नमः

ॐ कोकिलस्वनायै नमः
ॐ प्रभावत्यै नमः 190
ॐ महारौद्र्यै नमः
ॐ रुद्रपत्न्यै नमः
ॐ रुजापहायै नमः
ॐ रत्यै नमः
ॐ स्तुत्यै नमः
ॐ तर्यै नमः
ॐ तुर्यायै नमः
ॐ तोतुलायै नमः
ॐ अतलवासिन्यै नमः
ॐ तपःप्रियायै नमः 200
ॐ शरच्छ्रेष्ठायै नमः
ॐ पंगुपुत्र्यै नमः
ॐ यमस्वसायै नमः
ॐ याम्यै नमः
ॐ यमान्तकायै नमः
ॐ याम्यायै नमः
ॐ यमुनायै नमः
ॐ स्वर्नद्यै नमः
ॐ तडिते नमः
ॐ नारायण्यै नमः 210
ॐ विश्वमातायै नमः
ॐ भवान्यै नमः
ॐ पापनाशिन्यै नमः
ॐ विगतायै नमः
ॐ विगतप्रश्नायै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ कृष्टासिधारिण्यै नमः
ॐ वार्यै नमः
ॐ वारायै नमः
ॐ वरधरायै नमः 220
ॐ वरदायै नमः
ॐ वीरसूदिन्यै नमः
ॐ वीरस्वै नमः
ॐ वामनाकारायै नमः
ॐ दीर्घसूत्रायै नमः
ॐ दयावत्यै नमः
ॐ दर्यै नमः
ॐ धनप्रदायै नमः
ॐ धात्र्यै नमः
ॐ धात्रीवल्ल्यै नमः 230
ॐ महोदर्यै नमः
ॐ गणेश्वर्यै नमः
ॐ गयायै नमः
ॐ कांच्यै नमः
ॐ कांचीकिंकिणिघण्टिकायै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ मायावत्यै नमः
ॐ मत्तायै नमः
ॐ प्रमत्तायै नमः
ॐ प्रवरेश्वर्यै नमः 240
ॐ पौरन्दर्यै नमः
ॐ शच्यै नमः
ॐ शीतायै नमः
ॐ शीतातपस्वभावजायै नमः
ॐ स्वाभाविकगुणायै नमः
ॐ गण्यायै नमः
ॐ गाम्भीर्यगुणभूषणायै नमः
ॐ सूत्यै नमः
ॐ सूर्यकलायै नमः
ॐ सुप्तायै नमः 250
ॐ सप्तसप्तिस्वरूपिण्यै नमः
ॐ तेजस्विन्यै नमः

ॐ सदानन्दायै नमः
ॐ सभासन्तोषवर्धिन्यै नमः
ॐ तर्पणायै नमः
ॐ कर्षणायै नमः
ॐ होत्रे नमः
ॐ संकल्पायै नमः
ॐ शुभमन्त्रिकायै नमः
ॐ दर्भायै नमः 260
ॐ द्रोणिकलायै नमः
ॐ श्रान्तायै नमः
ॐ समिद्धायै नमः
ॐ सुरवेदिकायै नमः
ॐ धूम्राहुत्यै नमः
ॐ चरमत्यै नमः
ॐ चामीकररुच्यै नमः
ॐ चितायै नमः
ॐ चिन्तानलेश्वर्यै नमः
ॐ नीलसरस्वत्यै नमः 270
ॐ अपर्णायै नमः
ॐ सुफलायै नमः
ॐ यज्ञायै नमः
ॐ सभयायै नमः
ॐ निर्भयायै नमः
ॐ अभयायै नमः
ॐ भीमस्वनायै नमः
ॐ भर्गशिखायै नमः
ॐ भास्वत्यै नमः
ॐ भाकरायै नमः 280
ॐ विभायै नमः
ॐ विभावर्यै नमः
ॐ नद्यै नमः
ॐ नन्द्यायै नमः
ॐ नन्द्यावर्तप्रवर्तिन्यै नमः
ॐ पृथ्वीधरायै नमः
ॐ विश्वधरायै नमः
ॐ विश्वगर्भायै नमः
ॐ प्रवर्तिकायै नमः
ॐ विश्वमायायै नमः 290
ॐ विश्वमालायै नमः
ॐ विश्वम्भरविलासिन्यै नमः
ॐ उरगेशायै नमः
ॐ पद्मनागायै नमः
ॐ पद्मनाभप्रस्वै नमः
ॐ प्रजायै नमः
ॐ तोरणायै नमः
ॐ तुलस्यै नमः
ॐ दीक्षायै नमः
ॐ दक्षायै नमः 300
ॐ दाक्षायण्यै नमः
ॐ द्युत्यै नमः
ॐ सम्पुटायै नमः
ॐ शयनायै नमः
ॐ शय्यायै नमः
ॐ शासनायै नमः
ॐ शमनान्तकायै नमः
ॐ श्यामाकवर्णायै नमः
ॐ शार्दूल्यै नमः
ॐ शम्पायै नमः 310
ॐ शीलांशु-वल्लभायै नमः
ॐ स्तुत्यायै नमः
ॐ प्रणीतायै नमः
ॐ नियत्यै नमः
ॐ कम्पनायै नमः
ॐ कम्पहारिण्यै नमः



ॐ चम्पकाभायै नमः
ॐ चरायै नमः
ॐ चीनायै नमः
ॐ अदीनायै नमः 320
ॐ दीनजन-प्रियायै नमः
ॐ वसुन्धरायै नमः
ॐ वासवेश्यै नमः
ॐ वसुनाथायै नमः
ॐ वटेश्वर्यै नमः
ॐ समुद्रायै नमः
ॐ संगमायै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ अन्तरालायै नमः
ॐ तरुवासिन्यै नमः 330
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ पामर्यै नमः
ॐ मान्यायै नमः
ॐ माननीयायै नमः
ॐ मधुप्रियायै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ मधुपानस्थायै नमः
ॐ मन्दिरायै नमः
ॐ मन्दुरायै नमः
ॐ मृग्यै नमः 340
ॐ मुमूर्षायै नमः
ॐ रूरुषायै नमः
ॐ रेवायै नमः
ॐ रेवत्यै नमः
ॐ रमण्यै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ ऋद्धिहस्तायै नमः
ॐ सिद्धिहस्तायै नमः
ॐ अन्नपूर्णायै नमः
ॐ महेश्वर्यै नमः 350
ॐ अन्नरूपायै नमः
ॐ जगज्ज्योत्यै नमः
ॐ समस्तासुरघातिन्यै नमः
ॐ गारुड्यै नमः

ॐ गगनालम्बायै नमः
ॐ लम्बमानकचप्रियायै नमः
ॐ पीताम्बरायै नमः
ॐ पीतपुष्पायै नमः
ॐ पूतनायै नमः
ॐ गीतवल्लभायै नमः 360
ॐ बलाकायै नमः
ॐ जगदन्तायै नमः
ॐ जरायै नमः
ॐ जयवरप्रदायै नमः
ॐ प्रीत्यै नमः
ॐ कठोरवदनायै नमः
ॐ करालरदनायै नमः
ॐ रसायै नमः
ॐ जिह्वाहस्तायै नमः
ॐ बगलायै नमः 370
ॐ प्रणयायै नमः
ॐ विनयप्रदायै नमः
ॐ किर्यै नमः
ॐ करालवपुष्यै नमः
ॐ शेमुष्यै नमः
ॐ मक्षिकायै नमः
ॐ मष्यै नमः
ॐ उत्तीर्णायै नमः
ॐ तर्णिकायै नमः
ॐ तीक्ष्णायै नमः 380
ॐ श्लक्ष्णायै नमः
ॐ कामेश्वर्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शिवपत्न्यै नमः
ॐ सरोजाक्ष्यै नमः
ॐ पद्महस्तायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः
ॐ कमलजायै नमः
ॐ करवालविहारिण्यै नमः 390
ॐ कविपूज्यायै नमः
ॐ कविगत्यै नमः
ॐ कविरूपायै नमः
ॐ कविप्रियायै नमः
ॐ कदल्यै नमः
ॐ कदलीरूपायै नमः
ॐ कदलीवनवासिन्यै नमः
ॐ कलप्रीतायै नमः
ॐ कलहदायै नमः
ॐ कलहायै नमः 400
ॐ कलहातुरायै नमः
ॐ कस्तूरीमृगसंस्थायै नमः
ॐ कस्तूरीमृगरूपिण्यै नमः
ॐ कठोरायै नमः
ॐ करमालायै नमः
ॐ कठोरकुचधारिण्यै नमः
ॐ यज्ञमातायै नमः
ॐ यज्ञभोक्त्र्यै नमः
ॐ यज्ञेश्यै नमः
ॐ यज्ञसम्भवायै नमः 410
ॐ यज्ञसिद्ध्यै नमः
ॐ क्रियासिद्ध्यै नमः
ॐ यज्ञांग्यै नमः
ॐ यज्ञरक्षिकायै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ विष्णुरूपायै नमः
ॐ विष्णुमातृस्वरूपिण्यै नमः
ॐ विष्णुमायायै नमः

ॐ विशालाक्ष्यै नमः
ॐ विशालनयनोज्ज्वलायै नमः 420
ॐ शिवमातायै नमः
ॐ शिवाख्यायै नमः
ॐ शिवदायै नमः
ॐ शिवरूपिण्यै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ ब्रह्माण्यै नमः
ॐ ब्रह्मरूपिण्यै नमः
ॐ दुर्गस्थायै नमः
ॐ दुर्गरूपायै नमः 430
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ दुर्गतिनाशिन्यै नमः
ॐ माहेश्वर्यै नमः
ॐ सर्वाद्यायै नमः
ॐ शर्वाण्यै नमः
ॐ सर्वमंगलायै नमः
ॐ सूर्यकोटिसहस्त्राभायै नमः
ॐ चन्द्रकोटिनिभाननायै नमः
ॐ समुद्रकोटिगम्भीरायै नमः
ॐ वायुकोटिमहाबलायै नमः 440
ॐ सोमसूर्याग्निमध्यस्थायै नमः
ॐ मणिमण्डलवासिन्यै नमः
ॐ द्वादशारसरोजस्थायै नमः
ॐ सूर्यमण्डलवासिन्यै नमः
ॐ अकलंकशशांकाभायै नमः
ॐ षोडशारनिवासिन्यै नमः
ॐ हृत्पद्मनिलयायै नमः
ॐ अभीमायै नमः
ॐ महाभैरवनादिन्यै नमः
ॐ वर्णाढ्यायै नमः 450
ॐ वर्णरहितायै नमः
ॐ पंचाशद्वर्णभेदिन्यै नमः
ॐ भूतिदायै नमः
ॐ भूत्यै नमः
ॐ भूतिदात्र्यै नमः
ॐ भैरव्यै नमः
ॐ भैरवाचारनिरतायै नमः
ॐ भूतभैरवसेवितायै नमः
ॐ कामेश्वर्यै नमः
ॐ कामरूपायै नमः 460
ॐ कामतापविमोचिन्यै नमः
ॐ गणेशजनन्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ गणेशवरदायिन्यै नमः
ॐ गतिदायै नमः
ॐ गतिहायै नमः
ॐ गीतायै नमः
ॐ गौतम्यै नमः
ॐ गुरुसेवितायै नमः
ॐ दीनदु:खहरायै नमः 470
ॐ दीनतापनिर्मूलकारिण्यै नमः
ॐ दयाशीलायै नमः
ॐ दयासारायै नमः
ॐ दयासागरसंस्थितायै नमः
ॐ नृत्यप्रियायै नमः
ॐ नृत्यरतायै नमः
ॐ नर्तक्यै नमः
ॐ नर्तकप्रियायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ नरेन्द्रस्थायै नमः 480
ॐ नरमुण्डास्थिमालिन्यै नमः
ॐ भैरव्यै नमः

ॐ भैरवाराध्यायै नम:
ॐ भीमायै नम:
ॐ भीमवरप्रदायै नम:
ॐ भुवनायै नम:
ॐ भुवनाराध्यायै नम:
ॐ भवान्यै नम:
ॐ भूतिवर्धिन्यै नम:
ॐ महिषासुरहन्त्र्यै नम: 490
ॐ रक्तबीजविनाशिन्यै नम:
ॐ धनुर्बाणधरायै नम:
ॐ नित्यायै नम:
ॐ धूम्रलोचननाशिन्यै नम:
ॐ कुलीनायै नम:
ॐ कुलमार्गस्थायै नम:
ॐ कुलमार्गप्रकाशिन्यै नम:
ॐ पंचाशद्वर्णबीजाढ्यायै नम:
ॐ पंचाशन्मुण्डमालिकायै नम:
ॐ षडंगयुवतीपूज्यायै नम: 500
ॐ षडंगरूपवर्जितायै नम:
ॐ कालमातायै नम:
ॐ कालरात्र्यै नम:
ॐ काल्यै नम:
ॐ कमलवासिन्यै नम:
ॐ कमलायै नम:
ॐ कान्तिरूपायै नम:
ॐ कामराजेश्वर्यै नम:
ॐ क्रियायै नम:
ॐ मायायै नम: 510
ॐ मत्यै नम:
ॐ महामायायै नम:
ॐ भयदायै नम:
ॐ भयहारिकायै नम:
ॐ नार्यै नम:
ॐ नारायणगृहप्रियायै नम:
ॐ मदिरापानसन्तुष्टायै नम:
ॐ मदिरामोदधारिण्यै नम:
ॐ तथ्यायै नम:
ॐ पथ्यायै नम: 520



ॐ कृत्यै नमः
ॐ रथ्यायै नमः
ॐ रथस्थायै नमः
ॐ विततस्वरायै नमः
ॐ महत्यै नमः
ॐ रागिण्यै नमः
ॐ भार्ग्यै नमः
ॐ शुचिहासायै नमः
ॐ हरीश्वर्यै नमः
ॐ हरिद्रत्नांशुलसितायै नमः 530
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ नायकसुन्दर्यै नमः
ॐ देवेश्यै नमः
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ अम्बायै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ अम्बालिकायै नमः
ॐ अनघाग्निशिखायै नमः
ॐ अलसायै नमः
ॐ अल्पगत्यै नमः 540
ॐ अन्त्यायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः
ॐ अनन्तगुणाश्रयायै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ आदित्यसंकाशायै नमः
ॐ आदित्यकुलसुन्दर्यै नमः
ॐ आत्मरूपायै नमः
ॐ आधिशमन्यै नमः
ॐ आदिमायायै नमः
ॐ आदिदेवतायै नमः 550
ॐ इन्द्रप्रस्वै नमः
ॐ इनद्योत्यै नमः
ॐ इनाग्न्यै नमः
ॐ इन्द्रावरजसंस्तुत्यायै नमः
ॐ इलायै नमः
ॐ इक्षुरसप्रियायै नमः
ॐ इहायै नमः
ॐ ईश्वर्यै नमः
ॐ ईशवनितायै नमः
ॐ ईशायै नमः 560
ॐ उमायै नमः
ॐ उर्व्यै नमः
ॐ उरुभुजायै नमः
ॐ उत्तुंगायै नमः
ॐ उक्षवाहनायै नमः
ॐ उत्तंकायै नमः
ॐ उत्तमायै नमः
ॐ उल्लासायै नमः
ॐ उरुगर्विण्यै नमः
ॐ उत्तरायै नमः 570
ॐ ऊष्मायै नमः
ॐ ऊणायै नमः
ॐ ऊर्ध्वाक्ष्यै नमः
ॐ ऊर्ध्वमस्तकायै नमः
ॐ ऋद्ध्यै नमः
ॐ ऋचायै नमः
ॐ ऋवर्णेश्यै नमः
ॐ ऋणहन्त्र्यै नमः
ॐ ऋवान्तक्यै नमः
ॐ लृकारायै नमः 580
ॐ लृक्कुरायै नमः
ॐ एणांकमुकुटायै नमः
ॐ ऐकारगत्यै नमः
ॐ ऐश्वर्यदायिन्यै नमः

ॐ ऐश्वर्यै नम:
ॐ ओंकारायै नम:
ॐ औत्रिक्यै नम:
ॐ अ:स्वरोद्गाररूपिण्यै नम:
ॐ काल्यै नम:
ॐ भद्रकाल्यै नम: 590
ॐ कालिकायै नम:
ॐ कालवल्लभायै नम:
ॐ केशववल्लभायै नम:
ॐ कदम्बनिलयायै नम:
ॐ कन्थायै नम:
ॐ कांचीमण्डनमण्डिता नम:
ॐ कलंकरहितायै नम:
ॐ कूर्मायै नम:
ॐ कांचनाभायै नम:
ॐ करीरगायै नम: 600
ॐ कनकाचलवासायै नम:
ॐ कारुण्याकुलमानसायै नम:
ॐ कुलस्थायै नम:
ॐ कौलिन्यै नम:
ॐ कुल्यायै नम:
ॐ कुरुकुल्लायै नम:
ॐ कपालिन्यै नम:
ॐ कपालकुलनिर्विण्णायै नम:
ॐ क्लींकारायै नम:
ॐ कंजलोचनायै नम: 610
ॐ खंजनाक्ष्यै नम:
ॐ खड्गधरायै नम:
ॐ खेटकायुधभूषणायै नम:
ॐ खर्पराढ्यायै नम:
ॐ खलहायै नम:
ॐ खेटिन्यै नम:
ॐ खेचर्यै नम:
ॐ खगायै नम:
ॐ खगायुधायै नम:
ॐ खगगत्यै नम: 620
ॐ खकाराक्षरभूषणायै नम:
ॐ गणाध्यक्षायै नम:
ॐ गणेश्वर्यै नम:
ॐ गजगत्यै नम:
ॐ गणेशजनन्यै नम:
ॐ गदायै नम:
ॐ गोधायै नम:
ॐ गदाधरायै नम:
ॐ गगनेश्यै नम:
ॐ गुर्वंग्यै नम: 630
ॐ घुर्घुरायै नम:
ॐ घटभ्वै नम:
ॐ घूकायै नम:
ॐ घुसृणाभायै नम:
ॐ घनसारप्रियायै नम:
ॐ घवर्णकृतभूषणायै नम:
ॐ चान्द्र्यै नम:
ॐ चान्द्रिस्तुतायै नम:
ॐ चार्व्यै नम:
ॐ चन्द्रिकायै नम: 640
ॐ चण्डनि:स्वनायै नम:
ॐ चंचरीकस्वनायै नम:
ॐ चंचायै नम:
ॐ चामीकरांगदायै नम:
ॐ चारुवस्त्रायै नम:
ॐ चारुचन्द्रकलायै नम:
ॐ छत्रिकायै नम:
ॐ छुरिकायै नम:

ॐ छंछायै नमः
ॐ छत्रचामरभूषणायै नमः 650
ॐ ज्रंकार्यै नमः
ॐ जलजिह्वायै नमः
ॐ जृम्भिकायै नमः
ॐ जलयोगिन्यै नमः
ॐ जटाजूटधरायै नमः
ॐ जात्यै नमः
ॐ जातीपुष्पसमाननायै नमः
ॐ जलेश्वर्यै नमः
ॐ जगद्ध्येयायै नमः
ॐ जानक्यै नमः 660
ॐ जनन्यै नमः
ॐ जटायै नमः
ॐ जन्यै नमः
ॐ जन्यायै नमः
ॐ झंझायै नमः
ॐ झर्यै नमः
ॐ झरत्कार्यै नमः
ॐ झरत्कांचीरकिंकिण्यै नमः
ॐ झिण्टिकायै नमः
ॐ झम्पकृते नमः 670
ॐ झम्पायै नमः
ॐ झम्पत्रासनिवारिण्यै नमः
ॐ ञाणुरूपायै नमः
ॐ ञंकहस्तायै नमः
ॐ ञवर्णाक्षरसंमतायै नमः
ॐ टंकायुधायै नमः
ॐ टंकारकरुणायै नमः
ॐ टस्यै नमः
ॐ ठकुरायै नमः
ॐ ठत्करायै नमः 680
ॐ ठान्यै नमः
ॐ डिण्डीरवसनायै नमः
ॐ ढलायै नमः
ॐ ढण्ढानिलमय्यै नमः
ॐ ढण्डायै नमः
ॐ ढणत्कारकरायै नमः
ॐ ढसायै नमः
ॐ णान्तायै नमः
ॐ णीलायुधायै नमः
ॐ णवर्णाक्षरभूषणायै नमः 690
ॐ तरुण्यै नमः
ॐ तुन्दिलायै नमः
ॐ तोन्दायै नमः
ॐ तामस्यै नमः
ॐ तामसप्रियायै नमः
ॐ ताम्राननायै नमः
ॐ ताम्रकरायै नमः
ॐ ताम्राम्बरधरायै नमः
ॐ तुलायै नमः
ॐ तापत्रयहरायै नमः 700
ॐ ताप्यै नमः
ॐ तैलासक्तायै नमः
ॐ तिलोत्तमायै नमः
ॐ स्थाणुपत्न्यै नमः
ॐ स्थल्यै नमः
ॐ स्थूलायै नमः
ॐ स्थित्यै नमः
ॐ स्थैर्यधरायै नमः
ॐ स्थुलायै नमः
ॐ दन्तिन्यै नमः 710
ॐ दन्तुरायै नमः
ॐ दार्व्यै नमः

ॐ देवक्यै नमः
ॐ देवनायिकायै नमः
ॐ दमिन्यै नमः
ॐ दण्ड्यायै नमः
ॐ दण्डहस्तायै नमः
ॐ दुरानत्यै नमः
ॐ दुर्वारायै नमः
ॐ दुर्गत्यै नमः 720
ॐ द्राक्ष्यै नमः
ॐ द्राक्षायै नमः
ॐ द्राविडवासिन्यै नमः
ॐ दूरस्थायै नमः
ॐ दुन्दुभिध्वानायै नमः
ॐ दरदायै नमः
ॐ दरनाशिन्यै नमः
ॐ दुःखघ्न्यै नमः
ॐ द्रुतगायै नमः
ॐ अदुष्टायै नमः 730
ॐ दयायै नमः
ॐ दाम्भिक्यनाशिन्यै नमः
ॐ दुर्गन्धनाशिन्यै नमः
ॐ दूर्वायै नमः
ॐ धर्म्यायै नमः
ॐ धर्मप्रस्वै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ धनदायै नमः
ॐ धातृवल्लभायै नमः
ॐ धनुर्धरायै नमः 740
ॐ धनुर्वल्ल्यै नमः
ॐ धानुष्कवरदायिन्यै नमः
ॐ धूमाल्यै नमः
ॐ धूम्रवदनायै नमः
ॐ धूमश्र्यै नमः
ॐ धूम्रलोचनायै नमः
ॐ ध्येयायै नमः
ॐ नलिन्यै नमः
ॐ नर्तक्यै नमः
ॐ नान्तायै नमः 750
ॐ नंगायै नमः
ॐ नलिनलोचनायै नमः
ॐ निर्मलायै नमः
ॐ निगमाचारायै नमः
ॐ निम्नगायै नमः
ॐ नगजायै नमः
ॐ निम्यै नमः
ॐ नीलग्रीवायै नमः
ॐ निरीहायै नमः
ॐ नीपोपवनवासिन्यै नमः 760
ॐ निरंजनायै नमः
ॐ निद्रालवे नमः
ॐ नीरवासिन्यै नमः
ॐ नटिन्यै नमः
ॐ नाट्यनिरतायै नमः
ॐ नवनीतप्रियायै नमः
ॐ अनिलायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ निराकारायै नमः
ॐ निर्लेपायै नमः 770
ॐ नित्यवल्लभायै नमः
ॐ नम्रायै नमः
ॐ पद्मावत्यै नमः
ॐ पद्मकरायै नमः
ॐ पुत्रदायै नमः
ॐ पुत्रवत्सलायै नमः

ॐ परायै नम:
ॐ पुर्यै नम:
ॐ पाठायै नम:
ॐ पीनश्रोत्रायै नम: 780
ॐ पुलोमजायै नम:
ॐ पुष्पिण्यै नम:
ॐ पुस्तककरायै नम:
ॐ पटवे नम:
ॐ पाठीनवाहनायै नम:
ॐ पापघ्न्यै नम:
ॐ पाल्यै नम:
ॐ पल्ल्यै नम:
ॐ परमसुन्दर्यै नम:
ॐ पिशाच्यै नम: 790
ॐ पिशाचघ्न्यै नम:
ॐ पानपात्रधरायै नम:
ॐ पुटायै नम:
ॐ पूर्णिमायै नम:
ॐ पंचम्यै नम:
ॐ पौत्र्यै नम:
ॐ पुरूरव-वरप्रदायै नम:
ॐ पंचयज्ञायै नम:
ॐ पंचशर्यै नम:
ॐ पंचाशतिमनुप्रियायै नम: 800
ॐ पांचाल्यै नम:
ॐ पंचमुद्रायै नम:
ॐ पूजायै नम:
ॐ पूर्णमनोरथायै नम:
ॐ पम्पायै नम:
ॐ प्राज्यायै नम:
ॐ फलिन्यै नम:
ॐ फलदात्र्यै नम:
ॐ फल्गुहस्तायै नम:
ॐ फणिप्रियायै नम: 810
ॐ फिरंगहायै नम:
ॐ स्फीतमत्यै नम:
ॐ स्फीत्यै नम:
ॐ स्फीतिमत्यै नम:
ॐ स्फुरायै नम:
ॐ बलमायायै नम:
ॐ बलस्तुत्यायै नम:
ॐ बिल्वसेनायै नम:
ॐ बलाबलायै नम:
ॐ बगलेश्वरपूज्यायै नम: 820
ॐ बलिन्यै नम:
ॐ बलवर्धिन्यै नम:
ॐ बुद्धमातायै नम:
ॐ बौद्धमत्यै नम:
ॐ बद्धायै नम:
ॐ बन्धनमोचिन्यै नम:
ॐ ब्राह्मण्यै नम:
ॐ बीजरूपायै नम:
ॐ भगिन्यै नम:
ॐ भगमालायै नम: 830
ॐ भगलिंगामृतद्रवायै नम:
ॐ भीमेश्वर्यै नम:
ॐ भेरुण्डायै नम:
ॐ भगेश्यै नम:
ॐ भगसर्पिण्यै नम:
ॐ भगलिंगस्थितायै नम:
ॐ भग्यायै नम:
ॐ भाग्यदायै नम:
ॐ भगमालिन्यै नम:
ॐ मत्तायै नम: 840

ॐ मनोहरायै नमः
ॐ मीनायै नमः
ॐ मैनाकजनन्यै नमः
ॐ मुर्यै नमः
ॐ मुरल्यै नमः
ॐ मानव्यै नमः
ॐ महस्विजनमोदितायै नमः
ॐ मत्तमातंगगायै नमः
ॐ माद्र्यै नमः
ॐ मरालगतिरंचलायै नमः 850
ॐ महातथ्यायै नमः
ॐ महालयायै नमः
ॐ मह्यै नमः
ॐ मलायै नमः
ॐ महाघोरायै नमः
ॐ यज्ञेश्वरेश्वर्यै नमः
ॐ यज्ञायै नमः
ॐ यजुर्वेदप्रियाश्रितायै नमः
ॐ यशोवत्यै नमः
ॐ यतिस्थायै नमः 860
ॐ यतात्मायै नमः
ॐ यतिवल्लभायै नमः
ॐ यवन्यै नमः
ॐ यौवनस्थायै नमः
ॐ यवायै नमः
ॐ यक्षजनाश्रयायै नमः
ॐ यज्ञसूत्रप्रदायै नमः
ॐ ज्येष्ठायै नमः
ॐ यज्ञभ्वै नमः
ॐ यूपमूलिन्यै नमः 870
ॐ रंजितायै नमः
ॐ राजपत्न्यै नमः
ॐ राजसूयफलप्रदायै नमः
ॐ रजोवत्यै नमः
ॐ रजश्चित्रायै नमः
ॐ राज्यदायै नमः
ॐ राज्यवर्धिन्यै नमः
ॐ राज्ञ्यै नमः
ॐ रात्रिंचरेशान्यै नमः
ॐ रोगघ्न्यै नमः 880
ॐ त्रिपुरेश्वर्यै नमः
ॐ लुलितायै नमः
ॐ लतिकायै नमः
ॐ लम्पिकायै नमः
ॐ लाप्यायै नमः
ॐ लोपायै नमः
ॐ ललनलालसायै नमः
ॐ लाटीरद्रुमवासायै नमः
ॐ पाटीरद्रुमवर्तिन्यै नमः
ॐ लंकायै नमः 890
ॐ ललज्जटाजूटायै नमः
ॐ लंघितायै नमः
ॐ लोकसुन्दर्यै नमः
ॐ लोकेशवरदायै नमः
ॐ लेयायै नमः
ॐ लयकर्त्र्यै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ लीनायै नमः
ॐ वेत्रधारिण्यै नमः
ॐ वेद्यै नमः 900
ॐ विलग्नायै नमः
ॐ वाण्यै नमः
ॐ वीणायै नमः
ॐ वेणवे नमः

ॐ वनेश्वर्यै नमः
ॐ वन्दमानायै नमः
ॐ ववर्णाढ्यायै नमः
ॐ वाराह्यै नमः
ॐ वीरमातृकायै नमः
ॐ वरधारिण्यै नमः 910
ॐ शंखिन्यै नमः
ॐ शंखवलयायै नमः
ॐ शंखायुधधरायै नमः
ॐ शमायै नमः
ॐ शशिमण्डलमध्यस्थायै नमः
ॐ शशिलोचनायै नमः
ॐ शीतलाम्बुनिवासिन्यै नमः
ॐ शमिन्यै नमः
ॐ श्मशानस्थायै नमः
ॐ श्मशाननिलयेश्वर्यै नमः 920
ॐ शम्पिन्यै नमः
ॐ सिन्धवे नमः
ॐ सूत्रधरायै नमः
ॐ सत्रायै नमः
ॐ समस्तकुलचारिण्यै नमः
ॐ सप्तम्यै नमः
ॐ सात्त्विक्यै नमः
ॐ सत्त्वायै नमः
ॐ सत्रस्थायै नमः
ॐ असुरसूदिन्यै नमः 930
ॐ सुरेश्वर्यै नमः
ॐ सम्पदाद्यायै नमः
ॐ समस्ताचलचारिण्यै नमः
ॐ समदायै नमः
ॐ संमित्यै नमः
ॐ सवनायै नमः
ॐ सवनेश्वर्यै नमः
ॐ साम्यायै नमः
ॐ हंस्यै नमः
ॐ हरप्रियायै नमः 940
ॐ हास्यायै नमः
ॐ हरिनेत्रायै नमः
ॐ हराम्बिकायै नमः
ॐ हेषायै नमः
ॐ हटेश्वर्यै नमः
ॐ हेरायै नमः
ॐ हलिन्यै नमः
ॐ हलदायिन्यै नमः
ॐ हेहायै नमः
ॐ हाहारवायै नमः 950
ॐ हालायै नमः
ॐ हालाहलहताशयायै नमः
ॐ होत्र्यै नमः
ॐ क्षमायै नमः
ॐ क्षेमप्रदायै नमः
ॐ क्षामायै नमः
ॐ क्षौमाम्बरधरायै नमः
ॐ क्षयायै नमः
ॐ क्षित्यै नमः
ॐ क्षीरप्रियायै नमः 960
ॐ क्षितिभृत्तनयायै नमः
ॐ क्षुधायै नमः
ॐ क्षत्रियायै नमः
ॐ क्षेत्रायै नमः
ॐ क्षपायै नमः
ॐ क्ष:बीजमण्डितायै नमः
ॐ क्षकाराक्षरमातृकायै नमः
ॐ ह्रीं दुं बीजमण्डितायै नमः



ॐ दुर्गार्तिशमन्यै नमः
ॐ दुर्गापद्विनिवारिण्यै नमः 970
ॐ दुर्गमच्छेदिन्यै नमः
ॐ दुर्गसाधिन्यै नमः
ॐ दुर्गनाशिन्यै नमः
ॐ दुर्गतोद्धारिण्यै नमः
ॐ दुर्गनिहन्त्र्यै नमः
ॐ दुर्गमापहायै नमः
ॐ दुर्गमज्ञानदायै नमः
ॐ दुर्गदैत्यलोकदवानलायै नमः
ॐ दुर्गमायै नमः
ॐ दुर्गमालोकायै नमः 980
ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः
ॐ दुर्गमार्गप्रदायै नमः
ॐ दुर्गमविद्यायै नमः
ॐ दुर्गमाश्रितायै नमः
ॐ दुर्गमज्ञानसंस्थानायै नमः
ॐ दुर्गमध्यानभासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमोहायै नमः
ॐ दुर्गमगायै नमः
ॐ दुर्गमार्थस्वरूपिण्यै नमः
ॐ दुर्गमासुरसंहन्त्र्यै नमः 990
ॐ दुर्गमायुधधारिण्यै नमः
ॐ दुर्गमांग्यै नमः
ॐ दुर्गमतायै नमः
ॐ दुर्गम्यायै नमः
ॐ दुर्गमेश्वर्यै नमः
ॐ दुर्गभीमायै नमः
ॐ दुर्गभामायै नमः
ॐ दुर्गभायै नमः
ॐ दुर्गदारिण्यै नमः
ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः 1000

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

तन्त्रराज-तन्त्रोक्तं श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्तोत्रम्

श्रीदुर्गा दुर्गतिहरा परिपूर्णा परात्परा। सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता भवभारविनाशिनी॥
कार्यकारणनिर्मुक्ता लीलाविग्रहधारिणी। सर्वशृंगारशोभाढ्या सर्वायुधसमन्विता॥
सूर्यकोटिसहस्त्राभा चन्द्रकोटिनिभानना। गणेशकोटिलावण्या विष्णुकोट्यरिमर्दिनी॥
दावाग्निकोटिनलिनी रुद्रकोट्युग्ररूपिणी। समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला॥
आकाशकोटिविस्तारा यमकोटिभयंकरी। मेरुकोटिसमुच्छ्राया गणकोटिसमृद्धिदा॥
नमस्या प्रथमा पूज्या सकला अखिलाम्बिका। महाप्रकृति सर्वात्मा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी॥
अजन्या जननी जन्या महावृषभवाहिनी। कर्दमी काश्यपी पद्मा सर्वतीर्थनिवासिनी॥
भीमेश्वरी भीमनादा भवसागर-तारिणी। सर्वदेव-शिरोरत्ननिर्घृष्ट-चरणाम्बुजा॥
स्मरतां सर्वपापघ्नी सर्वकारण-कारणा। सर्वार्थसाधिका माता सर्वमंगल-मंगला॥
पृच्छा पृश्नी महाज्योतिररण्या वनदेवता। भीतिर्भूतिर्मतिः शक्तिस्तुष्टिः पुष्टिरुषा धृतिः॥ 10॥

उत्तानहस्ता सम्भूतिः वृक्षवल्कलधारिणी। महाप्रभा महाचण्डी दीप्तास्या उग्रलोचना॥
महामेघप्रभा विद्या मुक्तकेशी दिगम्बरी। हसन्मुखी साट्टहासा लोलजिह्वा महेश्वरी॥
मुण्डाली अभया दक्षा महाभीमा वरोद्यता। खड्गमुण्डधरा मुक्तिः कुमुदाज्ञाननाशिनी॥
अम्बालिका महावीर्या शारदा कनकेश्वरी। परमात्मा परा क्षिप्ता शूलिनी परमेश्वरी॥
महाकालसमासक्ता शिवाशतनिनादिनी। घोरांगी मुण्डमुकुटा श्मशानास्थिकृताऽऽसना॥
महाश्मशाननिलया मणिमण्डपमध्यगा। पानपात्रधृता खर्वा पन्नगी परदेवता॥
सुगन्धा तारिणी तारा भवानी वनवासिनी। लम्बोदरी महादीर्घा जटिनी चन्द्रशेखरा॥
पराऽम्बा परमाराध्या परेशी ब्रह्मरूपिणी। देवसेना विश्वगर्भा अग्निजिह्वा चतुर्भुजा॥
महादंष्ट्रा महारात्रिर्नीला नीलसरस्वती। दक्षजा भारती रम्भा महामंगलचण्डिका॥
रुद्रजा कौशिकी पूता यमघण्टा महाबला। कादम्बिनी चिदानन्दा क्षेत्रस्था क्षेत्रकर्षिणी॥ 20॥

पञ्चप्रेतसमारूढा ललिता त्वरिता सती। भैरवी रूपसम्पन्ना मदनानल नाशिनी॥
जातापहारिणी वार्त्ता मातृका अष्टमातृका। अनंगमेखला षष्ठी हृल्लेखा पर्वतात्मजा॥
वसुन्धरा धरा धारा विधात्री विन्ध्यवासिनी। अयोध्या मथुरा काञ्ची महैश्वर्या महोदरी॥
कोमला मानदा भव्या मत्स्योदरी महालया। पाशांकुशधनुर्बाणा लावण्याम्बुधिचन्द्रिका॥
रक्तवासा रक्तलिप्ता रक्तगन्धविनोदिनी। दुर्लभा सुलभा मत्स्या माधवी मण्डलेश्वरी॥
पार्वती अमरी अम्बा महापातकनाशिनी। नित्यतृप्ता निराभासा अकुला रोगनाशिनी॥
कनकेशी पञ्चरूपा नूपुरा नीलवाहिनी। जगन्मयी जगद्धात्री अरुणा वारुणी जया॥
हिंगुला कोटरा सेना कालिन्दी सुरपूजिता। रामेश्वरी देवगर्भा त्रिस्रोता अखिलेश्वरी॥
ब्रह्माणी वैष्णवी रौद्री महाकालमनोरमा। गारुडी विमला हंसी योगिनी रतिसुन्दरी॥
कपालिनी महाचण्डा विप्रचित्ता कुमारिका। ईशानी ईश्वरी ब्राह्मी माहेशी विश्वमोहिनी॥ 30॥

एकवीरा कुलानन्दा कालपुत्री सदाशिवा। शाकम्भरी नीलवर्णा महिषासुरमर्दिनी॥
कामदा कामिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी। उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता प्रभा दंष्ट्रा मनोजवा॥
कल्पवृक्षतलासीना श्रीनाथगुरुपादुका। अव्याजकरुणामूर्तिरानन्दघन-विग्रहा॥
अनघा शांकरी दिव्या पवित्रा सर्वसाक्षिणी॥
धनुर्बाणगदाहस्ता आयुधा आयुधान्विता। लोकोत्तरा पद्मनेत्रा योगमाया जटेश्वरी॥
उग्रचण्डा श्रीचाण्डाली मोहिनी चण्डविक्रमा। चिन्तनीया महादीर्घा अमृता मृतबान्धवी॥
पिनाकधारिणा शिप्रा धात्री त्रिजगदीश्वरी। रक्तपा रुधिराक्तांगी रक्तखर्परधारिणी॥
त्रिपुरा त्रिकूटा नित्या श्रीनित्या भुवनेश्वरी। हव्या कव्या लोकगतिर्गायत्री परमा गतिः॥
विश्वधात्री लोकमाता पञ्चमी पितृतृप्तिदा। कामेश्वरी कामरूपा कामबीजा कलात्मिका॥
ताटंकशोभिनी वन्द्या नित्यक्लिन्ना कुलेश्वरी। भूवरेशी महाराज्ञी अक्षरा अक्षरात्मिका॥40॥

अनादिबोधा सर्वज्ञा सर्वा सर्वतरा शुभा। इच्छाज्ञानक्रियाशक्तिः सर्वाढ्या शर्वपूजिता॥
श्रीमहासुन्दरी रम्या राज्ञी श्रीपरमाम्बिका। राजराजेश्वरी भद्रा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी॥
त्रिसन्ध्या इन्दिरा ऐन्द्री अजिता अपराजिता। भेरुण्डा दण्डिनी घोरा इन्द्राणी च तपस्विनी॥
शैलपुत्री चण्डघण्टा कूष्माण्डा ब्रह्मचारिणी। कात्यायनी स्कन्दमाता कालरात्रिः शुभंकरा॥
महागौरी सिद्धिदात्री नवदुर्गा नभःस्थिता। सुनन्दा नन्दिनी कृत्या महाभागा महोज्ज्वला॥
महाविद्या ब्रह्मविद्या दामिनी तापहारिणी। उत्थिता उत्पला बाध्या प्रमोदा शुभदोत्तमा॥
अतुल्या अमूला पूर्णा हंसारूढा हरिप्रिया। सुलोचना विरूपाक्षी विद्युद्गौरी महार्हणा॥
काकध्वजा शिवाराध्याशूर्पहस्ता कृशांगिनी। शुभ्रकेशी कोटराक्षी विधवा पतिघातिनी॥
सर्वसिद्धिकरी दुष्टा क्षुधार्त्ता शिवभक्षिणी। वर्गात्मिका त्रिकालज्ञा त्रिवर्गा त्रिदशार्चिता॥
श्रीमती भोगिनी काशी अविमुक्ता गयेश्वरी। सिद्धाम्बिका सुवर्णाक्षी कोलाम्बा सिद्धयोगिनी॥50॥

देवज्योतिःसमुद्भूता देवज्योतिस्वरूपिणी। अच्छेद्या अद्भुता तीव्रा व्रतस्था व्रतचारिणी॥
सिद्धिदा धूमिनी तन्वी भ्रामरी रक्तदन्तिका। स्वस्तिका गगना वाणी जाह्नवी भवभामिनी॥
पतिव्रता महामोहा मुकुटा मुकुटेश्वरी। गुह्येश्वरी गुह्यमाता चण्डिका गुह्यकालिका॥
प्रसूतिराकुतिश्चित्ता चिन्तादेवाहुतिस्त्रयी॥
अनुमतिः कुहू राका सिनीवाली त्विषा रसा। सुवर्चा वर्चला शार्वी विकेशा कृष्णपिंगला॥
स्वप्नावती चित्रलेखा अन्नपूर्णा चतुष्टया। पुण्यलभ्या वरारोहा श्यामांगी शशिशेखरा॥
हरणी गौतमी मेना यादवा पूर्णिमा अमा। त्रिखण्डा त्रिमुण्डा मान्या भूतमाता भवेश्वरी॥
भोगदा स्वर्गदा मोक्ष सुभगा यज्ञरूपिणी। अन्नदा सर्वसम्पत्तिः संकटा सम्पदा स्मृति॥
वैदूर्यमुकुटा मेधा सर्वविद्येश्वरेश्वरी। ब्रह्मानन्दा ब्रह्मदात्री मृडानी कैटभेश्वरी॥
अरुन्धती अक्षमाला अस्थिरा ग्राम्यदेवता। वर्णेश्वरी वर्णमाता चिन्तापूर्णी विलक्षणा॥ 60॥

त्रिक्षणा मंगला काली वैराटी पद्ममालिनी। अमला विकटा मुख्या अविज्ञेया स्वयम्भुवा॥
ऊर्जा तारावती वेला मानवी च चतु:स्तनी। चतुर्नेत्रा चतुर्हस्ता चतुर्दन्ता चतुर्मुखी॥
शतरूपा बहुरूपा अरूपा विश्वतोमुखी। गरिष्ठा गुर्विणी गुर्वी व्याप्या भौमी च भाविनी॥
अजाता सुजाता व्यक्ता अचला अक्षया क्षमा। मारिषा धर्मिणी हर्षा भूतधात्री च धेनुका॥
अयोनिजा अजा साध्वी शची क्षेमा क्षयंकरी। बुद्धिर्लज्जा महासिद्धि: शाक्री शान्ति क्रियावती॥
प्रज्ञा प्रीति: श्रुति: श्रद्धा स्वाहा कान्तिर्वपु: स्वधा। उन्नति: सन्नति: ख्याति: शुद्धि: स्थितिर्मनस्विनी॥
उद्यमा वीरिणी क्षान्तिर्मार्कण्डेयी त्रयोदशी। प्रसिद्धा प्रतिष्ठा व्याप्ता अनसूयाऽऽकृतिर्यमा॥
महाधारा महावीरा भुजंगी वलयाकृति:। हरसिद्धा सिद्धकाली सिद्धाम्बा सिद्धपूजिता॥
परानन्दा पराप्रीति: परातुष्टि: परेश्वरी। वक्रेश्वरी चतुर्वक्त्रा अनाथा शिवसाधिका॥
नारायणी नादरूपा नादिनी नर्त्तकी नटी। सर्वप्रदा पञ्चवक्त्रा कामिला कामिका शिवा ॥ 70 ॥

दुर्गमा दुरतिक्रान्ता दुर्ध्येया दुष्परिग्रहा। दुर्जया दानवी देवी दैत्यघ्नी दैत्यतापिनी॥
ऊर्जस्वती महाबुद्धि: रटन्ती सिद्धदेवता। कीर्तिदा प्रवरा लभ्या शरण्या शिवशोभना॥
सन्मार्गदायिनी शुद्धा सुरसा रक्तचण्डिका। सुरूपा द्रविणा रक्ता विरक्ता ब्रह्मवादिनी॥
अगुणा निर्गुणा गुण्या त्रिगुणा त्रिगुणात्मिका। उड्डीयाना पूर्णशैला कामस्था च जलन्धरी॥
श्मशानभैरवी कालभैरवी कुलभैरवी। त्रिपुरा भैरवी देवीभैरवी वीरभैरवी॥
श्रीमहाभैरवी देवी सुखदानन्दभैरवी। मुक्तिदा भैरवी देवी ज्ञानदानन्दभैरवी॥
दाक्षायणी दक्षयज्ञनाशिनी नगनन्दिनी। राजपुत्री राजपूज्या भक्तिवश्या सनातनी॥
अच्युता चर्चिका माया षोडशी सुरसुन्दरी। चक्रेशी चक्रिणी चक्रा चक्रराजनिवासिनी॥
नायिका यक्षिणी बोधा बोधिनी मुण्डकेश्वरी। बीजरूपा चन्द्रभागा कुमारी कपिलेश्वरी॥
वृद्धाऽतिवृद्धा रसिका रसना पाटलेश्वरी। माहेश्वरी महाऽऽनन्दा प्रबला अबला बला ॥80॥

व्याघ्राम्बरी महेशानी शर्वाणी तामसी दया। धरणी धारिणी तृष्णा महामारी महामारी दुरत्यया॥
रंगिनी टंकिनी लीला महावेगा मखेश्वरी। जयदा जित्वरा जेत्री जयश्री जयशालिनी॥
नर्मदा यमुना गंगा वेन्ना वेणी दृषद्वती। दशार्णा अलका सीता तुंगभद्रा तरंगिणी॥
मदोत्कटा मयूराक्षी मीनाक्षी मणिकुण्डला। सुमहा महतां सेव्या मायूरी नारसिंहिका॥
बगला स्तम्भिनी पीता पूजिता शिवनायिका। वेदवेद्या महारौद्री वेदबाह्या गतिप्रदा॥
सर्वशास्त्रमयी आर्या अवाङ्मनसगोचरा। अग्निज्वाला महाज्वाला प्रज्वला दीप्तजिह्विका॥
रञ्जनी रमणी रुद्रा रमणीया प्रभञ्जनी। वरिष्ठा विशिष्टा शिष्टा श्रेष्ठा निष्ठा कृपावती॥
ऊर्ध्वमुखी विशालास्या रुद्रभार्या भयंकरी। सिंहपृष्ठसमासीना शिवताण्डवदर्शिनी॥
हैमवती पद्मगन्धा गन्धेश्वरी भवप्रिया। अणुरूपा महासूक्ष्मा प्रत्यक्षा च मखान्तका॥
सर्वविद्या रक्तनेत्रा बहुनेत्रा अनेत्रका। विश्वम्भरा विश्वयोनि: सर्वाकारा सुदर्शना ॥90॥

कृष्णाजिनधरा देवी उत्तरा कन्दवासिनी। प्रकृष्टा प्रहृष्टा हृष्टा चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणी॥
विश्वेदेवी महामुण्डा पञ्चमुण्डाधिवासिनी। प्रसादसुमुखी गूढा सुमुखा सुमुखेश्वरी॥
तत्पदा सत्पताऽत्यर्था प्रभावती दयावती। चण्डदुर्गा चण्डी देवी वनदुर्गा वनेश्वरी॥
ध्रुवेश्वरी ध्रुवा ध्रौव्या ध्रुवाराध्या ध्रुवागतिः। सच्चिदा सच्चिदानन्दा आपोमयी महासुखा॥
वागीशी वाग्भवाऽऽकण्ठवासिनी वह्निसुन्दरी। गणनाथप्रिया ज्ञानगम्या च सर्वलोकगा॥
प्रीतिदा गतिदा प्रेया ध्येया ज्ञेया भयापहा। श्रीकरी श्रीधरी सुश्री श्रीविद्या श्रीविभावनी॥
श्रीयुता श्रीमतां सेव्या श्रीमूर्तिः स्त्री स्वरूपिणी। अनृता सुनृता सेव्या सर्वलोकोत्तमोत्तमा॥
जयन्ती चन्दना गौरी गर्जिनी गगनोपमा। छिन्नमस्ता महामत्ता रेणुका वनशंकरी॥
ग्राहिका ग्रासिनी देवभूषणा च कपर्दिनी। सुमतिस्तपती स्वस्था हृदिस्था मृगलोचना॥
मनोहरा वज्रदेहा कुलेशी कामचारिणी। रक्ताभा निद्रिता निद्रा रक्तांगी रक्तलोचना ॥100॥

कुलचण्डा चण्डवक्त्रा चण्डोग्रा चण्डमालिनी। रक्तचण्डी रुद्रचण्डी चण्डाक्षी चण्डनायिका॥
व्याघ्रास्या शैलजा भाषा देवार्था रणरंगिणी। विल्वपत्रकृतावासा तरुणी शिवमोहिनी॥
स्थाणुप्रिया करालास्या गुणदा लिंगवासिनी। अविद्या ममता अज्ञा अहन्ता अशुभा कृशा॥
महिषघ्नी सु दुष्प्रेक्ष्या तमसा भवमोचनी। पुरहुता सुप्रतिष्ठा रजनी इष्टदेवता॥
दुःखिनी कातरा क्षीणा गोमती त्र्यम्बकेश्वरा। द्वारावती अप्रमेया अव्ययामितविक्रमा॥
मायावती कृपामूर्तिः द्वारेशी द्वारवासिनी। तेजोमयी विश्वकामा मन्मथा पुष्करावती॥
चित्रा देवी महाकाली कालहन्त्री क्रियामयी। कृपामयी कृपाश्रेष्ठा करुणा करुणामयी॥
सुप्रभा सुव्रता माध्वी मधुघ्नी मुण्डमर्दिनी। उल्लासिनी महोल्लासा स्वामिनी शर्मदायिनी॥
श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी प्रसन्ना प्रसन्नानना। स्वप्रकाश महा भूमा ब्रह्मरूपा शिवंकरी॥
शक्तिदा शान्तिदा कर्मफलदा श्रीप्रदायिनी। प्रियदा धनदा श्रीदा मोक्षदा ज्ञानदा भवा ॥110॥

भूमानन्दकरी भूमा प्रसीद श्रुतिगोचरा। रक्तचन्दनसिक्तांगी सिन्दुरांकितभालिनी॥
स्वच्छन्दशक्तिर्गहना प्रजावती सुखावहा। योगेश्वरी योगाराध्या महात्रिशूलधारिणी॥
राज्येशी त्रिपुरा सिद्धा महाविभवशालिनी। ह्रींकारी शंकरी शर्वपंकजस्था शतश्रुति॥
निस्तारिणी जगन्माता जगदम्बा जगद्धिता। साष्टांगप्रणतिप्रीता भक्तानुग्रहकारिणी॥
शरणागता दीनार्तपरित्राणपरायणा। निराश्रयाश्रया दीनतारिणी भक्तवत्सला॥
दीनाम्बा दीनशरणा भक्तानामभयंकरी। कृताञ्जलिनमस्कारा स्वयम्भु कुसुमार्चिता॥
कौलतर्पणसम्प्रीता स्वयं भाति विभातिनी। शतशीर्षानन्तशीर्षा श्रीकण्ठार्धशरीरिणी॥
जयध्वनिप्रिया कुलभास्करी कुलसाधिका। अभयवरदहस्ता सर्वानन्दा च सम्विदा॥
महीयसी महामूर्तिः सती राज्ञी भयार्त्तिहा। ब्रह्ममयी विश्वपीठा प्रज्ञाना महिमामयी॥
सिंहारूढा वृषारूढा अश्वारूढा अधीश्वरी। वराभयकरा सर्ववरेण्या विश्वविक्रमा॥120॥
विश्वाश्रया महाभूतिः श्रीप्रज्ञादिस्त्रगन्विता ॥

स्कन्द-पुराणोक्तं श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्तोत्रम्

ॐ शिवाऽथोमा रमा शक्तिरनन्ता निष्कलाऽमला। शान्ता माहेश्वरी नित्या शाश्वता परमा क्षमा॥
अचिन्त्या केवलानन्ता शिवात्मा परमात्मिका। अनादिरव्यया शुद्धा सर्वज्ञा सर्वगाऽचला॥
एकानेकविभागस्था मायातीता सुनिर्मला। महामाहेश्वरी सत्या महादेवी निरञ्जना॥
काष्ठा सर्वान्तरस्थाऽपि चिच्छक्तिश्चात्रिलालिता। सर्वा सर्वात्मिका विश्वा ज्योतिरूपाऽक्षराऽमृता॥
शान्ता प्रतिष्ठा सर्वेशा निवृत्तिरमृतप्रदा। व्योममूर्तिर्व्योमसंस्था व्योमधाराऽच्युताऽतुला॥
अनादिनिधनाऽमोघा कारणात्मकलाकुला। ऋतुप्रथमजाऽनाभिरमृतात्मसमाश्रया॥
प्राणेश्वरप्रिया नम्या महामहिषघातिनी। प्राणेश्वरी प्राणरूपा प्रधानपुरुषेश्वरी॥
सर्वशक्तिकलाऽकामा महिषेष्टविनाशिनी। सर्वकार्यनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी॥
अंगदादिधरा चैव तथा मुकुटधारिणी। सनातनी महानन्दाऽऽकाशयोनिस्तथोच्यते॥
चित्प्रकाशस्वरूपा च महायोगेश्वरेश्वरी। महामाया सदुष्पारा मूलप्रकृतिरीशिका ॥10॥

संसारयोनिः सकला सर्वशक्तिसमुद्भवा। संसारपारा दुर्वारा दुर्निरीक्षा दुरासदा॥
प्राणशक्तिश्च सेव्या च योगिनी परमाकला। महाविभूतिर्दुर्दर्शा मूलप्रकृतिसम्भवा॥
अनाद्यनन्तविभवा परार्था पुरुषारणिः। सर्गस्थित्यन्तकृच्चैव सुदुर्वाच्या दुरत्यया॥
शब्दगम्या शब्दमाया शब्दाख्यानन्दविग्रहा। प्रधानपुरुषातीता प्रधानपुरुषात्मिका॥
पुराणी चिन्मयापुंसामिष्टदा पुष्टिरूपिणी। पूतान्तरस्था कूटस्था महापुरुषसंज्ञिता॥
जन्ममृत्युजरातीता सर्वशक्तिस्वरूपिणी। वाञ्छाप्रदाऽनवच्छिन्नप्रधानानुप्रवेशिनी॥
क्षेत्रज्ञाऽचिन्त्यशक्तिस्तु प्रोच्यतेऽव्यक्तलक्षणा। मलापवर्जिताऽनादिमाया त्रितयतत्त्विका॥
प्रीतिश्च प्रकृतिश्चैव गुहावासा तथोच्यते। महामाया नगोत्पन्ना तामसी च ध्रुवा तथा॥
व्यक्ताऽव्यक्तात्मिका कृष्णा रक्ता शुक्ला ह्यकारणा। प्रोच्यते कार्यजननी नित्यप्रसवधर्मिणी॥
सर्गप्रलयमुक्ता च सृष्टिस्थित्यन्तधर्मिणी। ब्रह्मगर्भा चतुर्विंशस्वरूपा पद्मवासिनी ॥20॥

अच्युताह्लादिका विद्युद्ब्रह्मयोनिर्महालया। महालक्ष्मी समुद्भावभावितात्मामहेश्वरी॥
महाविमानमध्यस्था महानिद्रा सकौतुका। सर्वार्थधारिणी सूक्ष्मा ह्यविद्धा परमार्थदा॥
अनन्तरूपाऽनन्तार्था तथा पुरुषमोहिनी। अनेकानेकहस्ता च कालत्रयविवर्जिता॥
ब्रह्मजन्मा हरप्रीता मतिर्ब्रह्मशिवात्मिका। ब्रह्मेशविष्णुसम्पूज्या ब्रह्माख्या ब्रह्मसंज्ञिता॥
व्यक्ता प्रथमजा ब्राह्मी महारात्रीः प्रकीर्तिता। ज्ञानस्वरूपा वैराग्यरूपा ह्यैश्वर्यरूपिणी॥
धर्मात्मिका ब्रह्ममूर्तिः प्रतिश्रुतपुमर्थिका। अपांयोनिः स्वयम्भूता मानसी तत्त्वसम्भवा॥
ईश्वरस्य प्रिया प्रोक्ता शंकरार्धशरीरिणी। भवानी चैव रुद्राणी महालक्ष्मीस्तथाम्बिका॥
महेश्वरसमुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। सर्वेश्वरी सर्ववन्द्या नित्यमुक्ता सुमानसा॥
महेन्द्रोपेन्द्रनमिता शंकरीशानुवर्तिनी। ईश्वरार्धासनगता महेश्वरपतिव्रता॥
संसारशोषिणी चैव पार्वती हिमवत्सुता। परमानन्ददात्री च गुणाग्र्यायोगदा तथा ॥ 30॥

ज्ञानमूर्तिश्च सावित्री लक्ष्मी: श्री: कमला तथा। अनन्तगुणगम्भीरा ह्युरोनीलमणिप्रभा॥
सरोजनिलया गंगा योगिध्येयाऽसुरार्दिनी। सरस्वती सर्वविद्या जगज्ज्येष्ठा समुंगला॥
वाग्देवी वरदा वर्या कीर्ति: सर्वार्थसाधिका। वागीश्वरी ब्रह्मविद्या महाविद्या सुशोभना॥
ग्राह्यविद्या वेदविद्या धर्मविद्याऽत्मभाविता। स्वाहा विश्वम्भरा सिद्धि: साध्या मेधा धृति: कृति:॥
सुनीति: संस्कृतिश्चैव कीर्तिता नरवाहिनी। पूजाविभाविनी सौम्या भोग्यभाग् भोगदायिनी॥
शोभावती शांकरी च लोलामालाविभूषिता। परमेष्ठिप्रिया चैव त्रिलोकीसुन्दरी माता॥
नन्दा सन्ध्या कामधात्री महादेवी सुसात्विका। महामहिषदर्पघ्नी पद्ममालाऽघहारिणी॥
विचित्रमुकुटा रामा कामदाता प्रकीर्तिता। पिताम्बरधरा दिव्या विभूषणविभूषिता॥
दिव्याख्या सोमवदना जगत्संसृष्टिवर्जिता। निर्यन्त्रा यन्त्रवाहस्था नन्दिनी रुद्रकालिका॥
आदित्यवर्णा कौमारी मयूरवरवाहिनी। पद्मासनगता गौरी महाकाली सुरार्चिता ॥40॥

अदितिर्नियता रौद्री पद्मगर्भा विवाहना। विरूपाक्षा केशिवाहा गुहापुरनिवासिनी॥
महाफलाऽनवद्यांगी कामरूपा सरिद्वरा। भास्वद्रूपा मुक्तिदात्री प्रणतक्लेशभञ्जना॥
कौशिकी गोमिनी रात्रिस्त्रिदशारिविनाशिनी। बहुरूपा सुरूपा च विरूपा रूपवर्जिता॥
भक्तार्तिशमना भव्या भवभावविनाशिनी। सर्वज्ञानपरीतांगी सर्वासुरविमर्दिका॥
पिकस्वनी सामगीता भवांकनिलया प्रिया। दीक्षा विद्याधरी दीप्ता महेन्द्राहितपातिनी॥
सर्वदेवमया दक्षा समुद्रान्तरवासिनी। अकलंका निराधारा नित्यसिद्धा निरामया॥
कामधेनुबृहद्गर्भा धीमती मौननाशिनी। नि:संकल्पा निरातंका विनया विनयप्रदा॥
ज्वालामाला सहस्राढ्या देवदेवी मनोमया। सुभगा सुविशुद्धा च वसुदेवसमुद्भवा॥
महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी भक्तिगम्या परावरा। ज्ञानज्ञेया परातीता वेदान्तविषया मति:॥
दक्षिणा दाहिका दह्या सर्वभूतहृदिस्थिता। योगमाया विभागज्ञा महामोहा गरीयसी ॥50॥

सन्ध्या सर्वसमुद्भूता ब्रह्मवृक्षाश्रियाऽदिति:। बीजांकुरसमुद्भूता महाशक्तिर्महामति:॥
ख्याति: प्रज्ञावती संज्ञा महाभोगीन्द्रशायिनी। हिंकृति: शंकरी शान्तिर्गन्धर्वगणसेविता॥
वैश्वानरी महाशूला देवसेना भवप्रिया। महारात्री परानन्दा शची दु:स्वप्ननाशिनी॥
ईड्या जया जगद्धात्री दुर्विज्ञेया सुरूपिणी। गुहाम्बिका गणोत्पन्ना महापीठा मरुत्सुता॥
हव्यवाहा भवानन्दा जगद्योनि: प्रकीर्तिता। जगन्माता जगन्मृत्युर्जरातीता च बुद्धिदा॥
सिद्धिदात्री रत्नगर्भा रत्नगर्भाश्रया परा। दैत्यहन्त्री स्वेष्टदात्री मंगलैकसुविग्रहा॥
पुरुषान्तर्गता चैव समाधिस्था तपस्विनी। दिविस्थिता त्रिनेत्रा च सर्वेन्द्रियमनाधृति:॥
सर्वभूतहृदिस्था च तथा संसारतारिणी। वेद्या ब्रह्मविवेद्या च महालीला प्रकीर्तिता॥
ब्राह्मणिबृहती ब्राह्मी ब्रह्मभूताऽघहारिणी। हिरण्मयी महादात्री संसारपरिवर्तिका॥
सुमालिनी सुरूपा च भास्विनी धारिणी तथा। उन्मूलिनी सर्वसभा सर्वप्रत्ययसाक्षिणी ॥60॥

सुसौम्या चन्द्रवदना ताण्डवासक्तमानसा। सत्त्वशुद्धिकरी शुद्धा मलत्रयविनाशिनी॥
जगत्रयी जगन्मूर्तिस्त्रिमूर्तिरमृताश्रया। विमानस्था विशोका च शोकनाशिन्यनाहता॥
हेमकुण्डलिनी काली पद्मवासा सनातनी। सदाकीर्तिः सर्वभूतशया देवी सतां प्रिया॥
ब्रह्ममूर्तिकला चैव कृत्तिका कञ्जमालिनी। व्योमकेशा क्रियाशक्तिरिच्छाशक्तिः परागतिः॥
क्षोभिका खण्डिकाभेद्या भेदाभेदविवर्जिता। अभिन्ना भिन्नसंस्थाना वशिनी वंशधारिणी॥
गुह्यशक्तिर्गुह्यतत्वा सर्वदा सर्वतोमुखी। भगिनी च निराधारा निराहारा प्रकीर्तिता॥
निरंकुशपदोद्भूता चक्रहस्ता विशोधिका। स्रग्विणी पद्मसम्भेदकारिणी परिकीर्तिता॥
परावरविधानज्ञा महापुरुषपूर्वजा। परावरज्ञा विद्या च विद्युज्जिह्वा जिताश्रया॥
विद्यामयी सहस्राक्षी सहस्रवदनात्मजा। सहस्ररश्मिःसत्त्वस्था महेश्वरपदाश्रया॥
ज्वालिनी सन्मया व्याप्ता चिन्मया पद्मभेदिका। महाश्रया महामन्त्रा महादेवमनोरमा ॥70॥

व्योमलक्ष्मीः सिंहरथा चेकितानाऽमितप्रभा। विश्वेश्वरी भगवती सकला कालहारिणी॥
सर्ववेद्या सर्वभद्रा गुह्या गूढा गुहारणी। प्रलया योगधात्री च गंगा विश्वेश्वरी तथा॥
कामदा कनका कान्ता कञ्जगर्भप्रभा तथा। पुण्यदा कालकेशा च भोक्त्री पुष्करिणी तथा॥
सुरेश्वरी भूतिदात्री भूतिभूषा प्रकीर्तिता। पञ्चब्रह्मसमुत्पन्ना परमार्थार्थविग्रहा॥
वर्णोदया भानुमूर्तिर्वाग्विज्ञेया मनोजवा। मनोहरा महोरस्का तामसी वेदरूपिणी॥
वेदशक्तिर्वेदमाता वेदविद्याप्रकाशिनी। योगेश्वरेश्वरी माया महाशक्तिर्महामयी॥
विश्वान्तःस्था वियन्मूर्तिर्भार्गवी सुरसुन्दरी। सुरभिर्नन्दिनी विद्या नन्दगोपतनूद्भवा॥
भारती परमानन्दा परावरविभेदिका। सर्वप्रहरणोपेता काम्या कामेश्वरेश्वरी॥
अनन्तानन्दविभवा हृल्लेखा कनकप्रभा। कूष्माण्डा धनरत्नाढ्या सुगन्धा गन्धदायिनी॥
त्रिविक्रमपदोद्भूता चतुरास्या शिवोदया। सुदुर्लभा धनाध्यक्षा धन्या पिंगललोचना ॥80॥

शान्ता प्रभास्वरूपा च पंकजायतलोचना। इन्द्राक्षी हृदयान्तःस्था शिवा माता च सत्क्रिया॥
गिरिजा च सुगूढा च नित्यपुष्टा निरन्तरा। दुर्गा कात्यायनी चण्डी चन्द्रिका कान्तविग्रहा॥
हिरण्यवर्णा जगती जगद्यन्त्रप्रवर्तिका। मन्दाराद्रिनिवासा च शारदा स्वर्णमालिनी॥
रत्नमाला रत्नगर्भा व्युष्टिर्विश्वप्रमाथिनी। पद्मानन्दा पद्मनिभा नित्यपुष्टा कृतोद्भवा॥
नारायणी दुष्टशिक्षा सूर्यमाता वृषप्रिया। महेन्द्रभगिनी सत्या सत्यभाषा सुकोमला॥
वामा च पञ्चतपसां वरदात्री प्रकीर्तिता। वाच्यवर्णेश्वरी विद्या दुर्जया दुरतिक्रमा॥
कालरात्रिर्महावेगा वीरभद्रप्रिया हिता। भद्रकाली जगन्माता भक्तानां भद्रदायिनी॥
कराला पिंगलाकारा कामभेत्त्री महामना। यशश्विनी यशोदा च षडध्वपरिवर्तिका॥
शंखिनी पद्मिनी संख्या सांख्ययोगप्रवर्तिका। चैत्रादिर्वत्सरारूढा जगत्सम्पूरणीन्द्रजा॥
शुम्भघ्नी खेचराराध्या कम्बुग्रीवा बलीडिता। खगारूढा महैश्वर्या सुपद्मनिलया तथा ॥90॥

विरक्ता गरुडस्था च जगतीहृद्गुहाश्रया। शुम्भादिमथना भक्तहृद्गह्वरनिवासिनी॥
जगत्रयारणी सिद्धसंकल्पा कामदा तथा। सर्वविज्ञानदात्री चानल्पकल्मषहारिणी॥
सकलोपनिषद्गम्या दुष्टदुष्प्रेक्ष्यसत्तमा। सद्वृता लोकसंव्याप्ता तुष्टिः पुष्टिः क्रियावती॥
विश्वामरेश्वरी चैव भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। शिवाधृता लोहिताक्षी सर्पमालाविभूषणा॥
निरानन्दा त्रिशूलासिधनुर्बाणादिधारिणी। अशेषध्येयमूर्तिश्च देवतानां च देवता॥
वराम्बिका गिरेः पुत्री निशुम्भविनिपातिनी। सुवर्णा स्वर्णलसिताऽनन्तवर्णा सदाधृता॥
शांकरी शान्तहृदया अहोरात्रविधायिका। विश्वगोप्त्री गूढरूपा गुणपूर्णा च गार्ग्यजा॥
गौरी शाकम्भरी सत्यसन्धा सन्ध्यात्रयीधृता। सर्वपापविनिर्मुक्ता सर्वबन्धविवर्जिता॥
सांख्ययोगसमाख्याता अप्रमेया मुनीडिता। विशुद्धसुकुलोद्भूता बिन्दुनादसमादृता॥
शम्भुवामांकगा चैव शशितुल्यनिभानना। वनमालाविराजन्ती अनन्तशयनादृता ॥100॥

नरनारायणोद्भूता नारसिंही प्रकीर्तिता। दैत्यप्रमाथिनी शंखचक्रपद्मगदाधरा॥
संकर्षणसमुत्पन्ना अम्बिका सज्जनाश्रया। सवृता सुन्दरी चैव धर्मकामार्थदायिनी॥
मोक्षदा भक्तिनिलया पुराणपुरुषादृता। महाविभूतिदाऽऽराध्या सरोजनिलयाऽसमा॥
अष्टादशभुजाऽनादिर्नीलोत्पलदलाक्षिणी। सर्वशक्तिसमारूढा धर्माधर्मविवर्जिता॥
वैराग्यज्ञाननिरता निरालोका निरिन्द्रिया। विचित्रगहनाधारा शाश्वतस्थानवासिनी॥
ज्ञानेश्वरी पीतचेला वेदवेदांगपारगा। मनस्विनी मन्युमाता महामन्युसमुद्भवा॥
अमन्युरमृतास्वादा पुरन्दरपरिष्टुता। अशोच्या भिन्नविषया हिरण्यरजतप्रिया॥
हिरण्यजननी भीमा हेमाभरणभूषिता। विभ्राजमाना दुर्ज्ञेया ज्योतिष्टोमफलप्रदा॥
महानिद्रासमुत्पत्तिरनिद्रा सत्यदेवता। दीर्घा ककुद्मिनी पिंगजटाधारा मनोज्ञधीः॥
महाश्रया रमोत्पन्ना तमःपारे प्रतिष्ठिता। त्रितत्त्वमाता त्रिविधा सुसूक्ष्मा पद्मसंश्रया ॥110॥

शान्त्यतीतकलातीतविकारा श्वेतचेलिका। चित्रमाया शिवज्ञानस्वरूपा दैत्यमाथिनी॥
काश्यपी कालसर्पाभवेणिका शास्त्रयोनिका। त्रयीमूर्तिः क्रियामूर्तिश्चतुर्वर्गा च दर्शिनी॥
नारायणी नरोत्पन्ना कौमुदी कान्तिधारिणी। कौशिकी ललिता लीला परावरविभाविनी॥
वरेण्याऽद्भुतमहात्म्या वडवा वामलोचना। सुभद्रा चेतनाराध्या शान्तिदा शान्तिवर्धिनी॥
जयादिशक्तिजननी शक्तिचक्रप्रवर्तिका। त्रिशक्तिजननी जन्या षट्सूत्रपरिवर्णिता॥
सुधौतकर्मणाऽऽराध्या युगान्तदहनात्मिका। संकर्षिणी जगद्धात्री कामयोनीः किरीटिनी॥
ऐन्द्री त्रैलोक्यनमिता वैष्णवी परमेश्वरी। प्रद्युम्नजननी बिम्बसमोष्ठी पद्मलोचना॥
मदोत्कटा हंसगतिः प्रचण्डा चण्डविक्रमा। वृषाधीशा परात्मा च विन्ध्यापर्वतवासिनी॥
हिमवन्मेरुनिलया कैलासपुरवासिनी। चाणूरहन्त्री नीतिज्ञा कामरूपा त्रयीतनुः॥
व्रतस्नाता धर्मशीला सिंहासननिवासिनी। वीरभद्रादृता वीरा महाकालसमुद्भवा ॥120॥

विद्याधरार्चिता सिद्धसाध्याराधितपादुका। श्रद्धात्मिका पावनी च मोहिनी अचलात्मिका॥
महाद्भुता वारिजाक्षी सिंहवाहनगामिनी। मनीषिणी सुधावाणी वीणावादनतत्परा॥
श्वेतवाहनिषेव्या च लसन्मतिररुन्धती। हिरण्याक्षी तथा चैव महानन्दप्रदायिनी॥
वसुप्रभा सुमाल्याप्तकन्धरा पंकजानना। परावरा वरारोहा सहस्रनयनार्चिता॥
श्रीरूपा श्रीमती श्रेष्ठा शिवनाम्नी शिवप्रिया। श्रीपदा श्रितकल्याणा श्रीधरार्धशरीरिणी॥
श्रीकलाऽनन्तदृष्टिश्च ह्यक्षुद्राऽऽरातिसूदनी। रक्तबीजनिहन्त्री च दैत्यसंगविमर्दिनी॥
सिंहारूढा सिंहिकास्या दैत्यशोणितपायिनी। सुकीर्तिसहिताच्छिन्नसंशया रसवेदिनी॥
गुणाभिरामा नागारिवाहना निर्जरार्चिता। नित्योदिता स्वयंज्योतिः स्वर्णकाया प्रकीर्तिता॥
वज्रदण्डांकिता चैव तथाऽमृतसञ्जीविनी। वज्रच्छन्ना देवदेवी वरवज्रस्वविग्रहा॥
मांगल्या मंगलात्मा च मालिनी माल्यधारिणी। गन्धर्वी तरुणी चान्द्री खड्गायुधधरा तथा ॥130॥

सौदामिनी प्रजानन्दा तथा प्रोक्ता भृगूद्भवा। एकानंगा च शास्त्रार्थकुशला धर्मचारिणी॥
धर्मसर्वस्ववाहा च धर्माधर्मविनिश्चया। धर्मशक्तिर्धर्ममया धार्मिकानां शिवप्रदा॥
विधर्मा विश्वधर्मज्ञा धर्मार्थान्तरविग्रहा। धर्मवर्ष्मा धर्मपूर्वा धर्मपारंगतान्तरा॥
धर्मोपदेष्ट्री धर्मात्मा धर्मगम्या धराधरा। कपालिनी शाकलिनी कलाकलितविग्रहा॥
सर्वशक्तिविमुक्ता च कर्णिकारधराऽक्षरा। कंसप्राणहरा चैव युगधर्मधरा तथा॥
युगप्रवर्तिका प्रोक्ता त्रिसन्ध्याध्येयविग्रहा। स्वर्गापवर्गदात्री च तथा प्रत्यक्षदेवता॥
आदित्या दिव्यगन्धा च दिवाकरनिभप्रभा। पद्मासनगता प्रोक्ता खड्गबाणशरासना॥
शिष्टा विशिष्टा शिष्टेष्टा शिष्टश्रेष्ठप्रपूजिता। शतरूपा शतावर्ता वितता रासमोदिनी॥
सूर्येन्दुनेत्रा प्रद्युम्नजननी सुष्ठुमायिनी। सूर्यान्तरस्थिता चैव सत्प्रतिष्ठतविग्रहा॥
निवृत्ता प्रोच्यते ज्ञानपारगा पर्वतात्मजा। कात्यायनी चण्डिका च चण्डी हैमवती तथा॥140॥

दाक्षायणी सती चैव भवानी सर्वमंगला। धूम्रलोचनहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥
योगनिद्रा योगभद्रा समुद्रतनया तथा। देवप्रियंकरी शुद्धा भक्तभक्तिप्रवर्धिनी॥
त्रिनेत्रा चन्द्रमुकुटा प्रमथार्चितपादुका। अर्जुनाभीष्टदात्री च पाण्डवप्रियकारिणी॥
कुमारलालनासक्ता हरबाहूपधानिका। विघ्नेशजननी भक्तविघ्नस्तोमप्रहारिणी॥
सुस्मितेन्दुमुखि नम्या जयाप्रियसखी तथा। अनादिनिधना प्रेष्ठा चित्रमाल्यानुलेपना॥
कोटिचन्द्रप्रतीकाशा कूटजालप्रमाथिनी। कृत्याप्रहारिणी चैव मारणोच्चाटनी तथा॥
सुरासुरप्रवन्द्यांघ्रिर्मोहघ्नी ज्ञानदायिनी। षड्वैरिनिग्रहकरी वैरिविद्राविणी तथा॥
भूतसेव्या भूतदात्री भूतपीडाविमर्दिका। नारदस्तुतचारित्रा वरदेशा वरप्रदा॥
वामदेवस्तुता चैव कामदा सोमशेखरा। दिक्पालसेविता भव्या भामिनी भावदायिनी॥
स्त्रीसौभाग्यप्रदात्री च भोगदा रोगनाशिनी। व्योमगा भूमिगा चैव मुनिपूज्यपदाम्बुजा।
वनदुर्गा च दुर्बोधा महादुर्गा प्रकीर्तिता ॥ 150॥

रुद्रयामल-तन्त्रोक्तं कुमारीसहस्त्रनामस्तोत्रम्

ॐ कुमारी कौशिकी काली कुरुकुल्ला कुलेश्वरी। कनकाभा कांचनाभा कमला कालकामिनी।।
कपालिनी कालरूपा कौमारी कुलपालिका। कान्ता कुमारकान्ता च कारणा करिगामिनी।।
कन्धकान्ता कौलकान्ता कृतकर्मफलप्रदा। कार्याकार्यप्रिया कक्षा कंसहन्त्री कुरुक्षया।।
कृष्णकान्ता कालरात्रिः कर्णेषुधारिणी करा। कामहा कपिला काला कालिका कुरुकामिनी।।
कुरुक्षेत्रप्रिया कौला कुन्ती कामातुरा कचा। कलंजभक्षा कैकेयी काकपुच्छध्वजा कला।।
कमला कमलाक्षी च कमलाननकामिनी। कामधेनुस्वरूपा च कामहा काममर्दिनी।।
कामदा कामपूज्या च कामातीता कलावती। भैरवी कारणाढ्या च कैशोरी कुशलांगला।।
कम्बुग्रीवा कृष्णनिभा कामराजप्रियाकृतिः। कंकणालंकृता कंका केवला काकिनी किरा।।
किरातिनी काकभक्षा करालवदना कृशा। केशिनी केशिहा केशा कासाम्बष्ठा करिप्रिया।।
कविनाथस्वरूपा च कटुवाणी कटुस्थिता। कोटरा कोटराक्षी च करनाटकवासिनी।।10।।



कटकस्था काष्ठसंस्था कन्दर्पा केतकीप्रिया। केलिप्रिया कम्बलस्था कालदैत्यविनाशिनी॥
केतकीपुष्पशोभाढ्या कर्पूरपूर्णजिह्विका। कर्पूराकरकाकोला कैलासगिरिवासिनी॥
कुशासनस्था कादम्बा कुञ्जरेशी कुलानना। खर्बा खड्गधरा खड्गा खलहा खलबुद्धिदा॥
खंजना खररूपा च क्षाराम्लतिक्तमध्यगा। खेलना खेटककरा खरवाक्या खरोत्कटा॥
खद्योतचंचला खेला खद्योता खगवाहिनी। खेटकस्था खलाखस्था खेचरी खेचरप्रिया॥
खचरा खरप्रेमा खलाढ्या खचरानना। खेचरेशी खरोग्रा च खेचरप्रियभाषिणी॥
खर्जूरासवसंमत्ता खर्जूरफलभोगिनी। खातमध्यस्थिता खाता खाताम्बुपरिपूरिणी॥
ख्यातिः ख्यातजलानन्दा खुलना खंजनागतिः। खल्वा खलतरा खारी खरोद्वेगनिकृन्तिनी॥
गगनस्था गणातीता गभीरनादिनी गया। गंगा गभीरा गौरी च गणनाथप्रिया गतिः॥
गुरुभक्ता ग्वालिहीना गेहिनी गोपिनी गिरा। गोगणस्था गाणपत्या गिरिजा गिरिपूजिता॥ 20॥

गिरिकान्ता गणस्था च गिरिकन्या गणेश्वरी। गाधिराजसुता ग्रीवा गुर्वी गुर्व्यम्बशांकरी॥
गन्धर्वकामिनी गीता गायत्री गुणदा गुणा। गुग्गुलुस्था गुरुपूज्या गीतानन्दप्रकाशिनी॥
गयासुरप्रियागेहा गवाक्षजालमध्यगा। गुरुकन्या गुरुपत्नी गहना गुरुनागिनी॥
गुल्फवायुस्थिता गुल्फा गर्दभा गर्दभप्रिया। गुह्या गुह्यगणस्था च गरिमा गौरिका गुदा॥
गुदोर्ध्वस्था च गलिता गणिका गोलका गला। गान्धर्वी गाननगरी गन्धर्वगणपूजिता॥
घोरनादा घोरमुखी घोरा घर्मनिवारिणी। घनदा घनवर्णा च घनवाहनवाहना॥
घर्घरध्वनिचपला घोटा घटपटी घटी। घटिता घटना घोना घनरूपा घनेश्वरी॥
घुण्यातीता घर्घरा च घोराननविमोहिनी। घोरनेत्रा घनरुचा घोरभैरवकन्यका॥
घाताघातकहा घात्या घ्राणाघ्राणेशवायवी। घोरान्धकारसंस्था च घसना घस्वरा घरा॥
घोटकेस्था घोटका च घोटकेश्वरवाहना। घननीलमणिश्यामा घर्घरेश्वरकामिनी॥30॥

ङकारकूटसम्पन्ना ङकारचक्रगामिनी। ङकारी ङसंशा चैव ङीपनीता ङकारिणी॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चतुरा चारुहासिनी। चारुचन्द्रमुखी चैव चलंगमगतिप्रिया॥
चंचला चपला चण्डी चेकिताना चरुस्थिता। चलिता चानना चार्वी चारुभ्रमरनादिनी॥
चौरहा चन्द्रनिलया चान्द्री चन्द्रपुरस्थिता। चक्रकौला चक्ररूपा चक्रस्था चक्रसिद्धिदा॥
चक्रिणी चक्रहस्ता च चक्रनाथकुलप्रिया। चक्राभेद्या चक्रकुला चक्रमण्डलशोभिता॥
चक्रेश्वरप्रिया चेला चेलाजिनकुशोत्तरा। चतुर्वेदस्थिता चण्डा चन्द्रकोटिसुशीतला॥
चतुर्गुणा चन्द्रवर्णा चातुरी चतुरप्रिया। चक्षुःस्था चक्षुवसतिश्चणका चणकप्रिया॥
चार्वंगी चारुनिलया चलदम्बुजलोचना। चर्वरीशा चारुमुखी चारुदन्ता चरस्थिता॥
चसकस्थासवा चेता चेतःस्था चैत्रपूजिता। चाक्षुषी चन्द्रमलिनी चन्द्रहासमणिप्रभा॥
छलस्था छुद्ररूपा च छत्रच्छायाछलस्थिता। छलज्ञा छेश्वराछाया छाया छिन्नशिवा छला॥40॥

छत्राचामरशोभाढ्या छत्रिणी छत्रधारिणी। छिन्नातीता छिन्नमस्ता छिन्नकेशा छलोद्भवा॥
छलहा छलदा छाया छन्ना छन्नजनप्रिया। छलछिन्ना छद्मवती छद्मसद्मनिवासिनी॥
छद्मगन्धा छदाछन्ना छद्मवेशी छकारिका। छगला रक्तभक्षा च छगलामोदरक्तपा॥
छगलण्डेशकन्या च छगलण्डकुमारिका। छुरिका छुरिककरा छुरिकारिनिवाशिनी॥
छिन्ननाशा छिन्नहस्ता छोणलोला छलोदरी। छलोद्वेगा छांगबीजमाला छांगवरप्रदा॥
जटिला जठरश्रीदा जरा जज्ञप्रिया जया। जन्तुस्था जीवजा जीवा जयदा जीवयोगदा॥
जयिनी जामलस्था च जामलोद्भवनायिका। जामलप्रियकन्या च जामलेशी जवाप्रिया॥
जवाकोटिसमप्रख्या जवापुष्पप्रिया जना। जलस्था जगविषया जरातीता जलस्थिता॥
जीवहा जीवकन्या च जनार्दनकुमारिका। जतुका जलपूज्या च जगन्नाथादिकामिनी॥
जीर्णांगी जीर्णहीना च जीमूतात्यंतशोभिता। जामातृ जयदा ज्येष्ठा जृम्भणास्त्रादिधारिणी॥ 50॥

जघन्या जारजाप्रीता जगदानन्दवर्द्धिनी। जमलार्जुनदर्पघ्नी जमलार्जुनभंजिनी॥
जयित्री जगदानन्दा जामलोल्लाससिद्धिदा। जपमाला जाप्यसिद्धिर्जपयज्ञप्रकाशिनी॥
जाम्बुवती जाम्बवतकन्यका जनवा जपा। जवाहन्त्री जगद्बुद्धिर्ज्जगत्कर्तृ जगद्गतिः॥
जननी जीवनी जाया जगन्माता जनेश्वरी। झंकला झंकमध्यस्था झणत्कारस्वरूपिणी॥
झणत्झणद्वह्निरूपा झननाझन्दरीश्वरी। झटिताक्षा झरा झंझा झर्झरा झरकन्यका॥
झणत्कारी झरा झन्ना झकारमालयावृता। झंकरी झर्झरी झल्ली झल्वेश्वरनिवासिनी॥
ञकारी ञकिराती च ञकारबीजमालिनी। ञनयोऽन्ता ञकारान्ता ञकारपरमेश्वरी॥
ञान्तबीजपुटाकारा ञेकला ञैकगामिनी। ञैकनेला ञस्वरूपा ञहारा ञहरीतकी॥
टुन्टुनी टंकहस्ता च टान्तवर्गा टलावती। टपला टापबालाख्या टंकारध्वनिरूपिणी॥
टलाती टाक्षरातीता टित्कारादिकुमारिका। टंकास्त्रधारिणी टाना टमोटार्णलभाषिणी॥ 60॥

टंकारनिधना टाका टंकारणविमोहिनी। टंकारध्वनिमोहा च टिटीखेचरनादिनी॥
ठठंकारी ठाठरूपा ठकारबीजकारणा। डमरूप्रियवाद्या च डामरस्था डबीजिका॥
डान्तवर्गा डमरुका डरस्था डोरडामरा। डवर्गता डलातीता डकारकेश्वरी डुता॥
ढार्द्धनारीश्वरा ढामा ढक्कारी ढलना ढला। ढकेस्था ढेश्वरसुता ढेमनाभावा ढोनना॥
णोमाकान्तेश्वरी णान्तवर्गस्था णतुनावती। णनोमा णांककल्याणी णाक्षवीणाक्षबीजिका॥
तुलसी तन्तुसूक्ष्माख्या तारल्या तैलगन्धिका। तपस्या तापससुता तारिणी तरुणी तला॥
तन्त्रस्था तारकब्रह्मस्वरूपा तन्तुमध्यगा। तालभक्षा त्रिधामूर्त्तिस्तारका तैलभक्षिका॥
तारोग्रा तालमाला च तकरा तिन्तिडीप्रिया। तपसः तालसन्दर्भा तर्जयन्ती कुमारिका॥
तोकाचारा तलोद्वेगा तक्षका तक्षकप्रिया। तक्षकालंकृता तोषा तावद्रूपा तलप्रिया॥
तलास्त्रधारिणी तापा तपसां फलदायिनी। तलप्रहारनिरता तलारिगणनाशिनी॥ 70॥

तूला तौली तोलका च तलस्था तलपालिका। तरुणा तप्तबुद्धिस्थास्तप्तोग्रधारिणी तपा।।
तन्त्रप्रकाशकरणी तन्त्रार्थदायिनी तुषा। तुषारकिरणांगी च तुषारांशुसमप्रभा।।
तैलमार्गाभिसूता च तन्त्रसिद्धिफलप्रदा। ताम्रपर्णा ताम्रकेशा ताम्रपात्रप्रिया तमा।।
तमोगुणप्रिया तोला तक्षकारिनिवारिणी। तोषयुक्ता तमायाची तमषोढेश्वरप्रिया।।
तुलना तुल्यरुचिरा तुल्यबुद्धिस्त्रिधामतिः। तक्रभक्षा तालसिद्धिः तत्रस्थास्तत्रगामिनी।।
तलया तैलभा ताली तन्त्रगोपनतत्परा। तन्त्रमन्त्रप्रकाशा च त्रिशरेणुस्वरूपिणी।।
त्रिंशदर्थप्रिया तुष्टा तुष्टिस्तुष्टजनप्रिया। थकारकूटदण्डीशा थदण्डीशप्रियाऽथवा।।
थकाराक्षररूढांगी थान्तवर्गा थकारिका। थान्ता थमीश्वरी थाका थकारबीजमालिनी।।
दक्षदामप्रिया दोषा दोषजालवनाश्रिता। दशा दशनघोरा च देवी दासप्रिया दया।।
दैत्यहंत्रीपरा दैत्या दैत्यानां मर्दिनी दिशा। दान्ता दान्तप्रिया दासा दामना दीर्घकेशिका।। 80।।

दशना रक्तवर्णा च दरीग्रहनिवासिनी। देवमाता च दुर्लभा च दीर्घांगा दासकन्यका।।
दशनश्री दीर्घनेत्रा दीर्घनासा च दोषहा। दमयन्ती दलस्था च द्वेष्यहन्त्री दशस्थिता।।
दैशेषिका दिशिगता दशनास्त्रविनाशिनी। दारिद्र्यहा दरिद्रस्था दरिद्रधनदायिनी।।
दन्तुरा देशभाषा च देशस्था देशनायिका। द्वेषरूपा द्वेषहन्त्री द्वेषारिगणमोहिनी।।
दामोदरस्था दलना दलानां बलदायिनी। दिग्दर्शना दर्शनस्था दर्शनप्रियवादिनी।।
दामोदरप्रिया दान्ता दामोदरकलेवरा। द्राविणी द्रविणी दक्षा दक्षकन्या दलदृढा।।
दृढासनादासशक्तिर्द्वन्द्वयुद्धप्रकाशिनी। दधिप्रिया दधिस्था च दधिमंगलकारिणी।।
दर्पहा दर्पदा दृप्ता दर्भपुण्यप्रिया दधिः। दर्भस्था द्रुपदसुता द्रौपदी द्रुपदप्रिया।।
धर्मचिन्ता धनाध्यक्षा धनेश्वरवरप्रदा। धनहा धनदा धन्वी धनुर्हस्ता धनुःप्रिया।।
धरणी धैर्यरूपा च धनस्था धनमोहिनी। धोरा धीरप्रियाधारा धराधारणतत्परा।। 90।।

धान्यदा धान्यबीजा च धर्माधर्मस्वरूपिणी। धाराधरस्था धन्या च धर्मपुंजनिवासिनी।।
धनाढ्यप्रियकन्या च धन्यलोकनिशेविता। धर्मार्थकाममोक्षांगी धर्मार्थकाममोक्षदा।।
धराधरा धुरोणा च धवला धवलामुखी। धरा च धामरूपा च ध्रुवा ध्रौव्या ध्रुवप्रिया।।
धनेशी धारणाख्या च धर्मनिन्दाविनाशिनी। धर्मतेजोमयी धर्म्या धैर्याग्रभर्गमोहिनी।।
धारणा धौतवसना धत्तूरफलभोगिनी। नारायणी नरेन्द्रस्था नारायणकलेवरा।।
नरनारायणप्रीता नीता नयनमोहिता। नित्या नापितकन्या च नयनस्था नरप्रिया।।
नाम्नी नामप्रिया नारा नारायणसुता नरा। नवीननायकप्रीता नव्या नवफलप्रिया।।
नवीनकुसुमप्रीता नवीना नीरजानुजा। नारी निम्बस्थितानन्दा नन्दिनी नन्दकारिका।।
नवपुष्पमहाप्रीता नवपुष्पसुगन्धिका। नन्दनस्था नन्दकन्या नन्दमोक्षप्रदायिनी।।
नमिता नामभेदा च नाम्नार्त्तवनमोहिनी। नवबुद्धिप्रियानेका नाकस्था नामकन्यका।।100।।

निन्दाहीना नवोल्लासा नाकस्थानप्रदायिनी। निम्बवृक्षस्थिता निम्बा नानावृक्षनिवासिनी।।
नाश्यातीता नीलवर्णा नीला नीलसरस्वती। नभ:स्था नायकप्रीता नायकप्रियकामिनी।।
नैववर्णा निराहारा निरोहा निरजप्रिया। निम्ननाभिप्रियाकारा नरेन्द्रहस्तपूजिता।।
नलस्थिता नलप्रीता नलराजकुमारिका। परेश्वरी परानन्दा परापरविभेदिका।।
परमा परचक्रस्था पार्वती पर्वतप्रिया। परमेशी पर्वमाला पुष्पमाल्यप्रिया परा।।
परा प्रिया प्रीतिदात्री प्रीति: प्रथमकामिनी। प्रथमा प्रथमा प्रीता पुष्पगन्धप्रिया परा।।
पौष्यी पानरता पीना पीनस्तनसुशोभना। परमानरता पुंसां पाशहस्ता पशुप्रिया।।
पललानन्दरसिका पलालधूमरूपिणी। पलाशपुष्पसंकाशा पलाशपुष्पमालिनी।।
प्रेमभूता पद्ममुखी पद्मरागसुमालिनी। पद्ममाला पापहरा पतिप्रेमविलासिनी।।
पंचाननमनोहारी पंचवक्त्रप्रकाशिनी। फलमूलाशना फाली फलदा फाल्गुनप्रिया।।110।।

फलनाथप्रिया फल्ली फल्गुकन्या फलोन्मुखी। फेत्कारीतन्त्रमुख्या च फेत्कारगणपूजिता।।
फेरवी फेरवसुता फलभोगोद्भवा फला। फलप्रिया फलाशक्ता फाल्गुनानन्ददायिनी।।
फालभोगोत्तरा फेला फुलाम्भोजनिवासिनी। वसुदेवगृहस्था च वासवी वीरपूजिता।।
विषभक्षा बुधसुता ब्लुंकारी ब्लूवरप्रदा। ब्राह्मी बृहस्पतिसुता वाचस्पतिवरप्रदा।।
वेदाचारा वेद्यपरा व्यासवक्त्रस्थिता विभा। बोधज्ञा वौषडाख्या च वंशीवंदनपूजिता।।
वज्रकान्ता वज्रगतिर्बदरीवंशविवर्द्धिनी। भारती भवरश्रीदा भवपत्नी भवात्मजा।।
भवानी भाविनी भीमा भिषग्भार्या भुविस्थिता। भूर्भुव:स्व:स्वरूपा च भृशार्त्ता भेकनादिनी।।
भौती भंगप्रिया भंगभंगहा भंगहारिणी। भर्ता भगवती भाग्या भगीरथनमस्कृता।।
भगमाला भूतनाथेश्वरी भार्गवपूजिता। भृगुवंशा भीतिहरा भूमिर्भुजगहारिणी।।
भालचन्द्रा भल्वबाला भवभूतिर्विभूतिदा। मकरस्था मत्तगतिर्मदमत्ता मदप्रिया।। 120।।

मदिराष्टादशभुजा मदिरा मत्तगामिनी। मदिरासिद्धिदा मध्या मदान्तर्गतिसिद्धिदा।।
मीनभक्षा मीनरूपा मुद्रा मुद्गप्रियागति :। मुषला मुक्तिदा मूर्त्ता मूकीकरणतत्परा।।
मृषार्त्ता मृगतृष्णा च मेषभक्षणतत्परा। मैथुनानन्दसिद्धिश्च मैथुनानलसिद्धिदा।।
महालक्ष्मीर्भैरवी च महेन्द्रपीठनायिका। मन:स्था माधवी मुख्या महादेवमनोरमा।।
यशोदा याचना यास्या यमराजप्रिया यमा। यशोराशिविभूषांगी यतिप्रेमकलावती।।
रमणी रामपत्नी च रिपुहा रीतिमध्यगा। रुद्राणी रूपदा रूपा रूपसुन्दरधारिणी।।
रेत:स्था रेतसप्रीता रेत:स्थाननिवासिनी। रेन्द्रादेवसुतारेदा रिपुवर्गान्तकप्रिया।।
रोमावलीन्द्रजननी रोमकूपजगत्पति:। रौप्यवर्णा रौद्रवर्णा रौप्यालंकारभूषणा।।
रंगिणा रंगरागस्था रणवह्निकुलेश्वरी। लक्ष्मी: लांगलहस्ता च लांगली कुलकामिनी।।
लिपिरूपा लीढपादा लतातन्तुस्वरूपिणी। लिम्पती लेलिहा लोला लोमशप्रियसिद्धिदा।।130।।



लौकिकी लौकिकीसिद्धिर्लंकानाथकुमारिका। लक्ष्मणा लक्ष्मीहीना च लप्रिया लार्णमध्यगा।।
विवसा वसनावेशा विवस्यकुलकन्यका। वातस्था वातरूपा च वेलमध्यनिवासिनी।।
श्मशानभूमिमध्यस्था श्मशानसाधनप्रिया। शवस्था परसिद्ध्यर्थी शववक्षसि शोभिता।।
शरणागतपाल्या च शिवकन्या शिवप्रिया। षट्चक्रभेदिनी षोढान्यासजालदृढानना।।
सन्ध्या सरस्वती सूक्ष्मा सूर्यगा शारदा सती। हरिप्रिया हरहालालावण्यस्था क्षमा क्षुधा।।
क्षेत्रज्ञा सिद्धिदात्री च अम्बिका चापराजिता। आद्या इन्द्रप्रिया ईशा उमा ऊढा ऋतुप्रिया।।
सुतुण्डा स्वरबीजान्ता हरिवेशादिसिद्धिदा। एकादशीव्रतस्था च ऐन्द्री ओषधिसिद्धिदा।।
औपकारी अंशरूपा अस्त्रबीजप्रकाशिनी। इत्येतत् कथितं नाथ कुमारीणां सुमंगलम्।। 138।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

कुमारी-सहस्त्रनामावलिः

ॐ कुमार्यै नमः
ॐ कौशिक्यै नमः
ॐ काल्यै नमः
ॐ कुरुकुल्लायै नमः
ॐ कुलेश्वर्यै नमः
ॐ कनकाभायै नमः
ॐ कांचनाभायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कालकामिन्यै नमः
ॐ कपालिन्यै नमः 10
ॐ कालरूपायै नमः
ॐ कौमार्यै नमः
ॐ कुलपालिकायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कुमारकान्तायै नमः
ॐ कारणायै नमः
ॐ करिगामिन्यै नमः
ॐ कन्धकान्तायै नमः
ॐ कौलकान्तायै नमः
ॐ कृतकर्म-फलप्रदायै नमः 20
ॐ कार्याकार्यप्रियायै नमः
ॐ कक्षायै नमः
ॐ कंसहन्त्र्यै नमः
ॐ कुरुक्षयायै नमः
ॐ कृष्णकान्तायै नमः
ॐ कालरात्र्यै नमः
ॐ कर्णेषुधारिण्यै नमः
ॐ करायै नमः
ॐ कामहायै नमः
ॐ कपिलायै नमः 30
ॐ कालायै नमः
ॐ कालिकायै नमः
ॐ कुरुकामिन्यै नमः
ॐ कुरुक्षेत्रप्रियायै नमः
ॐ कौलायै नमः
ॐ कुन्त्यै नमः
ॐ कामातुरायै नमः
ॐ कचायै नमः
ॐ कलंजभक्षायै नमः
ॐ कैकेय्यै नमः 40
ॐ काकपुच्छध्वजायै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः
ॐ कमलानन-कामिन्यै नमः
ॐ कामधेनुस्वरूपायै नमः
ॐ कामहायै नमः
ॐ काममर्दिन्यै नमः
ॐ कामदायै नमः
ॐ कामपूज्यायै नमः 50
ॐ कामातीतायै नमः
ॐ कलावत्यै नमः
ॐ कारणाढ्यायै नमः
ॐ कैशोर्यै नमः
ॐ कुशलांगलायै नमः
ॐ कम्बुग्रीवायै नमः
ॐ कृष्णनिभायै नमः
ॐ कामराजप्रियाकृत्यै नमः
ॐ कंकणालंकृतायै नमः
ॐ कंकायै नमः 60

ॐ केवलायै नमः
ॐ काकिन्यै नमः
ॐ किरायै नमः
ॐ किरातिन्यै नमः
ॐ काकभक्षायै नमः
ॐ करालवदनायै नमः
ॐ कृशायै नमः
ॐ केशिन्यै नमः
ॐ केशिहायै नमः
ॐ केशायै नमः 70
ॐ कासाम्बष्ठायै नमः
ॐ करिप्रियायै नमः
ॐ कविनाथस्वरूपायै नमः
ॐ कटुवाण्यै नमः
ॐ कटुस्थितायै नमः
ॐ कोटरायै नमः
ॐ कोटराक्ष्यै नमः
ॐ करनाटकवासिन्यै नमः
ॐ कटकस्थायै नमः
ॐ काष्ठसंस्थायै नमः 80
ॐ कन्दर्पायै नमः
ॐ केतकीप्रियायै नमः
ॐ केलिप्रियायै नमः
ॐ कम्बलस्थायै नमः
ॐ कालदैत्यविनाशिन्यै नमः
ॐ केतकीपुष्प-शोभाढ्यायै नमः
ॐ कर्पूरपूर्ण-जिह्विकायै नमः
ॐ कर्पूराकरायै नमः
ॐ काकोलायै नमः
ॐ कैलासगिरिवासिन्यै नमः 90
ॐ कुशासनस्थायै नमः
ॐ कादम्बायै नमः
ॐ कुञ्जरेश्यै नमः
ॐ कुलाननायै नमः
ॐ कुमारिकायै नमः
ॐ कौलेश्वर्यै नमः
ॐ कामाख्यायै नमः
ॐ खर्बायै नमः
ॐ खड्गधरायै नमः
ॐ खड्गायै नमः 100
ॐ खलहायै नमः
ॐ खलबुद्धिदायै नमः
ॐ खंजनायै नमः
ॐ खररूपायै नमः
ॐ खेलनायै नमः
ॐ खेटककरायै नमः
ॐ खरवाक्यायै नमः
ॐ खरोत्कटायै नमः
ॐ खद्योतचंचलायै नमः
ॐ खेलायै नमः 110
ॐ खद्योतायै नमः
ॐ खगवाहिन्यै नमः
ॐ खेटकस्थायै नमः
ॐ खलाखस्थायै नमः
ॐ खेचर्यै नमः
ॐ खेचरप्रियायै नमः
ॐ खचरायै नमः
ॐ खरप्रेमायै नमः
ॐ खलाढ्यायै नमः
ॐ खचराननायै नमः 120
ॐ खेचरेश्यै नमः
ॐ खरोग्रायै नमः
ॐ खेचरप्रियभाषिण्यै नमः
ॐ खर्जूरासवसंमत्तायै नमः

ॐ खर्जूरफलभोगिन्यै नमः
ॐ खातमध्यस्थितायै नमः
ॐ खातायै नमः
ॐ खाताम्बुपरिपूरिण्यै नमः
ॐ ख्यात्यै नमः
ॐ ख्यातजलानन्दायै नमः 130
ॐ खुलनायै नमः
ॐ खंजनागत्यै नमः
ॐ खल्वायै नमः
ॐ खलतरायै नमः
ॐ खार्यै नमः
ॐ खरोद्वेगनिकृन्तिन्यै नमः
ॐ गगनस्थायै नमः
ॐ गणातीतायै नमः
ॐ गभीरनादिन्यै नमः
ॐ गयायै नमः 140
ॐ गंगायै नमः
ॐ गभीरायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ गणनाथप्रियायै नमः
ॐ गत्यै नमः
ॐ गुरुभक्तायै नमः
ॐ ग्वालिहीनायै नमः
ॐ गेहिन्यै नमः
ॐ गोपिन्यै नमः
ॐ गिरायै नमः 150
ॐ गोगणस्थायै नमः
ॐ गाणपत्यायै नमः
ॐ गिरिजायै नमः
ॐ गिरिपूजितायै नमः
ॐ गिरिकान्तायै नमः
ॐ गणस्थायै नमः
ॐ गिरिकन्यायै नमः
ॐ गणेश्वर्यै नमः
ॐ गाधिराजसुतायै नमः
ॐ ग्रीवायै नमः 160
ॐ गुर्व्यै नमः
ॐ गुर्व्यम्बशांकर्यै नमः
ॐ गन्धर्वकामिन्यै नमः
ॐ गीतायै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः
ॐ गुणदायै नमः
ॐ गुणायै नमः
ॐ गुग्गुलुस्थायै नमः
ॐ गुरुपूज्यायै नमः
ॐ गीतानन्दप्रकाशिन्यै नमः 170
ॐ गयासुरप्रियायै नमः
ॐ गेहायै नमः
ॐ गवाक्षजालमध्यगायै नमः
ॐ गुरुकन्यायै नमः
ॐ गुरुपत्न्यै नमः
ॐ गहनायै नमः
ॐ गुरुनागिन्यै नमः
ॐ गुल्फवायुस्थितायै नमः
ॐ गुल्फायै नमः
ॐ गर्दभायै नमः 180
ॐ गर्दभप्रियायै नमः
ॐ गुह्यायै नमः
ॐ गुह्यगणस्थायै नमः
ॐ गरिमायै नमः
ॐ गौरिकायै नमः
ॐ गुदायै नमः
ॐ गुदोर्ध्वस्थायै नमः
ॐ गलितायै नमः

ॐ गणिकायै नमः
ॐ गोलकायै नमः 190
ॐ गलायै नमः
ॐ गान्धर्व्यै नमः
ॐ गाननगर्यै नमः
ॐ गन्धर्वगणपूजितायै नमः
ॐ घोरनादायै नमः
ॐ घोरमुख्यै नमः
ॐ घोरायै नमः
ॐ घर्मनिवारिण्यै नमः
ॐ घनदायै नमः
ॐ घनवर्णायै नमः 200
ॐ घनवाहनवाहनायै नमः
ॐ घर्घरध्वनि-चपलायै नमः
ॐ घोटायै नमः
ॐ घटपट्यै नमः
ॐ घट्यै नमः
ॐ घटितायै नमः
ॐ घटनायै नमः
ॐ घोनायै नमः
ॐ घनरूपायै नमः
ॐ घनेश्वर्यै नमः 210
ॐ घुण्यातीतायै नमः
ॐ घर्घरायै नमः
ॐ घोराननविमोहिन्यै नमः
ॐ घोरनेत्रायै नमः
ॐ घनरुचायै नमः
ॐ घोरभैरवकन्यकायै नमः
ॐ घातायै नमः
ॐ घातकहायै नमः
ॐ घात्यायै नमः
ॐ घ्राणायै नमः 220
ॐ घ्राणेशवायव्यै नमः
ॐ घोरान्धकारसंस्थायै नमः
ॐ घसनायै नमः
ॐ घस्वरायै नमः
ॐ घरायै नमः
ॐ घोटकेस्थायै नमः
ॐ घोटकायै नमः
ॐ घोटकेश्वरवाहनायै नमः
ॐ घननीलमणिश्यामायै नमः
ॐ घर्घरेश्वरकामिन्यै नमः 230
ॐ चन्द्रमण्डलमध्यस्थायै नमः
ॐ चतुरायै नमः
ॐ चारुहासिन्यै नमः
ॐ चारुचन्द्रमुख्यै नमः
ॐ चलंगमगतिप्रियायै नमः
ॐ चंचलायै नमः
ॐ चपलायै नमः
ॐ चण्ड्यै नमः
ॐ चेकितानायै नमः
ॐ चरुस्थितायै नमः 240
ॐ चलितायै नमः
ॐ चाननायै नमः
ॐ चार्व्यै नमः
ॐ चारुभ्रमरनादिन्यै नमः
ॐ चौरहायै नमः
ॐ चन्द्रनिलयायै नमः
ॐ चान्द्र्यै नमः
ॐ चन्द्रपुरस्थितायै नमः
ॐ चक्रकौलायै नमः
ॐ चक्ररूपायै नमः 250
ॐ चक्रस्थायै नमः
ॐ चक्रसिद्धिदायै नमः



ॐ चक्रिण्यै नमः
ॐ चक्रहस्तायै नमः
ॐ चक्रनाथकुलप्रियायै नमः
ॐ चक्राभेद्यायै नमः
ॐ चक्रकुलायै नमः
ॐ चक्रमण्डलशोभितायै नमः
ॐ चक्रेश्वरप्रियायै नमः
ॐ चेलायै नमः 260
ॐ चेलाजिनकुशोत्तरायै नमः
ॐ चतुर्वेदस्थितायै नमः
ॐ चण्डायै नमः
ॐ चन्द्रकोटिसुशीतलायै नमः
ॐ चतुर्गुणायै नमः
ॐ चन्द्रवर्णायै नमः
ॐ चातुर्यै नमः
ॐ चतुरप्रियायै नमः
ॐ चक्षु:स्थायै नमः
ॐ चक्षुवसत्यै नमः 270
ॐ चणकायै नमः
ॐ चणकप्रियायै नमः

ॐ चार्वंग्यै नमः
ॐ चारुनिलयायै नमः
ॐ चलदम्बुजलोचनायै नमः
ॐ चर्वरीशायै नमः
ॐ चारुमुख्यै नमः
ॐ चारुदन्तायै नमः
ॐ चरस्थितायै नमः
ॐ चसकस्थासवायै नमः 280
ॐ चेतायै नमः
ॐ चेत:स्थायै नमः
ॐ चैत्रपूजितायै नमः
ॐ चाक्षुष्यै नमः
ॐ चन्द्रमलिन्यै नमः
ॐ चन्द्रहासमणिप्रभायै नमः
ॐ छलस्थायै नमः
ॐ छुद्ररूपायै नमः
ॐ छत्रच्छायायै नमः
ॐ छलस्थितायै नमः 290
ॐ छलज्ञायै नमः
ॐ छेश्वराछायायै नमः

ॐ छायायै नमः
ॐ छिन्नशिवायै नमः
ॐ छलायै नमः
ॐ छत्राचामरशोभाढ्यायै नमः
ॐ छत्रिण्यै नमः
ॐ छत्रधारिण्यै नमः
ॐ छिन्नातीतायै नमः
ॐ छिन्नमस्तायै नमः 300
ॐ छिन्नकेशायै नमः
ॐ छलोद्भवायै नमः
ॐ छलहायै नमः
ॐ छलदायै नमः
ॐ छायायै नमः
ॐ छन्नायै नमः
ॐ छन्नजनप्रियायै नमः
ॐ छलछिन्नायै नमः
ॐ छद्मवत्यै नमः
ॐ छद्मसद्मनिवासिन्यै नमः 310
ॐ छद्मगन्धायै नमः
ॐ छदायै नमः
ॐ छन्नायै नमः
ॐ छद्मवेश्यै नमः
ॐ छकारिकायै नमः
ॐ छगलायै नमः
ॐ छगलामोदरक्तपायै नमः
ॐ छगलण्डेशकन्यायै नमः
ॐ छगलण्डकुमारिकायै नमः
ॐ छुरिकायै नमः 320
ॐ छुरिककरायै नमः
ॐ छुरिकारिनिवाशिन्यै नमः
ॐ छिन्ननाशायै नमः
ॐ छिन्नहस्तायै नमः
ॐ छोणलोलायै नमः
ॐ छलोदर्यै नमः
ॐ छलोद्वेगायै नमः
ॐ छांगबीजमालायै नमः
ॐ छांगवरप्रदायै नमः
ॐ जटिलायै नमः 330
ॐ जठरश्रीदायै नमः
ॐ जरायै नमः
ॐ जज्ञप्रियायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ जन्तुस्थायै नमः
ॐ जीवजायै नमः
ॐ जीवायै नमः
ॐ जयदायै नमः
ॐ जीवयोगदायै नमः
ॐ जयिन्यै नमः 340
ॐ जामलस्थायै नमः
ॐ जामलोद्भवनायिकायै नमः
ॐ जामलप्रियकन्यायै नमः
ॐ जामलेश्यै नमः
ॐ जवाप्रियायै नमः
ॐ जवाकोटि-समप्रख्यायै नमः
ॐ जवापुष्पप्रियायै नमः
ॐ जनायै नमः
ॐ जलस्थायै नमः
ॐ जगविषयायै नमः 350
ॐ जरातीतायै नमः
ॐ जलस्थितायै नमः
ॐ जीवहायै नमः
ॐ जीवकन्यायै नमः
ॐ जनार्दनकुमारिकायै नमः
ॐ जतुकायै नमः

ॐ जलपूज्यायै नम:
ॐ जगन्नाथादिकामिन्यै नम:
ॐ जीर्णांग्यै नम:
ॐ जीर्णहीनायै नम: 360
ॐ जीमूतात्यन्त-शोभितायै नम:
ॐ जामात्रे नम:
ॐ जयदायै नम:
ॐ ज्येष्ठायै नम:
ॐ जृम्भणास्त्रादिधारिण्यै नम:
ॐ जघन्यायै नम:
ॐ जारजाप्रीतायै नम:
ॐ जगदानन्दवर्द्धिन्यै नम:
ॐ जमलार्जुन-दर्पघ्न्यै नम:
ॐ जमलार्जुनभंजिन्यै नम: 370
ॐ जयित्र्यै नम:
ॐ जगदानन्दायै नम:
ॐ जामलोल्लास-सिद्धिदायै नम:
ॐ जपमालायै नम:
ॐ जाप्यसिद्ध्यै नम:
ॐ जपयज्ञप्रकाशिन्यै नम:
ॐ जाम्बुवत्यै नम:
ॐ जाम्बवतकन्यकायै नम:
ॐ जनवायै नम:
ॐ जपायै नम: 380
ॐ जवाहन्त्र्यै नम:
ॐ जगद्बुद्ध्यै नम:
ॐ जगत्कर्त्रे नम:
ॐ जगद्गत्यै नम:
ॐ जनन्यै नम:
ॐ जीवन्यै नम:
ॐ जायायै नम:
ॐ जगन्मातायै नम:
ॐ जनेश्वर्यै नम:
ॐ झंकलायै नम: 390
ॐ झंकमध्यस्थायै नम:
ॐ झणत्कारस्वरूपिण्यै नम:
ॐ झणत्झणद्वह्निरूपायै नम:
ॐ झननायै नम:
ॐ झन्दरीश्वर्यै नम:
ॐ झटिताक्षायै नम:
ॐ झरायै नम:
ॐ झंझायै नम:
ॐ झर्झरायै नम:
ॐ झरकन्यकायै नम: 400
ॐ झणत्कार्यै नम:
ॐ झनायै नम:
ॐ झन्नायै नम:
ॐ झकारमालयावृतायै नम:
ॐ झंकर्यै नम:
ॐ झर्झर्यै नम:
ॐ झल्ल्यै नम:
ॐ झल्वेश्वरनिवासिन्यै नम:
ॐ ञकार्यै नम:
ॐ ञकिरात्यै नम: 410
ॐ ञकारबीजमालिन्यै नम:
ॐ ञनयोऽन्तायै नम:
ॐ ञकारान्तायै नम:
ॐ ञकारपरमेश्वर्यै नम:
ॐ ञान्तबीजपुटाकारायै नम:
ॐ ञेकलायै नम:
ॐ ञैकगामिन्यै नम:
ॐ ञैकनेलायै नम:
ॐ ञस्वरूपायै नम:
ॐ ञहारायै नम: 420

ॐ ञहरीतक्यै नमः
ॐ टुन्टुन्यै नमः
ॐ टंकहस्तायै नमः
ॐ टान्तवर्गायै नमः
ॐ टलावत्यै नमः
ॐ टपलायै नमः
ॐ टापबालाख्यायै नमः
ॐ टंकारध्वनिरूपिण्यै नमः
ॐ टलात्यै नमः
ॐ टाक्षरातीतायै नमः 430
ॐ टित्कारादिकुमारिकायै नमः
ॐ टंकास्त्रधारिण्यै नमः
ॐ टानायै नमः
ॐ टामोटार्णलभाषिण्यै नमः
ॐ टंकारनिधनायै नमः
ॐ टाकायै नमः
ॐ टंकारणविमोहिन्यै नमः
ॐ टंकारध्वनिमोहायै नमः
ॐ टिटिखेचरनादिन्यै नमः
ॐ ठठंकार्यै नमः 440
ॐ ठाठरूपायै नमः
ॐ ठकारबीजकारणायै नमः
ॐ डमरूप्रियवाद्यायै नमः
ॐ डामरस्थायै नमः
ॐ डबीजिकायै नमः
ॐ डान्तवर्गायै नमः
ॐ डमरुकायै नमः
ॐ डरस्थायै नमः
ॐ डोरडामरायै नमः
ॐ डवर्गतायै नमः 450
ॐ डलातीतायै नमः
ॐ डकारकेश्वर्यै नमः
ॐ डुतायै नमः
ॐ ढार्द्धनारीश्वरायै नमः
ॐ ढामायै नमः
ॐ ढक्कार्यै नमः
ॐ ढलनायै नमः
ॐ ढलायै नमः
ॐ ढकेस्थायै नमः
ॐ ढेश्वरसुतायै नमः 460
ॐ ढेमनाभावायै नमः
ॐ ढोननायै नमः
ॐ णोमाकान्तेश्वर्यै नमः
ॐ णान्तवर्गस्थायै नमः
ॐ णतुनावत्यै नमः
ॐ णनोमायै नमः
ॐ णांककल्याण्यै नमः
ॐ णाक्षवीणाक्षबीजिकायै नमः
ॐ तुलस्यै नमः
ॐ तन्तुसूक्ष्माख्यायै नमः 470
ॐ तारल्यायै नमः
ॐ तैलगन्धिकायै नमः
ॐ तपस्यायै नमः
ॐ तापससुतायै नमः
ॐ तारिण्यै नमः
ॐ तरुण्यै नमः
ॐ तलायै नमः
ॐ तन्त्रस्थायै नमः
ॐ तारकब्रह्मस्वरूपायै नमः
ॐ तन्तुमध्यगायै नमः 480
ॐ तालभक्षायै नमः
ॐ त्रिधामूर्त्यै नमः
ॐ तारकायै नमः
ॐ तैलभक्षिकायै नमः

ॐ तारोग्रायै नमः
ॐ तालमालायै नमः
ॐ तकरायै नमः
ॐ तिन्तिडीप्रियायै नमः
ॐ तपसे नमः
ॐ तालसन्दर्भायै नमः 490
ॐ तर्जयन्त्यै नमः
ॐ तोकाचारायै नमः
ॐ तलोद्वेगायै नमः
ॐ तक्षकायै नमः
ॐ तक्षकप्रियायै नमः
ॐ तक्षकालंकृतायै नमः
ॐ तोषायै नमः
ॐ तावद्रूपायै नमः
ॐ तलप्रियायै नमः
ॐ तलास्त्रधारिण्यै नमः 500
ॐ तापायै नमः
ॐ तपसां फलदायिन्यै नमः
ॐ तलप्रहारनिरतायै नमः
ॐ तलारिगणनाशिन्यै नमः
ॐ तूलायै नमः
ॐ तौल्यै नमः
ॐ तोलकायै नमः
ॐ तलस्थायै नमः
ॐ तलपालिकायै नमः
ॐ तरुणायै नमः 510
ॐ तप्तबुद्धिस्थायै नमः
ॐ तप्तोग्रधारिण्यै नमः
ॐ तपायै नमः
ॐ तन्त्रप्रकाशकरण्यै नमः
ॐ तन्त्रार्थदायिन्यै नमः
ॐ तुषायै नमः
ॐ तुषारकिरणांग्यै नमः
ॐ तुषारांशुसमप्रभायै नमः
ॐ तैलमार्गाभिसूतायै नमः
ॐ तन्त्रसिद्धिफलप्रदायै नमः 520
ॐ ताम्रपर्णायै नमः
ॐ ताम्रकेशायै नमः
ॐ ताम्रपात्रप्रियायै नमः
ॐ तमायै नमः
ॐ तमोगुणप्रियायै नमः
ॐ तोलायै नमः
ॐ तक्षकारिनिवारिण्यै नमः
ॐ तोषयुक्तायै नमः
ॐ तमायाच्यै नमः
ॐ तमषोढेश्वरप्रियायै नमः 530
ॐ तुलनायै नमः
ॐ तुल्यरुचिरायै नमः
ॐ तुल्यबुद्ध्यै नमः
ॐ त्रिधामत्यै नमः
ॐ तक्रभक्षायै नमः
ॐ तालसिद्ध्यै नमः
ॐ तत्रस्थायै नमः
ॐ तत्रगामिन्यै नमः
ॐ तलयायै नमः
ॐ तैलभायै नमः 540
ॐ ताल्यै नमः
ॐ तन्त्रगोपनतत्परायै नमः
ॐ तन्त्रमन्त्रप्रकाशायै नमः
ॐ त्रिशरेणुस्वरूपिण्यै नमः
ॐ त्रिंशदर्थप्रियायै नमः
ॐ तुष्टायै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ तुष्टजनप्रियायै नमः

ॐ थकारकूटदण्डीशायै नमः
ॐ थदण्डीशप्रियाऽथवायै नमः 550
ॐ थकाराक्षररूढांग्यै नमः
ॐ थान्तवर्गायै नमः
ॐ थकारिकायै नमः
ॐ थान्तायै नमः
ॐ थमीश्वर्यै नमः
ॐ थाकायै नमः
ॐ थकारबीजमालिन्यै नमः
ॐ दक्षदामप्रियायै नमः
ॐ दोषायै नमः
ॐ दोषजालवनाश्रितायै नमः 560
ॐ दशायै नमः
ॐ दशनघोरायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ दासप्रियायै नमः
ॐ दयायै नमः
ॐ दैत्यहन्त्रीपरायै नमः
ॐ दैत्यायै नमः
ॐ दैत्यानां मर्दिन्यै नमः
ॐ दिशायै नमः
ॐ दान्तायै नमः 570
ॐ दान्तप्रियायै नमः
ॐ दासायै नमः
ॐ दामनायै नमः
ॐ दीर्घकेशिकायै नमः
ॐ दशनायै नमः
ॐ दरीग्रहनिवासिन्यै नमः
ॐ देवमातायै नमः
ॐ दुर्लभायै नमः
ॐ दीर्घांगायै नमः
ॐ दासकन्यकायै नमः 580
ॐ दशनश्र्यै नमः
ॐ दीर्घनेत्रायै नमः



ॐ दीर्घनासायै नम:
ॐ दोषहायै नम:
ॐ दमयन्त्यै नम:
ॐ दलस्थायै नम:
ॐ द्वेष्यहन्त्र्यै नम:
ॐ दशस्थितायै नम:
ॐ दैशेषिकायै नम:
ॐ दिशिगतायै नम: 590
ॐ दशनास्त्रविनाशिन्यै नम:
ॐ दारिद्र्यहायै नम:
ॐ दरिद्रस्थायै नम:
ॐ दरिद्रधनदायिन्यै नम:
ॐ दन्तुरायै नम:
ॐ देशभाषायै नम:
ॐ देशस्थायै नम:
ॐ देशनायिकायै नम:
ॐ द्वेषरूपायै नम:
ॐ द्वेषहन्त्र्यै नम: 600
ॐ द्वेषारिगणमोहिन्यै नम:
ॐ दामोदरस्थायै नम:
ॐ दलनायै नम:
ॐ दलानां बलदायिन्यै नम:
ॐ दिग्दर्शनायै नम:
ॐ दर्शनस्थायै नम:
ॐ दर्शनप्रियवादिन्यै नम:
ॐ दामोदरप्रियायै नम:
ॐ दान्तायै नम:
ॐ दामोदरकलेवरायै नम: 610
ॐ द्राविण्यै नम:
ॐ द्रविण्यै नम:
ॐ दक्षायै नम:
ॐ दक्षकन्यायै नम:
ॐ दलदृढायै नम:
ॐ दृढासनायै नम:
ॐ दासशक्त्यै नम:
ॐ द्वन्द्वयुद्धप्रकाशिन्यै नम:
ॐ दधिप्रियायै नम:
ॐ दधिस्थायै नम: 620
ॐ दधिमंगलकारिण्यै नम:
ॐ दर्पहायै नम:
ॐ दर्पदायै नम:
ॐ दृप्तायै नम:
ॐ दर्भपुण्यप्रियायै नम:
ॐ दध्यै नम:
ॐ दर्भस्थायै नम:
ॐ द्रुपदसुतायै नम:
ॐ द्रौपद्यै नम:
ॐ द्रुपदप्रियायै नम: 630
ॐ धर्मचिन्तायै नम:
ॐ धनाध्यक्षायै नम:
ॐ धनेश्वरवरप्रदायै नम:
ॐ धनहायै नम:
ॐ धनदायै नम:
ॐ धन्व्यै नम:
ॐ धनुर्हस्तायै नम:
ॐ धनुप्रियायै नम:
ॐ धरण्यै नम:
ॐ धैर्यरूपायै नम: 640
ॐ धनस्थायै नम:
ॐ धनमोहिन्यै नम:
ॐ धोरायै नम:
ॐ धीरप्रियाधारायै नम:
ॐ धराधारणतत्परायै नम:
ॐ धान्यदायै नम:

ॐ धान्यबीजायै नमः
ॐ धर्माधर्मस्वरूपिण्यै नमः
ॐ धारायै नमः
ॐ धरस्थायै नमः 650
ॐ धन्यायै नमः
ॐ धर्मपुंजनिवासिन्यै नमः
ॐ धनाढ्य-प्रियकन्यायै नमः
ॐ धन्यलोक-निषेवितायै नमः
ॐ धर्मार्थकाममोक्षांग्यै नमः
ॐ धर्मार्थकाममोक्षदायै नमः
ॐ धराधरायै नमः
ॐ धुरोणायै नमः
ॐ धवलायै नमः
ॐ धवलामुख्यै नमः 660
ॐ धरायै नमः
ॐ धामरूपायै नमः
ॐ ध्रुवायै नमः
ॐ ध्रौव्यायै नमः
ॐ ध्रुवप्रियायै नमः
ॐ धनेश्यै नमः
ॐ धारणाख्यायै नमः
ॐ धर्मनिन्दाविनाशिन्यै नमः
ॐ धर्मतेजोमय्यै नमः
ॐ धर्म्यायै नमः 670
ॐ धैर्याग्रभर्ग-मोहिन्यै नमः
ॐ धारणायै नमः
ॐ धौतवसनायै नमः
ॐ धत्तूरफलभोगिन्यै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ नरेन्द्रस्थायै नमः
ॐ नारायणकलेवरायै नमः
ॐ नरनारायणप्रीतायै नमः
ॐ नीतायै नमः
ॐ नयनमोहितायै नमः 680
ॐ नित्यायै नमः
ॐ नापितकन्यायै नमः
ॐ नयनस्थायै नमः
ॐ नरप्रियायै नमः
ॐ नाम्न्यै नमः
ॐ नामप्रियायै नमः
ॐ नारायै नमः
ॐ नारायणसुतायै नमः
ॐ नरायै नमः
ॐ नवीननायकप्रीतायै नमः 690
ॐ नव्यायै नमः
ॐ नवफलप्रियायै नमः
ॐ नवीनकुसुमप्रीतायै नमः
ॐ नवीनायै नमः
ॐ नीरजानुजायै नमः
ॐ नार्यै नमः
ॐ निम्बस्थितानन्दायै नमः
ॐ नन्दिन्यै नमः
ॐ नन्दकारिकायै नमः
ॐ नवपुष्पमहाप्रीतायै नमः 700
ॐ नवपुष्पसुगन्धिकायै नमः
ॐ नन्दनस्थायै नमः
ॐ नन्दकन्यायै नमः
ॐ नन्दमोक्षप्रदायिन्यै नमः
ॐ नमितायै नमः
ॐ नामभेदायै नमः
ॐ नाम्नार्त्तवनमोहिन्यै नमः
ॐ नवबुद्धिप्रियानेकायै नमः
ॐ नाकस्थायै नमः
ॐ नामकन्यकायै नमः 710

ॐ निन्दाहीनायै नमः
ॐ नवोल्लासायै नमः
ॐ नाकस्थानप्रदायिन्यै नमः
ॐ निम्बवृक्षस्थितायै नमः
ॐ निम्बायै नमः
ॐ नानावृक्षनिवासिन्यै नमः
ॐ नाश्यातीतायै नमः
ॐ नीलवर्णायै नमः
ॐ नीलायै नमः
ॐ नीलसरस्वत्यै नमः 720
ॐ नभःस्थायै नमः
ॐ नायकप्रीतायै नमः
ॐ नायकप्रियकामिन्यै नमः
ॐ नैववर्णायै नमः
ॐ निराहारायै नमः
ॐ निरोहायै नमः
ॐ निरजप्रियायै नमः
ॐ निम्ननाभि-प्रियाकारायै नमः
ॐ नरेन्द्रहस्तपूजितायै नमः
ॐ नलस्थितायै नमः 730
ॐ नलप्रीतायै नमः
ॐ नलराजकुमारिकायै नमः
ॐ परेश्वर्यै नमः
ॐ परानन्दायै नमः
ॐ परापरविभेदिकायै नमः
ॐ परमायै नमः
ॐ परचक्रस्थायै नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ पर्वतप्रियायै नमः
ॐ परमेश्यै नमः 740
ॐ पर्वमालायै नमः
ॐ पुष्पमाल्यप्रियायै नमः
ॐ परापरायै नमः
ॐ प्रियायै नमः
ॐ प्रीतिदात्र्यै नमः
ॐ प्रीत्यै नमः
ॐ प्रथमकामिन्यै नमः
ॐ प्रथमायै नमः
ॐ प्रीतायै नमः
ॐ पुष्पगन्धप्रियायै नमः 750
ॐ परायै नमः
ॐ पौष्य्यै नमः
ॐ पानरतायै नमः
ॐ पीनायै नमः
ॐ पीनस्तन-सुशोभनायै नमः
ॐ परमानरतायै नमः
ॐ पुंसां पाशहस्तायै नमः
ॐ पशुप्रियायै नमः
ॐ पललानन्द-रसिकायै नमः
ॐ पलालधूमरूपिण्यै नमः 760
ॐ पलाशपुष्प-संकाशायै नमः
ॐ पलाशपुष्प-मालिन्यै नमः
ॐ प्रेमभूतायै नमः
ॐ पद्ममुख्यै नमः
ॐ पद्मरागसुमालिन्यै नमः
ॐ पद्ममालायै नमः
ॐ पापहरायै नमः
ॐ पतिप्रेमविलासिन्यै नमः
ॐ पंचानन-मनोहार्यै नमः
ॐ पंचवक्त्र-प्रकाशिन्यै नमः 770
ॐ फलमूलाशनायै नमः
ॐ फाल्यै नमः
ॐ फलदायै नमः
ॐ फाल्गुनप्रियायै नमः

ॐ फलनाथप्रियायै नमः
ॐ फल्ल्यै नमः
ॐ फल्गुकन्यायै नमः
ॐ फलोन्मुख्यै नमः
ॐ फेत्कारीतन्त्रमुख्यायै नमः
ॐ फेत्कारगणपूजितायै नमः 780
ॐ फेरव्यै नमः
ॐ फेरवसुतायै नमः
ॐ फलभोगोद्भवायै नमः
ॐ फलायै नमः
ॐ फलप्रियायै नमः
ॐ फलाशक्तायै नमः
ॐ फाल्गुनानन्द-दायिन्यै नमः
ॐ फालभोगोत्तरायै नमः
ॐ फेलायै नमः
ॐ फुलाम्भोजनिवासिन्यै नमः 790
ॐ वसुदेवगृहस्थायै नमः
ॐ वासव्यै नमः
ॐ वीरपूजितायै नमः
ॐ विषभक्षायै नमः
ॐ बुधसुतायै नमः
ॐ ब्लुंकार्यै नमः
ॐ ब्लूवरप्रदायै नमः
ॐ ब्राह्म्यै नमः
ॐ बृहस्पतिसुतायै नमः
ॐ वाचस्पतिवरप्रदायै नमः 800
ॐ वेदाचारायै नमः
ॐ वेद्यपरायै नमः
ॐ व्यास-वक्त्रस्थितायै नमः
ॐ विभायै नमः
ॐ बोधज्ञायै नमः
ॐ वौषडाख्यायै नमः
ॐ वंशीवंदनपूजितायै नमः
ॐ वज्रकान्तायै नमः
ॐ वज्रगत्यै नमः
ॐ बदर्यै नमः 810
ॐ वंशविवर्द्धिन्यै नमः
ॐ भारत्यै नमः
ॐ भवरश्रीदायै नमः
ॐ भवपत्न्यै नमः
ॐ भवात्मजायै नमः
ॐ भवान्यै नमः
ॐ भाविन्यै नमः
ॐ भीमायै नमः
ॐ भिषग्भार्यायै नमः
ॐ भुवि स्थितायै नमः 820
ॐ भूर्भुवःस्वःस्वरूपायै नमः
ॐ भृशार्त्तायै नमः
ॐ भेकनादिन्यै नमः
ॐ भौत्यै नमः
ॐ भंगप्रियायै नमः
ॐ भंगभंगहायै नमः
ॐ भंगहारिण्यै नमः
ॐ भर्तायै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ भाग्यायै नमः 830
ॐ भगीरथनमस्कृतायै नमः
ॐ भगमालायै नमः
ॐ भूतनाथेश्वर्यै नमः
ॐ भार्गवपूजितायै नमः
ॐ भृगुवंशायै नमः
ॐ भीतिहरायै नमः
ॐ भूम्यै नमः
ॐ भुजगहारिण्यै नमः

ॐ भालचन्द्रायै नमः
ॐ भल्वबालायै नमः 840
ॐ भवभूत्यै नमः
ॐ भैरव्यै नमः
ॐ मकरस्थायै नमः
ॐ मत्तगत्यै नमः
ॐ मदमत्तायै नमः
ॐ मदप्रियायै नमः
ॐ मदिराष्टादशभुजायै नमः
ॐ मदिरायै नमः
ॐ मत्तगामिन्यै नमः
ॐ मदिरासिद्धिदायै नमः 850
ॐ मध्यायै नमः
ॐ मदान्तर्गतिसिद्धिदायै नमः
ॐ मीनभक्षायै नमः
ॐ मीनरूपायै नमः
ॐ मुद्रायै नमः
ॐ मुद्‌गप्रियागत्यै नमः
ॐ मुषलायै नमः
ॐ मुक्तिदायै नमः
ॐ मूर्त्तायै नमः
ॐ मूकीकरणतत्परायै नमः 860
ॐ मृषार्त्तायै नमः
ॐ मृगतृष्णायै नमः
ॐ मेषभक्षण-तत्परायै नमः
ॐ मैथुनानन्दसिद्ध्यै नमः
ॐ मैथुनानलसिद्धिदायै नमः
ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ महेन्द्रपीठनायिकायै नमः
ॐ मनःस्थायै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ मुख्यायै नमः 870
ॐ महादेवमनोरमायै नमः
ॐ यशोदायै नमः
ॐ याचनायै नमः
ॐ यास्यायै नमः
ॐ यमराजप्रियायै नमः
ॐ यमायै नमः
ॐ यशोराशिविभूषांग्यै नमः
ॐ यतिप्रेमकलावत्यै नमः
ॐ रमण्यै नमः
ॐ रामपत्न्यै नमः 880
ॐ रिपुहायै नमः
ॐ रीतिमध्यगायै नमः
ॐ रुद्राण्यै नमः
ॐ रूपदायै नमः
ॐ रूपायै नमः
ॐ रूपसुन्दरधारिण्यै नमः
ॐ रेतःस्थायै नमः
ॐ रेतसप्रीतायै नमः
ॐ रेतःस्थाननिवासिन्यै नमः
ॐ रेन्द्रादेवसुतारेदायै नमः 890
ॐ रिपुवर्गान्तकप्रियायै नमः
ॐ रोमावलीन्द्रजनन्यै नमः
ॐ रोमकूप-जगत्पत्यै नमः
ॐ रौप्यवर्णायै नमः
ॐ रौद्रवर्णायै नमः
ॐ रौप्यालंकारभूषणायै नमः
ॐ रंगिणायै नमः
ॐ रंगरागस्थायै नमः
ॐ रणवह्निकुलेश्वर्यै नमः
ॐ रक्तभक्षायै नमः 900
ॐ रक्तवर्णायै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः

ॐ लांगलहस्तायै नम:
ॐ लांगल्यै कुलकामिन्यै नम:
ॐ लिपिरूपायै नम:
ॐ लीढपादायै नम:
ॐ लतातन्तुस्वरूपिण्यै नम:
ॐ लिम्पत्यै नम:
ॐ लेलिहायै नम:
ॐ लोलायै नम: 910
ॐ लोमशप्रियसिद्धिदायै नम:
ॐ लौकिक्यै नम:
ॐ लौकिकीसिद्ध्यै नम:
ॐ लंकानाथ-कुमारिकायै नम:
ॐ लक्ष्मणायै नम:
ॐ लक्ष्मीहीनायै नम:
ॐ लप्रियायै नम:
ॐ लार्णमध्यगायै नम:
ॐ विवसायै नम:
ॐ वसनावेशायै नम: 920
ॐ विवस्यकुलकन्यकायै नम:
ॐ वातस्थायै नम:
ॐ वातरूपायै नम:
ॐ वेलमध्यनिवासिन्यै नम:
ॐ विभूतिदायै नम:
ॐ विन्ध्यवासिन्यै नम:
ॐ श्मशानभूमिमध्यस्थायै नम:
ॐ श्मशानसाधनप्रियायै नम:
ॐ शवस्था परसिद्ध्यर्थ्यै नम:
ॐ शववक्षस्यै नम: 930
ॐ शोभितायै नम:
ॐ शरणागतपाल्यायै नम:
ॐ शिवकन्यायै नम:
ॐ शिवप्रियायै नम:
ॐ शारदायै नम:
ॐ षट्चक्रभेदिन्यै नम:
ॐ षोढान्यासजाल-दृढाननायै नम:
ॐ सन्ध्यायै नम:
ॐ सरस्वत्यै नम:
ॐ सूक्ष्मायै नम: 940
ॐ सूर्यगायै नम:
ॐ सत्यै नम:
ॐ सुतुण्डायै नम:
ॐ स्वरबीजान्तायै नम:
ॐ सिद्धिदात्र्यै नम:
ॐ हरिप्रियायै नम:
ॐ हरहालालावण्यस्थायै नम:
ॐ हरिवेशादिसिद्धिदायै नम:
ॐ क्षमायै नम:
ॐ क्षुधायै नम: 950
ॐ क्षेत्रज्ञायै नम:
ॐ क्षाराम्लतिक्त-मध्यगायै नम:
ॐ अम्बिकायै नम:
ॐ अपराजितायै नम:
ॐ आद्यायै नम:
ॐ इन्द्रप्रियायै नम:
ॐ ईशायै नम:
ॐ उमायै नम:
ॐ ऊढायै नम:
ॐ ऋतुप्रियायै नम: 960
ॐ एकादशी-व्रतस्थायै नम:
ॐ ऐन्द्र्यै नम:
ॐ ओषधिसिद्धिदायै नम:
ॐ औपकार्यै नम:
ॐ अंशरूपायै नम:
ॐ अस्त्रबीजप्रकाशिन्यै नम:



ॐ दुर्गायै नमः
ॐ दुर्गार्तिशमन्यै नमः
ॐ दुर्गापद्विनिवारिण्यै नमः
ॐ दुर्गमच्छेदिन्यै नमः 970
ॐ दुर्गसाधिन्यै नमः
ॐ दुर्गनाशिन्यै नमः
ॐ दुर्गतोद्धारिण्यै नमः
ॐ दुर्गनिहन्त्र्यै नमः
ॐ दुर्गमापहायै नमः
ॐ दुर्गमज्ञानदायै नमः
ॐ दुर्गदैत्यलोकदवानलायै नमः
ॐ दुर्गमायै नमः
ॐ दुर्गमालोकायै नमः
ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः 980
ॐ दुर्गमार्गप्रदायै नमः
ॐ दुर्गमविद्यायै नमः
ॐ दुर्गमाश्रितायै नमः
ॐ दुर्गमज्ञानसंस्थानायै नमः
ॐ दुर्गमध्यानभासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमोहायै नमः
ॐ दुर्गमगायै नमः
ॐ दुर्गमार्थस्वरूपिण्यै नमः
ॐ दुर्गमासुरसंहन्त्र्यै नमः
ॐ दुर्गमायुधधारिण्यै नमः 990
ॐ दुर्गमांग्यै नमः
ॐ दुर्गमतायै नमः
ॐ दुर्गम्यायै नमः
ॐ दुर्गमेश्वर्यै नमः
ॐ दुर्गभीमायै नमः
ॐ दुर्गभामायै नमः
ॐ दुर्गभायै नमः
ॐ दुर्गदारिण्यै नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ कन्याकुमार्यै नमः 1000

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमन्महाकुण्डलिनी सहस्त्रनामस्तोत्रम्

कुलेश्वरी कुलानन्दा कुलीना कुलकुण्डली। श्रीमन्महाकुण्डली च कुलकन्या कुलप्रिया।।
कुलक्षेत्रस्थिता कौली कुलीनार्थप्रकाशिनी। कुलाख्या कुलमार्गस्था कुलशास्त्रार्थपातिनी।।
कुलज्ञा कुलयोग्या च कुलपुष्पप्रकाशिनी। कुलीना च कुलाध्यक्षा कुलचन्दनलेपिता।।
कुलरूपा कुलोद्भूता कुलकुण्डलिवासिनी। कुलाभिन्ना कुलोत्पन्ना कुलाचारविनोदिनी।।
कुलवृक्षसमुद्भूता कुलमाला कुलप्रभा। कुलज्ञा कुलमध्यस्था कुलकंकणशोभिता।।
कुलोत्तरा कौलपूजा कुलालापा कुलक्रिया। कुलभेदा कुलप्राणा कुलदेवी कुलस्तुतिः।।
कौलिका कालिका काल्या कलिभिन्ना कलाकला। कलिकल्मषहन्त्री च कलिदोषविनाशिनी।।
कंकाली केवलानन्दा कालज्ञा कालधारिणी। कौतुकी कौमुदी केका काका काकलयान्तरा।।
कोमलांगी करालास्या कन्दपूज्या च कोमला। कैशोरी काकपुच्छस्था कम्बलासनवासिनी।।
कैकेयीपूजिता कोला कोलपुत्री कपिध्वजा। कमला कमलाक्षी च कम्बलाश्वतरप्रिया।।10।।

कलिकाभंगदोषस्था कालज्ञा कालकुण्डली। काव्यदा कविता वाणी कालसन्दर्भभेदिनी।।
कुमारी करुणाकारा कुरुसैन्यविनाशिनी। कान्ता कुलगता कामा कामिनी कामनाशिनी।।
कामोद्भवा कामकन्या केवला कालघातिनी। कैलासशिखरारूढा कैलासपतिसेविता।।
कैलासनाथनमिता केयूरहारमण्डिता। कन्दर्पा कठिनानन्दा कुलगा कीचकृत्यहा।।
कमलास्या कठोरा च कीटरूपा कटिस्थिता। कन्देश्वरी कन्दरूपा कोलिका कन्दवासिनी।।
कूटस्था कूटभक्षा च कालकूटविनाशिनी। कामाख्या कमला काम्या कामराजतनूद्भवा।।
कामरूपधरा कर्मा कमनीया कविप्रिया। कंजानना कंजहस्ता कंजपत्रायतेक्षणा।।
काकिनी कामरूपस्था कामरूपप्रकाशिनी। कोलाविध्वंसिनी कंका कलंकार्ककलंकिनी।।
महाकुलनदी कर्णा कर्णकाण्डविमोहिनी। काण्डस्था काण्डकरुणा कर्मकस्था कुटुम्बिनी।।
कमलाभा कल्पा कल्ला करुणा करुणामयी। करुणेशी कराकर्त्री कर्तृहस्ता कलोदया।।20।।

कारुण्यसागरोद्भूता कारुण्यसिन्धुवासिनी। कार्त्तिकेशी कार्त्तिकस्था कार्त्तिकप्राणपालिनी।।
करुणानिधिपूज्या च करणीया क्रिया कला। कल्पस्था कल्पनिलया कल्पातीता च कल्पिता।।
कुलया कुलविज्ञाना कर्षिणी कालरात्रिका। कैवल्यदा कोकरस्था कलमंजीररंजनी।।
कलयन्ती कालजिह्वा किंकरासनकारिणी। कुमुदा कुशलानन्दा कौशल्याकाशवासिनी।।
कसापहासहन्त्री च कैवल्यगुणसम्भवा। एकाकिनी अर्करूपा कुवला कर्कटस्थिता।।
कर्कोटका कोष्ठरूपा कूटवह्निकरस्थिता। कूजन्ती मधुरध्वानं कामयन्ती सुलक्षणम्।।
केतकी कुसुमानन्दा केतकीपुण्यमण्डिता। कर्पूरपूररुचिरा कर्पूरभक्षणप्रिया।।
कपालपात्रहस्ता च कपालचन्द्रधारिणी। कामधेनुस्वरूपा च कामधेनुः क्रियान्विता।।
कश्यपी काश्यपा कुन्ती केशान्ता केशमोहिनी। कालकर्त्री कूपकर्त्री कुलपा कामचारिणी।।
कुंकुमाभा कज्जलस्था कमिता कोपघातिनी। केलिस्था केलिकलिता कोपना कर्पटस्थिता।।30।।

कलातीता कालविद्या कालात्मपुरुषोद्भवा। कष्टस्था कष्टकुष्ठस्था कुष्ठहा कष्टहा कुशा।।
कालिका स्फुटकर्त्री च काम्बोजा कामला कुला। कुशलाख्या काककुष्ठा कर्मस्था कूर्ममध्यगा।।
कुण्डलाकारचक्रस्था कुण्डगोलोद्भवा कफा। कपित्थाग्रवसाकाशा कपित्थरोधकारिणी।।
काहोडी काहडा काडा कंकला भाषकारिणी। कनका कनकाभा च कनकाद्रिनिवासिनी।।
कार्पासयज्ञसूत्रस्था कूटब्रह्मार्थसाधिनी। कलंजभक्षिणी क्रूरा क्रोधपुंजा कपिस्थिता।।
कपाली साधनरता कनिष्ठकाशवासिनी। कुंजरेशी कुंजरस्था कुंजरा कुंजरागतिः।।
कुंजस्था कुंजरमणी कुंजमन्दिरवासिनी। कुपिता कोपशून्या च कोपकोपविवर्जिता।।
कपिंजलस्था कापिंजा कपिंजलतरूद्भवा। कुन्तीप्रेमकथाविष्टा कुन्तीमानसपूजिता।।
कुन्तला कुन्तहस्ता च कुलकुन्तललोहिनी। कान्तांघ्रिसेविका कान्तकुशला कोशलावती।।
केशिहन्त्री ककुत्स्था च ककुत्स्थवनवासिनी। कैलासशिखरानन्दा कैलासगिरिपूजिता।। 40।।

कीलालनिर्मलाकारा कीलालमुग्धकारिणी। कुतुना कुट्टही कुट्ठा कूटना मोदकारिणी।।
क्रौंकारी क्रौंकरी काशी कुहुशब्दस्था किरातिनी। कूजन्ती सर्ववचनं कारयन्ती कृताकृतम्।।
कृपानिधिस्वरूपा च कृपासागरवासिनी। केवलानन्दनिरता केवलानन्दकारिणी।।
कृमिला कृमिदोषघ्नी कृपा कपटकुट्टिता। कृशांगी क्रमभंगस्था किंकरस्था कटस्थिता।।
कामरूपा कान्तरता कामरूपस्य सिद्धिदा। कामरूपपीठदेवी कामरूपांकुजा कुजा।।
कामरूपा कामविद्या कामरूपादिकालिका। कामरूपकला काम्या कामरूपकुलेश्वरी।।
कामरूपजनानन्दा कामरूपकुशाग्रधीः। कामरूपकराकाशा कामरूपतरुस्थिता।।
कामात्मजा कामकला कामरूपविहारिणी। कामशास्त्रार्थमध्यस्था कामरूपक्रियाकला।।
कामरूपमहाकाली कामरूपयशोमयी। कामरूपपरमानन्दा कामरूपादिकामिनी।।
कूलमूला कामरूपपद्ममध्यनिवासिनी। कृतांजलिप्रिया कृत्या कत्यादेवीस्थिता कटा।। 50।।

कटका काटका कोटिकटिघण्टविनोदिनी। कटिस्थूलतरा काष्ठा कात्यायनसुसिद्धिदा।।
कात्यायनी काचलस्था कामचन्द्रानना कथा। काश्मीरदेशनिरता काश्मीरी कृषिकर्मजा।।
कृषिकर्मस्थिता कौर्मा कूर्मपृष्ठनिवासिनी। कालघण्टा नादरता कलमञ्जीरमोहिनी।।
कलयन्ती शत्रुवर्गान् क्रोधयन्ती गुणागुणम्। कामयन्ती सर्वकामं काशयन्ती जगत्त्रयम्।।
कौलकन्या कालकन्या कौलकालकुलेश्वरी। कौलमन्दिरसंस्था च कुलधर्मविडम्बिनी।।
कुलधर्मरताकारा कुलधर्मविनाशिनी। कुलधर्मपण्डिता च कुलधर्मसमृद्धिदा।।
कौलभोगमोक्षदा च कौलभोगेन्द्रयोगिनी। कौलकुद्दालवदना श्वेतचम्पकवासिनी।।
कुलपुष्पमाल्याकान्ता कुलपुष्पभवोद्भवा। कौलकोलाहलकरा कौलकर्मप्रिया क्रिया।।
काशीस्थिता काशकन्या काशी चक्षुःप्रिया कुथा। काष्ठासनप्रिया काका काकपक्षकपालिका।।
कपालरसभोज्या च कपालनवमालिनी। कपालस्था च कापाली कपालसिद्धिदायिनी।। 60।।

कपाला कुलकर्त्री च कपालशिखरस्थिता। कथना कृपणश्रीदा कृपी कृपणसेविता।।
कर्महन्त्री कर्मगता कर्माकर्मविवर्जिता। कर्मसिद्धिरता कामी कर्मज्ञाननिवासिनी।।
कर्मधर्मसुशीला च कर्मधर्मवशंकरी। कनकाब्जसुनिर्माणमहासिंहासनस्थिता।।
कनकग्रन्थिमाल्याढ्या कनकग्रन्थिभेदिनी। कनकोद्भवकन्या च कनकाम्भोजवासिनी।।
कालकूटादिकूटस्था किटिशब्दान्तरस्थिता। कंकपक्षिनादमुखा कामधेनूद्भवा कला।।
कंकणाभा धरा कर्दा कर्दमा कर्दमस्थिता। कर्दमस्थजलाच्छन्ना कर्दमस्थजनप्रिया।।
कमठस्था कार्मुकस्था कर्मस्था कंसनाशिनी। कंसप्रिया कंसहन्त्री कंसाज्ञानकरालिनी।।
कांचनाभा कांचनदा कामदा क्रमदा कदा। कान्तभिन्ना कान्तचिन्ता कमलासनवासिनी।।
कमलासनसिद्धिस्था कमलासनदेवता। कुत्सिता कुत्सितरता कुत्सा शापविवर्जिता।।
कुपुत्ररक्षिका कुल्ला कुपुत्रमानसापहा। कुजरक्षकरी कौजी कुब्जाख्या कुब्जविग्रहा।।70।।

कुनखी कूपदीक्षुस्था कुकरी कुधनी कुदा। कुप्रिया कोकिलानन्दा कोकिला कामदायिनी।।
कुकामिना कुबुद्धिस्था कूर्पवाहनमोहिनी। कुलका कुललोकस्था कुशासनसुसिद्धिदा।।
कौशिकी देवता कस्या कन्नादनादसुप्रिया। कुसौष्ठवा कुमित्रस्था कुमित्रशत्रुघातिनी।।
कुज्ञाननिकरा कुस्था कुजिस्था कर्जदायिनी। ककर्जा कर्ज्जकरिणी कर्जवद्धविमोहिनी।।
कर्जशोधनकर्त्री च कालास्त्रधारिणी सदा। कुगतिः कालसुगतिः कलिबुद्धिविनाशिनी।।
कलिकालफलोत्पन्ना कलिपावनकारिणी। कलिपापहरा काली कलिसिद्धिसुसूक्ष्मदा।।
कालिदासवाक्यगता कालिदाससुसिद्धिदा। कलिशिक्षा कालशिक्षा कन्दशिक्षापरायणा।।
कमनीयभावरता कमनीयसुभक्तिदा। करकाजनरूपा च कक्षावादकरा करा।।
कंचुवर्णा काकवर्णा क्रोष्टुरूपा कषामला। क्रोष्ट्रनादरता कीता कातरा कातरप्रिया।।
कातरस्था कातराज्ञा कातरानन्दकारिणी। काशमर्दतरूद्भूता काशमर्दविभक्षिणी।।80।।

कष्टहानिः कष्टदात्री कष्टलोकविरक्तिदा। कायागता कायसिद्धिः कायानन्दप्रकाशिनी।।
कायगन्धहरा कुम्भा कायकुम्भा कठोरिणी। कठोरतरुसंस्था च कठोरलोकनाशिनी।।
कुमार्गस्थापिता कुप्रा कार्पासतरुसम्भवा। कार्पासवृक्षसूत्रस्था कुवर्गस्था करोत्तरा।।
कर्णाटकर्णसम्भूता कार्णाटी कर्णपूजिता। कर्णास्त्ररक्षिका कर्णा कर्णहा कर्णकुण्डला।।
कुन्तलादेशनमिता कुटुम्बा कुम्भकारिका। कर्णासरासना कृष्टा कृष्णहस्ताम्बुजार्जिता।।
कृष्णांगी कृष्णदेहस्था कुदेशस्था कुमंगला। क्रूरकर्मस्थिता कोरा किरात कुलकामिनी।।
कालवारिप्रिया कामा काव्यवाक्यप्रिया क्रुधा। कंजलता कौमुदी च कुज्योत्स्ना कलनप्रिया।।
कलना सर्वभूतानां कपित्थवनवासिनी। कटुनिम्बस्थिता काख्या कवर्गाख्या कवर्गिका।।
किरातच्छेदिनी कार्या कार्याकार्यविवर्जिता। कात्यायनादिकल्पस्था कात्यायनसुखोदया।।
कुक्षेत्रस्था कुलाविघ्ना करणादिप्रवेशिनी। कांकाली किंकला काला किलिता सर्वकामिनी।। 90।।

कीलितापेक्षिता कूटा कूटकुंकुमचर्चिता। कुंकुमागन्धनिलया कुटुम्बभवनस्थिता॥
कुकृपा करणानन्दा कवितारसमोहिनी। काव्यशास्त्रानन्दरता काव्यपूज्या कवीश्वरी॥
कटकादिहस्तिरथहयदुन्दुभिशब्दिनी। कितवा क्रूरधूर्तस्था केकाशब्दनिवासिनी॥
कें केवलाम्बिता केता केतकीपुष्पमोहिनी। कैं कैवल्यगुणोद्वास्या कैवल्यधनदायिनी॥
करी धनीन्द्रजननी काक्षताक्षकलंकिनी। कुडुवान्ता कान्तिशान्ता कांक्षापारमहंस्यगा॥
कर्त्री चित्ता कान्तवित्ता कृषणा कृषिभोजिनी। कुंकुमाशक्तहृदया केयूरहारमालिनी॥
कीश्वरी केशवा कुम्भा कैशोरजनपूजिता। कलिकामध्यनिरता कोकिलस्वरगामिनी॥
कुरदेहहरा कुम्बा कुडुम्बा कुरभेदिनी। कुण्डलीश्वरसंवादा कुण्डलीश्वरमध्यगा॥
कालसूक्ष्मा कालयज्ञा कालहारकरी कहा। कहलस्था कलहस्था कलहा कलहांकरी॥
कुरंगी श्रीकुरंगस्था कोरंगी कुण्डलापहा। कुकलंकी कृष्णबुद्धि कृष्णा ध्याननिवासिनी॥ 100॥

कुतवा काष्ठवलता कृतार्थकरणी कुसी। कलनकस्था कस्वरस्था कलिका दोषभंगजा॥
कुसुमाकारकमला कुसुमस्त्रग्विभूषणा। किंजल्का कैतवार्कशा कमनीयजलोदया॥
ककारकूटसर्वांगी ककाराम्बरमालिनी। कालभेदकरा काटा कर्पवासा ककुत्स्थला॥
कुवासा कबरी कर्वा कूसवी कुरुपालनी। कुरुपृष्ठा कुरुश्रेष्ठा कुरूणां ज्ञाननाशिनी॥
कुतूहलरता कान्ता कुव्याप्ता कष्टबन्धना। कषायणतरुस्था च कषायणरसोद्भवा॥
कतिविद्या कुष्ठदात्री कुष्ठिशोकविसर्जनी। काष्ठासनगता कार्याश्रया काश्रया कौलिका॥
कालिका कालिसंत्रस्ता कौलिकध्यानवासिनी। क्लृप्तस्था क्लृप्तजननी क्लृप्तच्छन्ना कलिध्वजा॥
केशवा केशवानन्दा केश्यादिदानवापहा। केशवांगजकन्या च केशवांगजमोहिनी॥
किशोरार्चनयोग्या च किशोरदेवदेवता। कान्तश्रीकरणी कुत्या कपटा प्रियघातिनी॥
कुकामजनिता कौंचा कौंचस्था कौंचवासिनी। कूपस्था कूपबुद्धिस्था कूपमाला मनोरमा॥ 110॥

कूपपुष्पाश्रया कान्तिः क्रमदाक्रमदाक्रमा। कुविक्रमा कुक्रमस्था कुण्डली कुण्डदेवता॥
कौण्डिल्यनगरोद्भूता कौण्डिल्यगोत्रपूजिता। कपिराजस्थिता कापी कपिबुद्धिबलोदया॥
कपिध्यानपरा मुख्या कुव्यवस्था कुसाक्षिदा। कुमध्यस्था कुकल्पा च कुलपंक्तिप्रकाशिनी॥
कुलभ्रमरदेहस्था कुलभ्रमरनादिनी। कुलासंगा कुलाक्षी च कुलमत्ता कुलानिला॥
कलिचिन्हा कालचिन्हा कण्ठचिन्हा कवीन्द्रजा। करीन्द्रा कमलेशश्रीः कोटिकन्दर्पदर्पहा॥
कोटितेजोमयी कोट्या कोटीरपद्ममालिनी। कोटीरमोहिनी कोटिः कोटिकोटिविधूद्भवा॥
कोटिसूर्यसमानास्या कोटिकालानलोपमा। कोटीरहारललिता कोटिपर्वतधारिणी॥
कुचयुग्मधरा देवी कुचकामप्रकाशिनी। कुचानन्दा कुचाच्छन्ना कुचकाठिन्यकारिणी॥
कुचयुग्ममोहनस्था कुचमायातुरा कुचा। कुचयौवनसम्मोहा कुचमर्दनसौख्यदा॥
काचस्था काचदेहा च काचपूरनिवासिनी। काचग्रस्था काचवर्णा कीचकप्राणनाशिनी॥120॥

कमला लोचनप्रेमा कोमलाक्षी मनुप्रिया। कमलाक्षी कमलजा कमलास्या करालजा।।
कमलांघ्रिद्वया काम्या कराख्या करमालिनी। करपद्मधरा कन्दा कन्दबुद्धिप्रदायिनी।।
कमलोद्भवपुत्री च कमला पुत्रकामिनी। किरन्ती किरणाच्छन्ना किरणप्राणवासिनी।।
काव्यप्रदा काव्यचित्ता काव्यसारप्रकाशिनी। कलाम्बा कल्पजननी कल्पभेदासनस्थिता।।
कालेच्छा कालसारस्था कालमारणघातिनी। किरणक्रमदीपस्था कर्मस्था क्रमदीपिका।।
काललक्ष्मी: कालचण्डा कुलचण्डेश्वरप्रिया। काकिनीशक्तिदेहस्था कितवा किन्तकारिणी।।
करंचा कंचुका क्रौंचा काकचंचुपुटस्थिता। काकाख्या काकशब्दस्था कालाग्निदहनार्थिका।।
कुचक्षनिलया कुत्रा कुपुत्रा क्रतुरक्षिका। कनकप्रतिभाकारा करबन्धाकृतिस्थिता।।
कृतिरूपा कृतिप्राणा कृतिक्रोधनिवारिणी। कुक्षिरक्षाकरा कुक्षा कुक्षिब्रह्माण्डधारिणी।।
कुक्षिदेवस्थिता कुक्षि क्रियादक्षा क्रियातुरा। क्रियानिष्ठा क्रियानन्दा क्रतुकर्मा क्रियाप्रिया।।130।।

कुशलासवसंशक्ता कुशारिप्राणवल्लभा। कुशारिवृक्षमदिरा काशीराजवशोद्यमा।।
काशीराजगृहस्था च कर्णभ्रातृगृहस्थिता। कर्णाभरणभूषाढ्या कण्ठभूषा च कण्ठिका।।
कण्ठस्थानगता कण्ठा कण्ठपद्मनिवासिनी। कण्ठप्रकाशकरिणी कण्ठमाणिक्यमालिनी।।
कण्ठपद्मसिद्धिकरी कण्ठाकाशनिवासिनी। कण्ठपद्मसाकिनीस्था कण्ठषोडशपत्रिका।।
कृष्णाजिनधरा विद्या कृष्णाजिनसुवाससी। कुतकस्था कुखेलस्था कुण्डवालंकृताकृता।।
कलगीता कालघजा कलभंगपरायणा। कालीचन्द्रा कला काव्या कुचस्था कुचलप्रदा।।
कुचौरघातिनी कच्छा कच्छादस्था कजातना। कंजाच्छदमुखी कंजा कंजतुण्डा कजीवली।।
कामराभार्सुरवाद्यस्था कियद्हुंकारनादिनी। कणादयज्ञसूत्रस्था कीलालयज्ञसंज्ञका।।
कटुहासा कपाटस्था कटधूमनिवासिनी। कटिनादघोरतरा कुट्टला पाटलिप्रिया।।
कामचाराब्जनेत्रा च कामचोद्गारसंक्रमा। काष्ठपर्वतसंदाहा कुष्ठा कुष्ठनिवारिणी।।140।।

कहोडमन्त्रसिद्धस्था काहला डिण्डिमप्रिया। कुलडिण्डिमवाद्यस्था कामडामरसिद्धिदा।।
कुलामरवध्यस्था कुलकेकानिनादिनी। कोजागरढोलनादा कास्यवीररणस्थिता।।
कालादिकरणच्छिद्रा करुणानिधिवत्सला। क्रतुश्रीदा कृतार्थश्री: कालतारा कुलोत्तरा।।
कथापूज्या कथानन्दा कथना कथनप्रिया। कार्थचिन्ता कार्थविद्या काममिथ्यापवादिनी।।
कदम्बपुष्पसंकाशा कदम्बपुष्पमालिनी। कादम्बरी पानतुष्टा कायदम्भा कदोद्यमा।।
कुंकुलेपत्रमध्यस्था कुलाधारा धरप्रिया। कुलदेवशरीरार्धा कुलधामा कलाधरा।।
कामरागा भूषणाढ्या कामिनीरगुणप्रिया। कुलीना नागहस्ता च कुलीननागवाहिनी।।
कामपूरस्थिता कोपा कपाली बकुलोद्भवा। कारागारजनापाल्या कारागारप्रपालिनी।।
क्रियाशक्ति: कालपंक्ति: कार्णपंक्ति: कफोदया। कामफुल्लारविंदस्था कामरूपफलाफला।।
कायफला कायफेणा कान्ता नाडीफलीश्वरा। कमफेरुगता गौरी कायवाणी कुवीरगा।।150।।

कबरी मणिबन्धस्था कावेरीतीर्थसंगमा। कामभीतिहरा कान्ता कामवाकुभ्रमातुरा॥
कविभावहरा भामा कमनीयभयापहा। कामगर्भदेवमाता कामकल्पलतामरा॥
कमठप्रियमांसादा कमठा मर्कटप्रिया। किमाकारा किमाधारा कुम्भकारमनस्थिता॥
काम्ययज्ञस्थिता चण्डा काम्ययज्ञोपवीतिका। कामयागसिद्धिकरी काममैथुनयामिनी॥
कामाख्या यमलाशस्था कालयामा कुयोगिनी। कुरुयागहतायोग्या कुरुमांसविभक्षिणी॥
कुरुरक्तप्रियाकारी किंकरप्रियकारिणी। कर्त्रीश्वरी कारणात्मा कविभक्षा कविप्रिया॥
कविशत्रुप्रष्ठलग्ना कैलासोपवनस्थिता। कलित्रिधा त्रिसिद्धिस्था कलित्रिदिनसिद्धिदा॥
कलंकरहिता काली कलिकल्मषकामदा। कुलपुष्परंग सूत्रमणिग्रन्थिसुशोभना॥
कम्बोजवंगदेशस्था कुलवासुकिरक्षिका। कुलशास्त्रक्रिया शान्तिः कुलशान्तिः कुलेश्वरी॥
कुशलप्रतिभा काशी कुलषट्चक्रभेदिनी। कुलषट्पद्ममध्यस्था कुलषट्पद्मदीपिनी॥160॥

कृष्णमार्जारकोलस्था कृष्णमार्जारषष्ठिका। कुलमार्जारकुपिता कुलमार्जारषोडशी॥
कालान्तकवलोत्पन्ना कपिलान्तकघातिनी। कलहंसा कलहश्री कलहार्या कलामला॥
कक्षपपक्षरक्षा च कुक्षेत्रपक्षसंक्षया। काक्षरक्षासाक्षिणी च महामोक्षप्रतिष्ठिता॥
अर्ककोटिशतच्छाया आन्वीक्षिकिकरार्चिता। कावेरीतीरभूमिस्था आग्नेयार्कास्त्रधारिणी॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्रीमन्महाकुण्डलिनी सहस्त्रनामावलिः

ॐ कुलेश्वर्यै नमः
ॐ कुलानन्दायै नमः
ॐ कुलीनायै नमः
ॐ कुलकुण्डल्यै नमः
ॐ श्रीमन्महाकुण्डल्यै नमः
ॐ कुलकन्यायै नमः
ॐ कुलप्रियायै नमः
ॐ कुलक्षेत्रस्थितायै नमः
ॐ कौल्यै नमः
ॐ कुलीनार्थप्रकाशिन्यै नमः 10
ॐ कुलाख्यायै नमः
ॐ कुलमार्गस्थायै नमः
ॐ कुलशास्त्रार्थपातिन्यै नमः
ॐ कुलज्ञायै नमः
ॐ कुलयोग्यायै नमः
ॐ कुलपुष्पप्रकाशिन्यै नमः
ॐ कुलीनायै नमः
ॐ कुलाध्यक्षायै नमः
ॐ कुलचन्दन-लेपितायै नमः
ॐ कुलरूपायै नमः 20
ॐ कुलोद्भूतायै नमः
ॐ कुलकुण्डलि-वासिन्यै नमः
ॐ कुलाभिन्नायै नमः
ॐ कुलोत्पन्नायै नमः
ॐ कुलाचारविनोदिन्यै नमः
ॐ कुलवृक्षसमुद्भूतायै नमः
ॐ कुलमालायै नमः
ॐ कुलप्रभायै नमः
ॐ कुलज्ञायै नमः
ॐ कुलमध्यस्थायै नमः 30
ॐ कुलकंकण-शोभितायै नमः
ॐ कुलोत्तरायै नमः
ॐ कौलपूजायै नमः
ॐ कुलालापायै नमः
ॐ कुलक्रियायै नमः
ॐ कुलभेदायै नमः
ॐ कुलप्राणायै नमः
ॐ कुलदेव्यै नमः
ॐ कुलस्तुत्यै नमः
ॐ कौलिकायै नमः 40
ॐ कालिकायै नमः
ॐ काल्यायै नमः
ॐ कलिभिन्नायै नमः
ॐ कलाकलायै नमः
ॐ कलिकल्मषहन्त्र्यै नमः
ॐ कलिदोषविनाशिन्यै नमः
ॐ कंकाल्यै नमः
ॐ केवलानन्दायै नमः
ॐ कालज्ञायै नमः
ॐ कालधारिण्यै नमः 50
ॐ कौतुक्यै नमः
ॐ कौमुद्यै नमः
ॐ केकायै नमः
ॐ काकायै नमः
ॐ काकलयान्तरायै नमः
ॐ कोमलांग्यै नमः
ॐ करालास्यायै नमः
ॐ कन्दपूज्यायै नमः
ॐ कोमलायै नमः
ॐ कैशोर्यै नमः 60

ॐ काकपुच्छस्थायै नमः
ॐ कम्बलासनवासिन्यै नमः
ॐ कैकेयीपूजितायै नमः
ॐ कोलायै नमः
ॐ कोलपुत्र्यै नमः
ॐ कपिध्वजायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः
ॐ कम्बलाश्वतरप्रियायै नमः
ॐ कलिकाभंग-दोषस्थायै नमः 70
ॐ कालज्ञायै नमः
ॐ कालकुण्डल्यै नमः
ॐ काव्यदायै नमः
ॐ कविता-वाण्यै नमः
ॐ कालसन्दर्भभेदिन्यै नमः
ॐ कुमार्यै नमः
ॐ करुणाकारायै नमः
ॐ कुरुसैन्यविनाशिन्यै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कुलगतायै नमः 80
ॐ कामायै नमः
ॐ कामिन्यै नमः
ॐ कामनाशिन्यै नमः
ॐ कामोद्भवायै नमः
ॐ कामकन्यायै नमः
ॐ केवलायै नमः
ॐ कालघातिन्यै नमः
ॐ कैलासशिखरारूढायै नमः
ॐ कैलासपतिसेवितायै नमः
ॐ कैलासनाथनमितायै नमः 90
ॐ केयूरहारमण्डितायै नमः
ॐ कन्दर्पायै नमः
ॐ कठिनानन्दायै नमः
ॐ कुलगायै नमः
ॐ कीचकृत्यहायै नमः
ॐ कमलास्यायै नमः
ॐ कठोरायै नमः
ॐ कीटरूपायै नमः
ॐ कटिस्थितायै नमः
ॐ कन्देश्वर्यै नमः 100
ॐ कन्दरूपायै नमः
ॐ कोलिकायै नमः
ॐ कन्दवासिन्यै नमः
ॐ कूटस्थायै नमः
ॐ कूटभक्षायै नमः
ॐ कालकूटविनाशिन्यै नमः
ॐ कामाख्यायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ काम्यायै नमः
ॐ कामराजतनूद्भवायै नमः 110
ॐ कामरूपधरायै नमः
ॐ कर्मायै नमः
ॐ कमनीयायै नमः
ॐ कविप्रियायै नमः
ॐ कंजाननायै नमः
ॐ कंजहस्तायै नमः
ॐ कंजपत्रायतेक्षणायै नमः
ॐ काकिन्यै नमः
ॐ कामरूपस्थायै नमः
ॐ कामरूपप्रकाशिन्यै नमः 120
ॐ कोलाविध्वंसिन्यै नमः
ॐ कंकायै नमः
ॐ कलंकार्ककलंकिन्यै नमः
ॐ महाकुलनद्यै नमः

ॐ कर्णायै नमः
ॐ कर्णकाण्डविमोहिन्यै नमः
ॐ काण्डस्थायै नमः
ॐ काण्डकरुणायै नमः
ॐ कर्मकस्थायै नमः
ॐ कुटुम्बिन्यै नमः 130
ॐ कमलाभायै नमः
ॐ कल्पायै नमः
ॐ कल्लायै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ करुणामय्यै नमः
ॐ करुणेश्यै नमः
ॐ करायै नमः
ॐ कर्त्र्यै नमः
ॐ कर्तृहस्तायै नमः
ॐ कलोदयायै नमः 140
ॐ कारुण्यसागरोद्भूतायै नमः
ॐ कारुण्यसिन्धुवासिन्यै नमः
ॐ कार्त्तिकेश्यै नमः
ॐ कार्त्तिकस्थायै नमः
ॐ कार्त्तिकप्राणपालिन्यै नमः
ॐ करुणानिधिपूज्यायै नमः
ॐ करणीयायै नमः
ॐ क्रियायै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ कल्पस्थायै नमः 150
ॐ कल्पनिलयायै नमः
ॐ कल्पातीतायै नमः
ॐ कल्पितायै नमः
ॐ कुलयायै नमः
ॐ कुलविज्ञानायै नमः
ॐ कर्षिण्यै नमः
ॐ कालरात्रिकायै नमः
ॐ कैवल्यदायै नमः
ॐ कोकरस्थायै नमः
ॐ कलमंजीररंजन्यै नमः 160
ॐ कलयन्त्यै नमः
ॐ कालजिह्वायै नमः
ॐ किंकरासनकारिण्यै नमः
ॐ कुमुदायै नमः
ॐ कुशलानन्दायै नमः
ॐ कौशल्याकाशवासिन्यै नमः
ॐ कसापहासहन्त्र्यै नमः
ॐ कैवल्यगुणसम्भवायै नमः
ॐ एकाकिन्यै नमः
ॐ अर्करूपायै नमः 170
ॐ कुवलायै नमः
ॐ कर्कटस्थितायै नमः
ॐ कर्कोटकायै नमः
ॐ कोष्ठरूपायै नमः
ॐ कूटवह्निकरस्थितायै नमः
ॐ मधुरध्वानं कूजन्त्यै नमः
ॐ सुलक्षणं कामयन्त्यै नमः
ॐ केतक्यै नमः
ॐ कुसुमानन्दायै नमः
ॐ केतकीपुण्यमण्डितायै नमः 180
ॐ कर्पूरपूररुचिरायै नमः
ॐ कर्पूरभक्षणप्रियायै नमः
ॐ कपालपात्रहस्तायै नमः
ॐ कपालचन्द्रधारिण्यै नमः
ॐ कामधेनुस्वरूपायै नमः
ॐ कामधेनवे नमः
ॐ क्रियान्वितायै नमः
ॐ कश्यप्यै नमः

ॐ काश्यपायै नमः
ॐ कुन्त्यै नमः 190
ॐ केशान्तायै नमः
ॐ केशमोहिन्यै नमः
ॐ कालकर्त्र्यै नमः
ॐ कूपकर्त्र्यै नमः
ॐ कुलपायै नमः
ॐ कामचारिण्यै नमः
ॐ कुंकुमाभायै नमः
ॐ कज्जलस्थायै नमः
ॐ कमितायै नमः
ॐ कोपघातिन्यै नमः 200
ॐ केलिस्थायै नमः
ॐ केलिकलितायै नमः
ॐ कोपनायै नमः
ॐ कर्पटस्थितायै नमः
ॐ कलातीतायै नमः
ॐ कालविद्यायै नमः
ॐ कालात्म-पुरुषोद्भवायै नमः
ॐ कष्टस्थायै नमः
ॐ कष्टकुष्ठस्थायै नमः

ॐ कुष्ठहायै नमः 210
ॐ कष्टहायै नमः
ॐ कुशायै नमः
ॐ कालिकायै नमः
ॐ स्फुटकर्त्र्यै नमः
ॐ काम्बोजायै नमः
ॐ कामलायै नमः
ॐ कुलायै नमः
ॐ कुशलाख्यायै नमः
ॐ काककुष्ठायै नमः
ॐ कर्मस्थायै नमः 220
ॐ कूर्ममध्यगायै नमः
ॐ कुण्डलाकार-चक्रस्थायै नमः
ॐ कुण्डगोलोद्भवायै नमः
ॐ कफायै नमः
ॐ कपित्थाग्रवसायै नमः
ॐ काशायै नमः
ॐ कपित्थरोधकारिण्यै नमः
ॐ काहोड्यै नमः
ॐ काहडायै नमः
ॐ काडायै नमः 230



ॐ कंकलायै नम:
ॐ भाषकारिण्यै नम:
ॐ कनकायै नम:
ॐ कनकाभायै नम:
ॐ कनकाद्रिनिवासिन्यै नम:
ॐ कार्पासयज्ञ-सूत्रस्थायै नम:
ॐ कूटब्रह्मार्थसाधिन्यै नम:
ॐ कलंजभक्षिण्यै नम:
ॐ क्रूरायै नम:
ॐ क्रोधपुंजायै नम: 240
ॐ कपिस्थितायै नम:
ॐ कपाल्यै नम:
ॐ साधनरतायै नम:
ॐ कनिष्ठायै नम:
ॐ काशवासिन्यै नम:
ॐ कुंजरेश्यै नम:
ॐ कुंजरस्थायै नम:
ॐ कुंजरायै नम:
ॐ कुंजरागत्यै नम:
ॐ कुंजस्थायै नम: 250
ॐ कुंजरमण्यै नम:
ॐ कुंजमन्दिरवासिन्यै नम:
ॐ कुपितायै नम:
ॐ कोपशून्यायै नम:
ॐ कोपायै नम:
ॐ कोपविवर्जितायै नम:
ॐ कपिंजलस्थायै नम:
ॐ कापिंजायै नम:
ॐ कपिंजलतरूद्भवायै नम:
ॐ कुन्तीप्रेमकथाविष्टायै नम: 260
ॐ कुन्तीमानसपूजितायै नम:
ॐ कुन्तलायै नम:
ॐ कुन्तहस्तायै नम:
ॐ कुलकुन्तल-लोहिन्यै नम:
ॐ कान्तांघ्रिसेविकायै नम:
ॐ कान्तकुशलायै नम:
ॐ कोशलावत्यै नम:
ॐ केशिहन्त्र्यै नम:
ॐ ककुत्स्थायै नम:
ॐ ककुत्स्थ-वनवासिन्यै नम: 270
ॐ कैलासशिखरानन्दायै नम:
ॐ कैलासगिरि-पूजितायै नम:
ॐ कीलाल-निर्मलाकारायै नम:
ॐ कीलाल-मुग्धकारिण्यै नम:
ॐ कुतुनायै नम:
ॐ कुट्टह्यै नम:
ॐ कुट्ठायै नम:
ॐ कूटनायै नम:
ॐ मोदकारिण्यै नम:
ॐ क्रौंकार्यै नम: 280
ॐ क्रौंकर्यै नम:
ॐ काश्यै नम:
ॐ कुहुशब्दस्थायै नम:
ॐ किरातिन्यै नम:
ॐ सर्ववचनं कूजन्त्यै नम:
ॐ कृताकृतं कारयन्त्यै नम:
ॐ कृपानिधिस्वरूपायै नम:
ॐ कृपासागरवासिन्यै नम:
ॐ केवलानन्द-निरतायै नम:
ॐ केवलानन्द-कारिण्यै नम: 290
ॐ कृमिलायै नम:
ॐ कृमिदोषघ्न्यै नम:
ॐ कृपायै नम:
ॐ कपटकुट्टितायै नम:

ॐ कृशांग्यै नमः
ॐ क्रमभंगस्थायै नमः
ॐ किंकरस्थायै नमः
ॐ कटस्थितायै नमः
ॐ कामरूपायै नमः
ॐ कान्तरतायै नमः 300
ॐ कामरूपस्य सिद्धिदायै नमः
ॐ कामरूपपीठदेव्यै नमः
ॐ कामरूपांकुजायै नमः
ॐ कुजायै नमः
ॐ कामविद्यायै नमः
ॐ कामरूपादिकालिकायै नमः
ॐ कामरूपकलायै नमः
ॐ काम्यायै नमः
ॐ कामरूपकुलेश्वर्यै नमः
ॐ कामरूपजनानन्दायै नमः 310
ॐ कामरूपकुशाग्रध्यै नमः
ॐ कामरूपकराकाशायै नमः
ॐ कामरूपतरुस्थितायै नमः
ॐ कामात्मजायै नमः
ॐ कामकलायै नमः
ॐ कामरूपविहारिण्यै नमः
ॐ कामशास्त्रार्थ-मध्यस्थायै नमः
ॐ कामरूपक्रियाकलायै नमः
ॐ कामरूपमहाकाल्यै नमः
ॐ कामरूपयशोमय्यै नमः 320
ॐ कामरूपपरमानन्दायै नमः
ॐ कामरूपादि-कामिन्यै नमः
ॐ कूलमूलायै नमः
ॐ कामरूप-पद्ममध्य-निवासिन्यै नमः
ॐ कृतांजलिप्रियायै नमः
ॐ कृत्यायै नमः
ॐ कृत्यादेवीस्थितायै नमः
ॐ कटायै नमः
ॐ कटकायै नमः
ॐ काटकायै नमः 330
ॐ कोटिकटिघण्ट-विनोदिन्यै नमः
ॐ कटिस्थूलतरायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ कात्यायनसुसिद्धिदायै नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ काचलस्थायै नमः
ॐ कामचन्द्राननायै नमः
ॐ कथायै नमः
ॐ काश्मीरदेशनिरतायै नमः
ॐ काश्मीर्यै नमः 340
ॐ कृषिकर्मजायै नमः
ॐ कृषिकर्मस्थितायै नमः
ॐ कौर्मायै नमः
ॐ कूर्मपृष्ठनिवासिन्यै नमः
ॐ कालघण्टायै नमः
ॐ नादरतायै नमः
ॐ कलमञ्जीरमोहिन्यै नमः
ॐ शत्रुवर्गान् कलयन्त्यै नमः
ॐ गुणागुणं क्रोधयन्त्यै नमः
ॐ सर्वकामं कामयन्त्यै नमः 350
ॐ जगत्त्रयं काशयन्त्यै नमः
ॐ कौलकन्यायै नमः
ॐ कालकन्यायै नमः
ॐ कौलकालकुलेश्वर्यै नमः
ॐ कौलमन्दिरसंस्थायै नमः
ॐ कुलधर्मविडम्बिन्यै नमः
ॐ कुलधर्मरताकारायै नमः
ॐ कुलधर्मविनाशिन्यै नमः

ॐ कुलधर्मपण्डितायै नमः
ॐ कुलधर्मसमृद्धिदायै नमः 360
ॐ कौलभोगमोक्षदायै नमः
ॐ कौलभोगेन्द्रयोगिन्यै नमः
ॐ कौलकुद्दालवदनायै नमः
ॐ श्वेतचम्पकवासिन्यै नमः
ॐ कुलपुष्पमाल्याकान्तायै नमः
ॐ कुलपुष्पभवोद्भवायै नमः
ॐ कौलकोलाहलकरायै नमः
ॐ कौलकर्मप्रियायै नमः
ॐ क्रियायै नमः
ॐ काशीस्थितायै नमः 370
ॐ काशकन्यायै नमः
ॐ काश्यै नमः
ॐ चक्षुप्रियायै नमः
ॐ कुथायै नमः
ॐ काष्ठासनप्रियायै नमः
ॐ काकायै नमः
ॐ काकपक्षकपालिकायै नमः
ॐ कपाल-रसभोज्यायै नमः
ॐ कपाल-नवमालिन्यै नमः
ॐ कपालस्थायै नमः 380
ॐ कापाल्यै नमः
ॐ कपालसिद्धिदायिन्यै नमः
ॐ कपालायै नमः
ॐ कुलकर्त्र्यै नमः
ॐ कपाल-शिखरस्थितायै नमः
ॐ कथनायै नमः
ॐ कृपणश्रीदायै नमः
ॐ कृप्यै नमः
ॐ कृपणसेवितायै नमः
ॐ कर्महन्त्र्यै नमः 390
ॐ कर्मगतायै नमः
ॐ कर्माकर्मविवर्जितायै नमः
ॐ कर्मसिद्धिरतायै नमः
ॐ काम्यै नमः
ॐ कर्मज्ञाननिवासिन्यै नमः
ॐ कर्मधर्मसुशीलायै नमः
ॐ कर्मधर्मवशंकर्यै नमः
ॐ कनकग्रन्थिमाल्याढ्यायै नमः
ॐ कनकग्रन्थिभेदिन्यै नमः
ॐ कनकोद्भवकन्यायै नमः 400
ॐ कनकाम्भोजवासिन्यै नमः
ॐ कालकूटादिकूटस्थायै नमः
ॐ किटिशब्दान्तरस्थितायै नमः
ॐ कंकपक्षिनादमुखायै नमः
ॐ कामधेनूद्भवायै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ कंकणाभायै नमः
ॐ धरायै नमः
ॐ कर्दायै नमः
ॐ कर्दमायै नमः 410
ॐ कर्दमस्थितायै नमः
ॐ कर्दमस्थजलाच्छन्नायै नमः
ॐ कर्दमस्थजनप्रियायै नमः
ॐ कमठस्थायै नमः
ॐ कार्मुकस्थायै नमः
ॐ कर्मस्थायै नमः
ॐ कंसनाशिन्यै नमः
ॐ कंसप्रियायै नमः
ॐ कंसहन्त्र्यै नमः
ॐ कंसाज्ञानकरालिन्यै नमः 420
ॐ कांचनाभायै नमः
ॐ कांचनदायै नमः

ॐ कामदायै नमः
ॐ क्रमदायै नमः
ॐ कदायै नमः
ॐ कान्तभिन्नायै नमः
ॐ कान्तचिन्तायै नमः
ॐ कमलासन-वासिन्यै नमः
ॐ कमलासन-सिद्धिस्थायै नमः
ॐ कमलासन-देवतायै नमः 430
ॐ कुत्सितायै नमः
ॐ कुत्सितरतायै नमः
ॐ कुत्सायै नमः
ॐ शापविवर्जितायै नमः
ॐ कुपुत्ररक्षिकायै नमः
ॐ कुल्लायै नमः
ॐ कुपुत्रमानसापहायै नमः
ॐ कुजरक्षकर्यै नमः
ॐ कौज्यै नमः
ॐ कुब्जाख्यायै नमः 440
ॐ कुब्जविग्रहायै नमः
ॐ कुनख्यै नमः
ॐ कूपदीक्षुस्थायै नमः
ॐ कुकर्यै नमः
ॐ कुधन्यै नमः
ॐ कुदायै नमः
ॐ कुप्रियायै नमः
ॐ कोकिलानन्दायै नमः
ॐ कोकिलायै नमः
ॐ कामदायिन्यै नमः 450
ॐ कुकामिनायै नमः
ॐ कुबुद्धिस्थायै नमः
ॐ कूर्पवाहनमोहिन्यै नमः
ॐ कुलकायै नमः
ॐ कुललोकस्थायै नमः
ॐ कुशासन-सुसिद्धिदायै नमः
ॐ कौशिकीदेवतायै नमः
ॐ कस्यायै नमः
ॐ कन्नादनाद-सुप्रियायै नमः
ॐ कुसौष्ठवायै नमः 460
ॐ कुमित्रस्थायै नमः
ॐ कुमित्रशत्रुघातिन्यै नमः
ॐ कुज्ञाननिकरायै नमः
ॐ कुस्थायै नमः
ॐ कुजिस्थायै नमः
ॐ कर्जदायिन्यै नमः
ॐ ककर्जायै नमः
ॐ कर्ज्जकरिण्यै नमः
ॐ कर्जवद्धविमोहिन्यै नमः
ॐ कर्जशोधनकर्त्र्यै नमः 470
ॐ कालास्त्रधारिण्यै नमः
ॐ कुगत्यै नमः
ॐ कालसुगत्यै नमः
ॐ कलिबुद्धिविनाशिन्यै नमः
ॐ कलिकालफलोत्पन्नायै नमः
ॐ कलिपावनकारिण्यै नमः
ॐ कलिपापहरायै नमः
ॐ काल्यै नमः
ॐ कलिसिद्धिसुसूक्ष्मदायै नमः
ॐ कालिदास-वाक्यगतायै नमः 480
ॐ कालिदास-सुसिद्धिदायै नमः
ॐ कलिशिक्षायै नमः
ॐ कालशिक्षायै नमः
ॐ कन्दशिक्षापरायणायै नमः
ॐ कमनीयभावरतायै नमः
ॐ कमनीयसुभक्तिदायै नमः

ॐ करकाजनरूपायै नमः
ॐ कक्षावादकरायै नमः
ॐ करायै नमः
ॐ कंचुवर्णायै नमः 490
ॐ काकवर्णायै नमः
ॐ क्रोष्टुरूपायै नमः
ॐ कषामलायै नमः
ॐ क्रोष्ट्रनादरतायै नमः
ॐ कीतायै नमः
ॐ कातरायै नमः
ॐ कातरप्रियायै नमः
ॐ कातरस्थायै नमः
ॐ कातराज्ञायै नमः
ॐ कातरानन्दकारिण्यै नमः 500
ॐ काशमर्दतरूद्‌भूतायै नमः
ॐ काशमर्दविभक्षिण्यै नमः
ॐ कष्टहान्यै नमः
ॐ कष्टदात्र्यै नमः
ॐ कष्टलोक-विरक्तिदायै नमः
ॐ कायागतायै नमः
ॐ कायसिद्ध्यै नमः
ॐ कायानन्दप्रकाशिन्यै नमः
ॐ कायगन्धहरायै नमः
ॐ कुम्भायै नमः 510
ॐ कायकुम्भायै नमः
ॐ कठोरिण्यै नमः
ॐ कठोरतरुसंस्थायै नमः
ॐ कठोरलोकनाशिन्यै नमः
ॐ कुमार्गस्थापितायै नमः
ॐ कुप्रायै नमः
ॐ कार्पासतरुसम्भवायै नमः
ॐ कार्पासवृक्षसूत्रस्थायै नमः
ॐ कुवर्गस्थायै नमः
ॐ करोत्तरायै नमः 520
ॐ कर्णाटकर्णसम्भूतायै नमः
ॐ कार्णाट्यै नमः
ॐ कर्णपूजितायै नमः
ॐ कर्णास्त्ररक्षिकायै नमः
ॐ कर्णायै नमः
ॐ कर्णहायै नमः
ॐ कर्णकुण्डलायै नमः
ॐ कुन्तलादेश-नमितायै नमः
ॐ कुटुम्बायै नमः
ॐ कुम्भकारिकायै नमः 530
ॐ कर्णासरासनायै नमः
ॐ कृष्टायै नमः
ॐ कृष्णहस्ताम्बुजार्जितायै नमः
ॐ कृष्णांग्यै नमः
ॐ कृष्णदेहस्थायै नमः
ॐ कुदेशस्थायै नमः
ॐ कुमंगलायै नमः
ॐ क्रूरकर्मस्थितायै नमः
ॐ कोरायै नमः
ॐ किरातकुलकामिन्यै नमः 540
ॐ कालवारिप्रियायै नमः
ॐ कामायै नमः
ॐ काव्यवाक्यप्रियायै नमः
ॐ क्रुधायै नमः
ॐ कंजलतायै नमः
ॐ कौमुद्यै नमः
ॐ कुज्योत्स्नायै नमः
ॐ कलनप्रियायै नमः
ॐ सर्वभूतानां कलनायै नमः
ॐ कपित्थवनवासिन्यै नमः 550

ॐ कटुनिम्बस्थितायै नम:
ॐ काख्यायै नम:
ॐ कवर्गाख्यायै नम:
ॐ कवर्गिकायै नम:
ॐ किरातच्छेदिन्यै नम:
ॐ कार्यायै नम:
ॐ कार्याकार्यविवर्जितायै नम:
ॐ कात्यायनादि-कल्पस्थायै नम:
ॐ कात्यायन-सुखोदयायै नम:
ॐ कुक्षेत्रस्थायै नम: 560
ॐ कुलाविघ्नायै नम:
ॐ करणादिप्रवेशिन्यै नम:
ॐ कांकाल्यै नम:
ॐ किंकलायै नम:
ॐ कालायै नम:
ॐ किलितायै नम:
ॐ सर्वकामिन्यै नम:
ॐ कीलितापेक्षितायै नम:
ॐ कूटायै नम:
ॐ कूटकुंकुमचर्चितायै नम: 570
ॐ कुंकुमागन्धनिलयायै नम:
ॐ कुटुम्बभवनस्थितायै नम:
ॐ कुकृपायै नम:
ॐ करणानन्दायै नम:
ॐ कवितारसमोहिन्यै नम:
ॐ काव्यशास्त्रानन्दरतायै नम:
ॐ काव्यपूज्यायै नम:
ॐ कवीश्वर्यै नम:
ॐ कितवायै नम:
ॐ क्रूरधूर्तस्थायै नम: 580
ॐ केकाशब्दनिवासिन्यै नम:
ॐ कें केवलाम्बितायै नम:
ॐ केतायै नम:
ॐ केतकीपुष्पमोहिन्यै नम:
ॐ कैं कैवल्यगुणोद्वास्यायै नम:
ॐ कैवल्यधनदायिन्यै नम:
ॐ कर्यै नम:
ॐ धनीन्द्रजनन्यै नम:
ॐ काक्षताक्षकलंकिन्यै नम:
ॐ कुडुवान्तायै नम: 590
ॐ कान्तिशान्तायै नम:
ॐ कांक्षापारमहंस्यगायै नम:
ॐ कर्त्र्यै नम:
ॐ चित्तायै नम:
ॐ कान्तवित्तायै नम:
ॐ कृषणायै नम:
ॐ कृषिभोजिन्यै नम:
ॐ कुंकुमाशक्तहृदयायै नम:
ॐ केयूरहारमालिन्यै नम:
ॐ कीश्वर्यै नम: 600
ॐ केशवायै नम:
ॐ कुम्भायै नम:
ॐ कैशोरजनपूजितायै नम:
ॐ कलिकामध्यनिरतायै नम:
ॐ कोकिलस्वरगामिन्यै नम:
ॐ कुरदेहहरायै नम:
ॐ कुम्बायै नम:
ॐ कुडुम्बायै नम:
ॐ कुरभेदिन्यै नम:
ॐ कुण्डलीश्वरसंवादायै नम: 610
ॐ कुण्डलीश्वरमध्यगायै नम:
ॐ कालसूक्ष्मायै नम:
ॐ कालयज्ञायै नम:
ॐ कालहारकर्यै नम:



ॐ कहायै नमः
ॐ कहलस्थायै नमः
ॐ कलहस्थायै नमः
ॐ कलहायै नमः
ॐ कलहांकर्यै नमः
ॐ कुरंग्यै नमः 620
ॐ श्रीकुरंगस्थायै नमः
ॐ कोरंग्यै नमः
ॐ कुण्डलापहायै नमः
ॐ कुकलंक्यै नमः
ॐ कृष्णबुद्ध्यै नमः
ॐ कृष्णाध्याननिवासिन्यै नमः
ॐ कुतवायै नमः
ॐ काष्ठवलतायै नमः
ॐ कृतार्थकरण्यै नमः
ॐ कुस्यै नमः 630
ॐ कलनकस्थायै नमः
ॐ कस्वरस्थायै नमः
ॐ कलिकायै दोषभंगजायै नमः
ॐ कुसुमाकारकमलायै नमः
ॐ कुसुमस्रग्विभूषणायै नमः
ॐ किंजल्कायै नमः
ॐ कैतवार्कशायै नमः
ॐ कमनीयजलोदयायै नमः
ॐ ककारकूटसर्वांग्यै नमः
ॐ ककाराम्बरमालिन्यै नमः 640
ॐ कालभेदकरायै नमः
ॐ काटायै नमः
ॐ कर्पवासायै नमः
ॐ ककुत्स्थलायै नमः
ॐ कुवासायै नमः
ॐ कबर्यै नमः
ॐ कर्वायै नमः
ॐ कूसव्यै नमः
ॐ कुरुपालन्यै नमः
ॐ कुरुपृष्ठायै नमः 650
ॐ कुरुश्रेष्ठायै नमः
ॐ कुरूणां ज्ञाननाशिन्यै नमः
ॐ कुतूहलरतायै नमः
ॐ कान्तायै नमः

ॐ कुव्याप्तायै नम:
ॐ कष्टबन्धनायै नम:
ॐ कषायणतरुस्थायै नम:
ॐ कषायणरसोद्भवायै नम:
ॐ कतिविद्यायै नम:
ॐ कुष्ठदात्र्यै नम: 660
ॐ कुष्ठिशोकविसर्जन्यै नम:
ॐ काष्ठासनगतायै नम:
ॐ कार्याश्रियायै नम:
ॐ काश्रयायै नम:
ॐ कौलिकायै नम:
ॐ कालिकायै नम:
ॐ कालिसन्त्रस्तायै नम:
ॐ कौलिकध्यानवासिन्यै नम:
ॐ क्लृप्तस्थायै नम:
ॐ क्लृप्तजनन्यै नम: 670
ॐ क्लृप्तच्छन्नायै नम:
ॐ कलिध्वजायै नम:
ॐ केशवायै नम:
ॐ केशवानन्दायै नम:
ॐ केश्यादिदानवापहायै नम:
ॐ केशवांगजकन्यायै नम:
ॐ केशवांगजमोहिन्यै नम:
ॐ किशोरार्चनयोग्यायै नम:
ॐ किशोरदेवदेवतायै नम:
ॐ कान्तश्रीकरण्यै नम: 680
ॐ कुत्यायै नम:
ॐ कपटाप्रियघातिन्यै नम:
ॐ कुकामजनितायै नम:
ॐ कौंचायै नम:
ॐ कौंचस्थायै नम:
ॐ कौंचवासिन्यै नम:
ॐ कूपस्थायै नम:
ॐ कूपबुद्धिस्थायै नम:
ॐ कूपमालायै नम:
ॐ मनोरमायै नम: 690
ॐ कूपपुष्पाश्रयायै नम:
ॐ कान्त्यै नम:
ॐ क्रमदायै नम:
ॐ अक्रमदायै नम:
ॐ क्रमायै नम:
ॐ कुविक्रमायै नम:
ॐ कुक्रमस्थायै नम:
ॐ कुण्डल्यै नम:
ॐ कुण्डदेवतायै नम:
ॐ कौण्डिल्यनगरोद्भूतायै नम: 700
ॐ कौण्डिल्य-गोत्रपूजितायै नम:
ॐ कपिराजस्थितायै नम:
ॐ काप्यै नम:
ॐ कपिबुद्धिबलोदयायै नम:
ॐ कपिध्यानपरायै नम:
ॐ मुख्यायै नम:
ॐ कुव्यवस्थायै नम:
ॐ कुसाक्षिदायै नम:
ॐ कुमध्यस्थायै नम:
ॐ कुकल्पायै नम: 710
ॐ कुलपंक्तिप्रकाशिन्यै नम:
ॐ कुलभ्रमरदेहस्थायै नम:
ॐ कुलभ्रमरनादिन्यै नम:
ॐ कुलासंगायै नम:
ॐ कुलाक्ष्यै नम:
ॐ कुलमत्तायै नम:
ॐ कुलानिलायै नम:
ॐ कलिचिन्हायै नम:

ॐ कालचिन्हायै नमः
ॐ कण्ठचिन्हायै नमः 720
ॐ कवीन्द्रजायै नमः
ॐ करीन्द्रायै नमः
ॐ कोटिकन्दर्प-दर्पहायै नमः
ॐ कोटितेजोमय्यै नमः
ॐ कोट्यायै नमः
ॐ कोटीरपद्ममालिन्यै नमः
ॐ कोटीरमोहिन्यै नमः
ॐ कोट्यै नमः
ॐ कोटिकोटि-विधूद्भवायै नमः
ॐ कोटिसूर्यसमानास्यायै नमः 730
ॐ कोटिकालानलोपमायै नमः
ॐ कोटीरहारललितायै नमः
ॐ कोटिपर्वतधारिण्यै नमः
ॐ कुचयुग्मधरादेव्यै नमः
ॐ कुचकामप्रकाशिन्यै नमः
ॐ कुचानन्दायै नमः
ॐ कुचाच्छन्नायै नमः
ॐ कुचकाठिन्यकारिण्यै नमः
ॐ कुचयुग्ममोहनस्थायै नमः
ॐ कुचमायातुरायै नमः 740
ॐ कुचायै नमः
ॐ कुचयौवनसम्मोहायै नमः
ॐ कुचमर्दनसौख्यदायै नमः
ॐ काचस्थायै नमः
ॐ काचदेहायै नमः
ॐ काचपूरनिवासिन्यै नमः
ॐ काचग्रस्थायै नमः
ॐ काचवर्णायै नमः
ॐ कीचकप्राणनाशिन्यै नमः
ॐ कमलालोचनप्रेमायै नमः 750
ॐ कोमलाक्ष्यै नमः
ॐ मनुप्रियायै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः
ॐ कमलजायै नमः
ॐ कमलास्यायै नमः
ॐ करालजायै नमः
ॐ कमलांघ्रिद्वयायै नमः
ॐ काम्यायै नमः
ॐ कराख्यायै नमः
ॐ करमालिन्यै नमः 760
ॐ करपद्मधरायै नमः
ॐ कन्दायै नमः
ॐ कन्दबुद्धिप्रदायिन्यै नमः
ॐ कमलोद्भवपुत्र्यै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ पुत्रकामिन्यै नमः
ॐ किरन्त्यै नमः
ॐ किरणाच्छन्नायै नमः
ॐ किरणप्राणवासिन्यै नमः
ॐ काव्यप्रदायै नमः 770
ॐ काव्यचित्तायै नमः
ॐ काव्यसारप्रकाशिन्यै नमः
ॐ कलाम्बायै नमः
ॐ कल्पजनन्यै नमः
ॐ कल्पभेदासनस्थितायै नमः
ॐ कालेच्छायै नमः
ॐ कालसारस्थायै नमः
ॐ कालमारणघातिन्यै नमः
ॐ किरणक्रमदीपस्थायै नमः
ॐ कर्मस्थायै नमः 780
ॐ क्रमदीपिकायै नमः
ॐ काललक्ष्म्यै नमः

ॐ कालचण्डायै नमः
ॐ कुलचण्डेश्वरप्रियायै नमः
ॐ काकिनीशक्तिदेहस्थायै नमः
ॐ कितवायै नमः
ॐ किन्तकारिण्यै नमः
ॐ करंचायै नमः
ॐ कंचुकायै नमः
ॐ क्रौंचायै नमः 790
ॐ काकचंचुपुट-स्थितायै नमः
ॐ काकाख्यायै नमः
ॐ काकशब्दस्थायै नमः
ॐ कालाग्नि-दहनार्थिकायै नमः
ॐ कुचक्षनिलयायै नमः
ॐ कुत्रायै नमः
ॐ कुपुत्रायै नमः
ॐ क्रतुरक्षिकायै नमः
ॐ कनकप्रतिभाकारायै नमः
ॐ करबन्धाकृति-स्थितायै नमः 800
ॐ कृतिरूपायै नमः
ॐ कृतिप्राणायै नमः
ॐ कृत्यै नमः
ॐ क्रोधनिवारिण्यै नमः
ॐ कुक्षिरक्षाकरायै नमः
ॐ कुक्षायै नमः
ॐ कुक्षिब्रह्माण्डधारिण्यै नमः
ॐ कुक्षिदेवस्थितायै नमः
ॐ कुक्ष्यै नमः
ॐ क्रियादक्षायै नमः 810
ॐ क्रियातुरायै नमः
ॐ क्रियानिष्ठायै नमः
ॐ क्रियानन्दायै नमः
ॐ क्रतुकर्मायै नमः
ॐ क्रियाप्रियायै नमः
ॐ कुशलासवसंशक्तायै नमः
ॐ कुशारिप्राणवल्लभायै नमः
ॐ कुशारिवृक्षमदिरायै नमः
ॐ काशीराजवशोद्यमायै नमः
ॐ काशीराजगृहस्थायै नमः 820
ॐ कर्णभ्रातृगृहस्थितायै नमः
ॐ कर्णाभरणभूषाढ्यायै नमः
ॐ कण्ठभूषायै नमः
ॐ कण्ठिकायै नमः
ॐ कण्ठस्थानगतायै नमः
ॐ कण्ठायै नमः
ॐ कण्ठपद्मनिवासिन्यै नमः
ॐ कण्ठप्रकाशकरिण्यै नमः
ॐ कण्ठमाणिक्यमालिन्यै नमः
ॐ कण्ठपद्मसिद्धिकर्यै नमः 830
ॐ कण्ठाकाशनिवासिन्यै नमः
ॐ कण्ठपद्मसाकिनीस्थायै नमः
ॐ कण्ठषोडशपत्रिकायै नमः
ॐ कृष्णाजिनधरायै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ कृष्णाजिनसुवासस्यै नमः
ॐ कुतकस्थायै नमः
ॐ कुखेलस्थायै नमः
ॐ कुण्डवालंकृतायै नमः
ॐ कृतायै नमः 840
ॐ कलगीतायै नमः
ॐ कालघजायै नमः
ॐ कलभंगपरायणायै नमः
ॐ कालीचन्द्रायै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ काव्यायै नमः

ॐ कुचस्थायै नमः
ॐ कुचलप्रदायै नमः
ॐ कुचौरघातिन्यै नमः
ॐ कच्छायै नमः 850
ॐ कच्छादस्थायै नमः
ॐ कजातनायै नमः
ॐ कंजाछदमुख्यै नमः
ॐ कंजायै नमः
ॐ कंजतुण्डायै नमः
ॐ कजीवल्यै नमः
ॐ कामराभार्सुरवाद्यस्थायै नमः
ॐ कियद्हुंकारनादिन्यै नमः
ॐ कणादयज्ञसूत्रस्थायै नमः
ॐ कीलाल-यज्ञसंज्ञकायै नमः 860
ॐ कटुहासायै नमः
ॐ कपाटस्थायै नमः
ॐ कटधूमनिवासिन्यै नमः
ॐ कटिनादघोरतरायै नमः
ॐ कुट्टलायै नमः
ॐ पाटलिप्रियायै नमः
ॐ कामचाराब्जनेत्रायै नमः
ॐ कामचोद्गारसंक्रमायै नमः
ॐ काष्ठपर्वतसंदाहायै नमः
ॐ कुष्ठायै नमः 870
ॐ कुष्ठनिवारिण्यै नमः
ॐ कहोडमन्त्रसिद्धस्थायै नमः
ॐ काहलायै नमः
ॐ डिण्डिमप्रियायै नमः
ॐ कुलडिण्डिम-वाद्यस्थायै नमः
ॐ कामडामरसिद्धिदायै नमः
ॐ कुलामरवध्यस्थायै नमः
ॐ कुलकेकानिनादिन्यै नमः
ॐ कोजागरढोलनादायै नमः
ॐ कास्यवीर-रणस्थितायै नमः 880
ॐ कालादिकरणच्छिद्रायै नमः
ॐ करुणानिधिवत्सलायै नमः
ॐ क्रतुश्रीदायै नमः
ॐ कृतार्थश्र्यै नमः
ॐ कालतारायै नमः
ॐ कुलोत्तरायै नमः
ॐ कथापूज्यायै नमः
ॐ कथानन्दायै नमः
ॐ कथनायै नमः
ॐ कथनप्रियायै नमः 890
ॐ कार्थचिन्तायै नमः
ॐ कार्थविद्यायै नमः
ॐ काममिथ्यापवादिन्यै नमः
ॐ कदम्बपुष्पसंकाशायै नमः
ॐ कदम्बपुष्पमालिन्यै नमः
ॐ कादम्बर्यै नमः
ॐ पानतुष्टायै नमः
ॐ कायदम्भायै नमः
ॐ कदोद्यमायै नमः
ॐ कुंकुलेपत्रमध्यस्थायै नमः 900
ॐ कुलाधारायै नमः
ॐ धरप्रियायै नमः
ॐ कुलदेवशरीरार्धायै नमः
ॐ कुलधामायै नमः
ॐ कलाधरायै नमः
ॐ कामरागायै नमः
ॐ भूषणाढ्यायै नमः
ॐ कामिनीरगुणप्रियायै नमः
ॐ कुलीनायै नमः
ॐ नागहस्तायै नमः 910

ॐ कुलीननागवाहिन्यै नमः
ॐ कामपूरस्थितायै नमः
ॐ कोपायै नमः
ॐ कपाल्यै नमः
ॐ बकुलोद्भवायै नमः
ॐ कारागारजनापाल्यायै नमः
ॐ कारागारप्रपालिन्यै नमः
ॐ क्रियाशक्त्यै नमः
ॐ कालपंक्त्यै नमः
ॐ कार्णपंक्त्यै नमः 920
ॐ कफोदयायै नमः
ॐ कामफुल्लारविन्दस्थायै नमः
ॐ कामरूपफलाफलायै नमः
ॐ कायफलायै नमः
ॐ कायफेणायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ नाडीफलीश्वरायै नमः
ॐ कमफेरुगतायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ कायवाण्यै नमः 930
ॐ कुवीरगायै नमः
ॐ कबरीमणिबन्धस्थायै नमः
ॐ कावेरीतीर्थसंगमायै नमः
ॐ कामभीतिहरायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कामवाकुभ्रमातुरायै नमः
ॐ कविभावहरायै नमः
ॐ भामायै नमः
ॐ कमनीयभयापहायै नमः
ॐ कामगर्भ-देवमातायै नमः 940
ॐ कामकल्प-लतामरायै नमः
ॐ कमठप्रियमांसादायै नमः
ॐ कमठायै नमः
ॐ मर्कटप्रियायै नमः
ॐ किमाकारायै नमः
ॐ किमाधारायै नमः
ॐ कुम्भकारमनस्थितायै नमः
ॐ काम्ययज्ञस्थितायै नमः
ॐ चण्डायै नमः
ॐ काम्ययज्ञोपवीतिकायै नमः 950
ॐ कामयागसिद्धिकर्यै नमः
ॐ काममैथुनयामिन्यै नमः
ॐ कामाख्यायै नमः
ॐ यमलाशस्थायै नमः
ॐ कालयामायै नमः
ॐ कुयोगिन्यै नमः
ॐ कुरुयागहतायोग्यायै नमः
ॐ कुरुमांसविभक्षिण्यै नमः
ॐ कुरुरक्तप्रियाकार्यै नमः
ॐ किंकरप्रियकारिण्यै नमः 960
ॐ कर्त्रीश्वर्यै नमः
ॐ कारणात्मायै नमः
ॐ कविभक्षायै नमः
ॐ कविप्रियायै नमः
ॐ कविशत्रुप्रष्ठलग्नायै नमः
ॐ कैलासोपवनस्थितायै नमः
ॐ कलित्रिधायै नमः
ॐ त्रिसिद्धिस्थायै नमः
ॐ कलित्रिदिनसिद्धिदायै नमः
ॐ कलंकरहितायै नमः 970
ॐ काल्यै नमः
ॐ कलिकल्मष-कामदायै नमः
ॐ कुलपुष्परंगायै नमः
ॐ सूत्रमणिग्रन्थि-सुशोभनायै नमः

ॐ कम्बोजवंग-देशस्थायै नमः
ॐ कुलवासुकि-रक्षिकायै नमः
ॐ कुलशास्त्रक्रियायै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ कुलशान्त्यै नमः
ॐ कुलेश्वर्यै नमः 980
ॐ कुशलप्रतिभायै नमः
ॐ काश्यै नमः
ॐ कुलषट्चक्रभेदिन्यै नमः
ॐ कुलषट्पद्ममध्यस्थायै नमः
ॐ कुलषट्पद्मदीपिन्यै नमः
ॐ कृष्णमार्जारकोलस्थायै नमः
ॐ कृष्णमार्जारषष्ठिकायै नमः
ॐ कुलमार्जारकुपितायै नमः
ॐ कुलमार्जारषोडश्यै नमः
ॐ कालान्तकवलोत्पन्नायै नमः 990
ॐ कपिलान्तकघातिन्यै नमः
ॐ कलहंसायै नमः
ॐ कलहश्र्यै नमः
ॐ कलहार्यायै नमः
ॐ कलामलायै नमः
ॐ कक्षपपक्षरक्षायै नमः
ॐ कुक्षेत्रपक्षसंक्षयायै नमः
ॐ काक्षरक्षासाक्षिण्यै नमः
ॐ कावेरीतीरभूमिस्थायै नमः
ॐ महामोक्षप्रतिष्ठितायै नमः 1000

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



शान्ति पाठ

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।
सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्णं भवतु।
सर्वेषां मंगलं भवतु।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हरि ॐ तत्सत्





SATYANANDA YOGA
BIHAR YOGA

ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए देवी माँ की पूजा सबसे शक्तिशाली विधि है। देवी, दुर्गा या चण्डी के रूप में भगवान की अवधारणा केवल एक सिद्धान्त नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक जीवन विद्या है। देवी माँ करुणा और दया की मूर्ति हैं, क्षमा का सागर हैं, मातृ-प्रेम का मूर्त रूप हैं। वे रक्षक भी हैं और संहारक भी। उनके ही आदेश से सारी सृष्टि चलती है। उनकी उपासना द्वारा मनुष्य को सहज रूप से सुख, समृद्धि, सफलता, शान्ति और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

पादुका दर्शन गुरुकुल, मुंगेर में संन्यास पीठ की स्थापना के उपलक्ष्य में स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती ने सन् 2011 में वर्षभर दुर्गा माँ की हवनात्मक उपासना करने का संकल्प लिया था। इस अनुष्ठान का प्रसाद उनकी मंगलकामना के साथ 'श्रीदुर्गा स्तोत्र माला' के रूप में प्रदान किया जा रहा है।



[bar code here]

ISBN : 978-81-86336-99-1